सरसा

के पुनर्जीवन की

गाथा

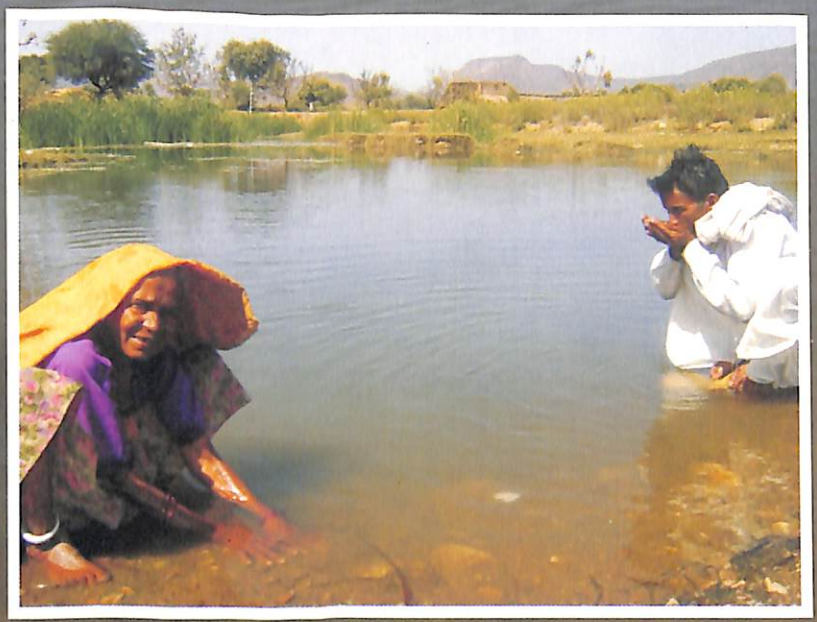

ज्ञानेन्द्र रावत

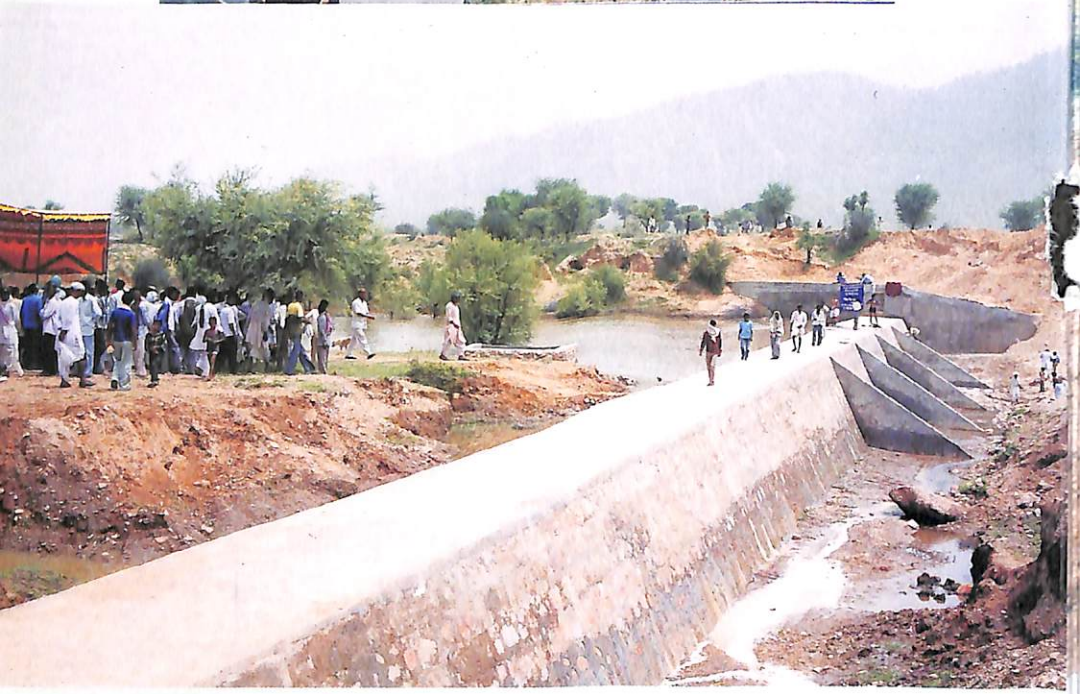

सरसा के पुनर्जीवन की गाथा

ज्ञानेन्द्र रावत

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, किशोरी, थानागाजी, अलवर–301022

प्रथम संस्करण	:	मार्च, 2009
द्वितीय संस्करण	:	मार्च, 2013
लेखक	:	ज्ञानेन्द्र रावत
सहयोग	:	सत्येन्द्र सिंह, कन्हैया लाल गुर्जर, गोपाल सिंह, छोटे लाल मीणा, जगदीश गुर्जर, देवयानी कुलकर्णी, मुरारी लाल जांगिड़, श्रवण शर्मा, पेमाराम मेवाल, बोदन पटेल एवम् मुरारी लाल शर्मा
ग्राफिक्स	:	विनोद कुमार
प्रकाशक	:	तरुण भारत संघ, भीकमपुरा, किशोरी, थानागाजी, अलवर–301022, (राजस्थान) दूरभाष : 01465–225043
वितरक	:	जल बिरादरी 34/46, किरण पथ, मान सरोवर, जयपुर–302020 दूरभाष : 0141–2393178
Email	:	watermantbs@yahoo.com jalpurushtbs@gmail.com
मूल्य	:	75.00 रुपये

समर्पण

परम आदरणीय परिनिवृत्त सिद्धराज ढड्ढा,
पर्यावरणविद् अनिल अग्रवाल,
पारंपरिक विधाओं के ज्ञाता माँगू काका
जिन्होंने इस पुनीत कार्य को करने के लिए तरुण भारत संघ को प्रेरणा दी
भाई अनुपम मिश्र ने नई दिशा देकर प्रोत्साहित किया
एवम् जल संरक्षण कार्यों में प्रभावी भूमिका निर्वहन में
अपूरणीय योगदान देने वाली
रजनी देवी भट्ट, गुलाब देवी व कस्तूरी देवी को समर्पित

भूमिका

सरसा आकर मैं सरस गया। जब मैं यहां आया था तब मुझे यहां कुछ लोग पंजाब का आतंकवादी, धौलपुर का डकैत और बच्चों को उठाकर बेचने वाला उचक्का मानते थे। आज पढ़-लिखे लोग सीधे-सादे ग्रामीणों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं, इसीलिए मेरे बारे में उनकी यह धारणा बनना स्वाभाविक ही थी। फिर भी पूरा समाज ऐसा नहीं मानता था, समाज ने तो मुझे हमेशा सहेज कर रखा और सदैव मुझे स्नेह दिया। लेकिन समाज को गुमराह करने वाले कुछ नेता मुझे ऊपर की उपाधियां जरूर दिया करते थे। हां, मुझे स्नेह देने वाले बुजुर्ग लोग तो अभी ज्यादातर स्वर्ग सिधार गए, पर उनकी यादें मेरे साथ हैं। उनमें माँगू पटेल और नाथी बलाइन, लक्ष्मी नारायण शर्मा (गोपालपुरा), रामप्रताप (बाछड़ी), भगवान सहाय (गोविन्दपुरा), सज्जन सिंह (रायपुरा), बेगड्या (मैजोड़), रामनिवास उर्फ भोला (अंगारी), लक्ष्मण सिंह (जयसिंहपुरा), हरसहाय (डूमैड़ा), भैंरू सहाय वैद्य, (जैतपुर), रेवड़ राम सरपंच (रामजी का गुवाड़ा), नारायण मीणा (गूगली का गुवाड़ा), मांगीलाल शर्मा, रामसहाय शर्मा (गुवाड़ा व्यास), गणपत सिंह, बद्री प्रसाद गुप्ता, रामकिशोर गुप्ता, हरबख्श मीणा, धूणीलाल खटीक, काना खटीक व बालकिशन दास जी बाबाजी (भीकमपुरा), जगदीश शर्मा व कल्याण सहाय शर्मा (सूरतगढ़) और बाबू लाल शर्मा (डेरा) प्रमुख हैं जो हमेशा मुझे याद रहेंगे। इन सबने काम के शुरुआती दौर में तरुण भारत संघ के साथ तालाबों का निर्माण करने में किसी-न-किसी रूप में हमारा सहयोग किया। आज भी हमारे सभी साथी मेरे साथ उन्हें किसी-न-किसी रूप में जरूर याद करते हैं। उपरोक्त सभी सरसा वासी मेरी स्मृति में अपनी जगह बनाये हुए हैं। मैं उन सभी की याद अपने मन में बसाये अगली पीढ़ी को पानी परंपरा को जीवित रखने की प्रेरणा देने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। श्री सिद्धराज ढड्ढा व अनिल अग्रवाल को हम नहीं भूल सकते हैं। ये दोनों तरुण भारत संघ परिवार के मुखिया की तरह बने रहे।

इसके अलावा श्री गोपाल मीणा व रामजी लाल (मैजोड़), दारा सिंह (श्यामपुरा), पेमाराम जी, हनुमान, पूरण व रामकिशन (बाछड़ी), रामेश्वर व गोपाल

शर्मा (कालालांका), मुन्ना लाल, रामपाल व कैलास शर्मा (डेरा), उपेन्द्र सिंह (होदायली), महेश चंद शर्मा, बालू मीणा, सीताराम मीणा (अंगारी), किशन सिंह व ख्याली राम खटीक (गुढ़ा किशोरदास), मूलचन्द मीणा (डुमेड़ा), नाथू सिंह जी, राजू सिंह जी व जगदीश पटेल (जयसिंहपुरा), रामेश्वर, गोकुल व कैलास (बीसूणी), गोपाल दत्त शर्मा, हनुमान, सुरेश जी मास्टर (बामनवास), मातादीन जी मीणा, मंगल राम, हनुमान गुर्जर (काबलीगढ़), सुमेर सिंह जी, वासुदेव भट्ट जी, हनुमान मीणा, रजनी भट्ट, सूरजा मीणा, गणेश कीर, जगदीश कीर, उमराव कीर, रामपाल रैगर, जीवण रैगर, रामजी लाल व मूलचन्द रैगर (सूरतगढ़), ब्रजमोहन व घींसी देवी (क्यारा), भोमा गुर्जर, भैंरू सहाय गुर्जर, ब्रजमोहन गुर्जर (भाल), अमर सिंह जी, रामधन, सोनी बलाई व बाबू सिंह (रायपुरा), सिया राम बोहरा, मदन लाल मीणा, गुलाब देवी, ममता, मंजू, अणची, कालूराम मीणा, बोधन मीणा व सुगन टेलर (किशोरी), कैलास चन्द्र शर्मा, जतन सिंह, कस्तूरी देवी, ज्ञानचन्द्र गुप्ता व दयाल सिंह (भीकमपुरा), रामचन्द्र मीणा, बद्री मीणा, हनुमान मीणा, शंकर बलाई, रामनारायण बलाई, भगवान सहाय, महादेव, कैलास शर्मा व छोटेलाल शर्मा (गोपालपुरा), सेडूराम, बद्री, रामपाल, प्रभु (गोविन्दपुरा), छोटेलाल मीणा, मातादीन शर्मा, भैंरू सहाय मीणा, भगवान सहाय सैनी व रामधन सैनी (जैतपुर), गंगाधर मीणा, बुद्धालाल मीणा, रामजी लाल शर्मा, सियाराम, जीताराम कोली, रामजी लाल बलाई व श्योनाथ बलाई (सीली बावड़ी), भम्भूराम गुर्जर, सूण्डाराम (गुवाड़ा फकाल), कन्हैयालाल (गुवाड़ा सीरा), जगदीश योगी (गुवाड़ा लालाभैया), हजारी लाल शर्मा (गुवाड़ा डाबर), प्रभु मीणा (गुवाड़ा घासी), मुरली शर्मा (गुवाड़ा हनुमान), जम्बूरी देवी (गुवाड़ा कालोत), गंगाराम मीणा (डूमोल्या), हरदेव शर्मा (गुवाड़ा जीनावत), कन्हैया लाल, रामजी लाल (गुवाड़ा हार), किशोर (गुवाड़ा जमादार), श्रवण शर्मा, संज्या बाई (गुवाड़ा व्यास), घासी मीणा, बाबूलाल शर्मा (गुवाड़ा सोती), हनुमान मीणा (गुवाड़ा मंन्याली), लालाराम (नीमड़ाला), ग्यारसी लाल मीणा (बूज), पून्याराम (कानीखोर), गोविन्दराम व रामचरण शर्मा (गुवाड़ा गूगली), प्रभु मीणा, श्योबख्श (गुवाड़ा राड़ी), छोटे लाल मीणा (गुवाड़ा नरभा), हरसहाय, बद्री प्रसाद शर्मा (गुवाड़ा लेसवा), घासी, फैली नेता, कल्याण खोड़ा (गुवाड़ा राम जी), नारायण गुर्जर (दौलतपुरा), लादूराम (बांकाला), मुरली (बल्लूबास), कल्लू, गोदूराम

(कूण्डळ्या), प्रभु गुर्जर, बद्री मीणा (नैड़ोली), रामपाल, बोदन (गुवाड़ा कल्याण), श्रवण मीणा, जयराम मीणा (गुवाड़ा सद्दाराम), रामसहाय सैनी (मोरड़ी), सोनाराम शर्मा, रामानन्द शर्मा (चबोर्‌या), सांवर्‌या मीणा (मोरड़ी मीणा की ढाणी), मूलचन्द, भागचन्द, रामजी लाल (कालापारा), हरिनाथ, रघुवीर सिंह, रामजी लाल, कन्हैया लाल जांगिड़, शिम्भूदयाल (पिपलाई), कन्हैयालाल, पप्पू शर्मा, प्रभु, शिम्भू, तेजपाल (कुण्ड्याळ), गोपाल स्वामी (गुल्याळी बावड़ी), नारायण, नानक राम, गंगा राम व भगवान सहाय (भूर्‌याळी), कन्हैयालाल भाटी, रामधन मीणा, हनुमान शर्मा (अजबगढ़), रामोतार सिंह, राजाराम गुर्जर (बांदीपुल-दुलावा), श्रवण पटेल, सुल्तान सैनी, हरजी पटेल, जगदीश, भागीरथ मल व रामसिंह (धीरोड़ा), मांगे लाल, रामकरण, भागीरथ भोपा, बद्री (जाटाला), रामगोपाल, भम्भू (दरोगाला), श्रीमती कमली देवी, जगदीश, रामजीलाल, नाथू (नांगल चन्देल), बद्री मीणा, कालू मीणा, प्रभुदयाल मीणा, कन्हैया लाल मीणा (लांकाश), रामस्वरूप गुर्जर, फूलसिंह, बाबू लाल, रामरतन, रामकिशन, देवबख्श व रामकुमार (लील्याँ), प्रभुनाथ, केशूनाथ, पून्यानाथ व रामकिशोर नाथ (जोगीवाला), भागीरथ, रामप्रताप (अवानाला), किशन लाल, हीरा लाल, आनन्दी लाल, रामकिशोर व कैलास (कीटला), अमर सिंह, रामप्रताप, कैलास जागवाला, दयावीर सिंह, श्योजीराम जी, रामधन तंवर व रामकिशोर सरपंच (श्यालूता), रामप्रताप, किशन लाल, जगदीश, जगदीश मेम्बर व रमेश (कुटूकी), सुरेश प्रधान (गुड़ का खेड़ा), खेमा बंजारा व गोपाल गुर्जर (नांगल दासा) आदि इन सभी का पिछले 25 वर्षों में मुझे स्वयं व तरुण भारत संघ के सभी साथियों को बहुत ही सहयोग, साथ और प्रेम मिला है। अनुपम मिश्र, प्रभाष जोशी, चन्डी प्रसाद भट्ट व सुनीता नारायण ने गोपालपुरा में पेड़ लगाने पर हुए दण्ड की निंदा करके कहा कि पेड़ लगाना प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है। सरसा में पेड़ लगवाने एवम् जंगल बचाने की चेतना जगाने में ये सभी कई बार हमारे साथ आये हैं। इन्होंने हमारे साथ मिलकर तरुण भारत संघ के साथियों को आगे बढ़ाने में जो मदद की है, उसी के फलस्वरूप अब सरसा नदी सरस गई है। इस हेतु मैं और तरुण भारत संघ इन सभी के सदैव आभारी रहेंगे।

आज इन सबकी यादें ही मुझे पानी के काम के साथ जोड़ने, जल को जीवन मानकर जल को समझने, समझाने, सहेजने और उस हेतु सत्याग्रह करने तक पहुंचा

सकी हैं। मैं आप सबको बस इतना बता देना चाहता हूँ कि सरसा की इस छोटी-सी कहानी ने ही मुझमें यमुना और गंगा को शुद्ध-सदानीरा बनाकर जीवनदायिनी मां-गंगा के लिए लड़ने की शक्ति पैदा की है। आप सबके साथ और सहयोग से मैं यमुना का अतिक्रमण, शोषण और प्रदूषण रोकने के लिए सत्याग्रह करके सफलता भी पा सका। यही नहीं, अभी-अभी गंगा को राष्ट्रीय नदी का सम्मान दिलाने और गंगा पर बन रहे बाँधों को रुकवाने तथा नये बाँध नहीं बनने देने की मांग के साथ गंगा की आजादी की लड़ाई शुरू करके सफलता भी पा सका।

तरुण भारत संघ के उपाध्यक्ष प्रो. जी.डी. अंग्रवाल ने दो बार भागीरथी बचाने हेतु आमरण अनशन किया और दोनों ही बार सफलता पाई। अनशन से बंद हुए लुहारी नागपाला बैराज का कार्य न्यायालय ने शुरू करा दिया है। यही हमारे राजनेताओं के काम करने के तरीके मुझे कभी समझ नहीं आये। मैं बिना डरे स्पष्ट बोलकर संकट झेलता रहा हूँ। हम जानते हैं कि गंगा को बेचने वाले ज्यादा ताकतवर हैं। वे इस लड़ाई को षड्यंत्रकारी तरीकों से हराने की कोशिश में लगे हैं। पर सरसा वासियों का सरसा नदी को जीवित बनाने का प्रयोग उनके षड्यंत्र को कामयाब नहीं होने देगा। आओ, हम सब मिलकर सरसा के जीवित होने की प्रेरणादायी कहानी से देशभर के समाज के मन-मानस को नदियों से जोड़ने की पहल करें।

इस पुस्तक को लिखने में हमारे वरिष्ठ साथी ज्ञानेन्द्र रावत ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। उनको इस कार्य में छोटे लाल मीणा, कन्हैया लाल गुर्जर, गोपाल सिंह, देवयानी कुलकर्णी, मुरारी लाल जांगिड, पेमाराम मेवाल, बोदन पटेल, मुरारी लाल शर्मा, श्रवण शर्मा व जगदीश गुर्जर ने बहुत मदद की है। छोटे लाल मीणा ने जहां इस पुस्तक की सामग्री जुटाने का महती कार्य किया है, गोपाल सिंह ने सरसा के मानचित्र को यथासंभव वर्तमान स्थितियों के अनुरूप प्रस्तुत करने का काम किया है, कन्हैया लाल गुर्जर ने समुदाय के संगठनात्मक स्वरूप को उभारने में अहम भूमिका निबाही है, वहीं मुरारी लाल जांगिड़ ने क्षेत्र के कामों का लेखा-जोखा एकत्र करने का काम किया है। इन सबकी बातों को ज्ञानेन्द्र रावत ने जिस तरह इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है, इस हेतु मैं उनका स्वागत करता हूँ और उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

– राजेन्द्र सिंह

अध्यक्ष, तरुण भारत संघ

मेरी दृष्टि में

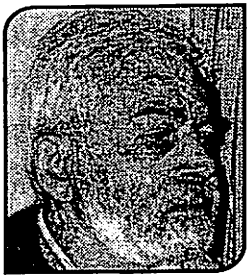

हमारे यहां समूचे विश्व की सबसे समृद्ध संस्कृति, सभ्यता, दर्शन और अनूठी परंपराएं विद्यमान हैं। उनको हमारे समाज ने जीवन शैली के रूप में अपनाया। ऐसा करके उसने स्वयं को जहां गौरवान्वित अनुभव किया, वहीं इस हेतु उसने अपने को धन्य भी माना। लेकिन विडम्बना यह है कि वर्तमान में वैश्विक परिवर्तन के इस दौर में वह टूट रही हैं, बल्कि सभ्यता, दर्शन और संस्कृति के वैभवपूर्ण दृष्टिकोण से भी हम दिनों-दिन विलग होते जा रहे हैं। यही नहीं, इस परिवर्तन के मोहपाश में बंधकर और संसाधनों की बढ़ती चाहत के चंगुल में आकर हमारा समाज भी विखंडित हो रहा है। बढ़ती भोगवादी प्रवृत्ति ने प्रकृति को भी नहीं बख्शा है। जबकि जल, जंगल, जमीन और प्राकृतिक संसाधनों का उचित संरक्षण व संवर्धन मानव जीवन के लिए परमावश्यक है। लेकिन इनका हो रहा विनाश प्रकृति के साथ मानव के मित्रता भाव के दिन-ब-दिन घटते जाने का दुष्परिणाम ही तो है। इसी भाव के चलते मेरी दिल्ली की यमुना नाला बनकर मर गई है। दु:ख तो इस बात का है कि मेरा विकसित कहलाने वाला समाज आज नदियों को मार रहा है।

आज समूचा विश्व जल समस्या से जूझ रहा है और भविष्य में इसकी विकरालता की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। तथाकथित विकसित मानव ने इसे भयावह बनाने में अहम् भूमिका निबाही है। कारण, उसने स्वार्थवश प्राकृतिक जलस्रोतों से जल का निरंतर और निर्बाध गति से दोहन तो किया, लेकिन उसके प्रति अपने कर्तव्य से वह विमुख हो गया। विकास के विनाश जिसे हम प्रदूषण कहते हैं, ने हमारी नदियों को भी नहीं बख्शा, जिसका परिणाम कहीं वह प्रदूषित होकर जान-लेवा बीमारियों का कारण बनीं, कहीं वह नाला बनकर रह गयीं और कहीं-कहीं वह सूखकर मर गयीं। विडम्बना यह रही कि सरकार और समाज भी नदियों के प्रति अपने दायित्व को निबाहने में नाकाम रहा। राजस्थान के अलवर जिले की ऐसी ही एक नदी है सरसा,

जिसको पुनर्जीवन दिया, पुरातन परंपरा के प्रतीक रहे जोहड़ और तालाबों के निर्माण के माध्यम से। प्रकृति के साथ समाज के घटते मित्रता भाव को बहाल करके व सरसा के समाज को जाग्रत करके तरुण भारत संघ के प्रमुख श्री राजेन्द्र सिंह जी ने । गौरतलब यह है कि उसी समाज को आधुनिक कहलाने का दंभ भरने वाले अनपढ़ और गंवार कहते नहीं थकते, लेकिन मैं उसी समाज के इस कर्तव्य बोध को देखकर अभिभूत हो गया। इसमें किंचित् मात्र भी संदेह नहीं है कि बिना इस समाज के सहयोग के सरसा के पुनर्जीवन के इस महान् कार्य की सफल परिणति असंभव थी।

दरअसल ऐसा करके उन्होंने अपने देश ही नहीं, आधुनिक विश्व के सर्वशक्तिमान देशों के योजनाकारों–वैज्ञानिकों के समक्ष यह प्रमाणित कर दिया कि आज भी पुरातन भारतीय परंपराएं और ज्ञान प्रासंगिक हैं और उनके द्वारा यदि जल के उचित संरक्षण व संवर्धन की प्रक्रिया को क्रियान्वित किया जाये, तो काफी हद तक जल–संकट की समस्या का निराकरण कर सकते हैं और अपने जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बनाने में समर्थ हो सकते हैं। यही नहीं, इस माध्यम से उन्होंने ग्रामीण व्यवस्था को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में जो पहल की है, वह स्तुति योग्य तो है ही, सराहनीय भी है और प्रशंसनीय भी। पानी की समस्या से जूझते राजस्थान में वैसे उन्होंने अपने प्रयासों से सात नदियों को पुनर्जीवन देने का काम किया है। इसके लिए उन्हें कोटि–कोटि बधाई। हां, सरसा उनमें एक कड़ी अवश्य है। यहां हम उसी के पुनर्जन्म की गाथा को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

पिछले एक साल से मैं इस नदी की गाथा लिखने–लिखवाने में जुटा रहा। इस हेतु मैं सरसा के जलग्रहण क्षेत्र से जुड़े गाँवों में घूमता रहा। इस दौरान उस समाज का जल का संस्कार, संरक्षण और अनुशासित उपयोग देखकर अब मैं भी स्वयं को पानीदार बनाने की राह का पथिक मानता हूँ। यहाँ मैं यह स्पष्ट कर दूं कि पिछले काफी लम्बे अरसे से मैं भाई श्री राजेन्द्र सिंह जी और उनके तरुण भारत संघ के बारे में सुन रहा था। मैं हिन्दी अखबारों में लिखता रहा हूँ। लेखक होने के नाते धरती के बदलते चेहरे की सच्ची कहानी मित्रों से सुनकर कुछ लिखने की इच्छा हुई। तरुण भारत संघ के जल संरक्षण के कार्यों के बारे में जानकर इस बारे में कुछ लिखने का भी मेरा मन बना और मैं

अपनी स्वप्रेरणा से तरुण भारत संघ के भीकमपुरा स्थित आश्रम में जाकर जम गया। जबकि बीते सालों में मेरा यहां बराबर आना-जाना रहा है। सरसा के इस सरस क्षेत्र को देखकर इसको जीवित करने वाले जीवित समाज के अनपढ़ लोगों के शब्दों को ही पुस्तक रूप में प्रस्तुत करने का विचार आया जो भाई श्री राजेन्द्र सिंह जी के अनुरोध, कि इसको आप मूर्तरूप प्रदान करें और उनके आश्वासन के बाद कि इसमें वह हर संभव सहयोग प्रदान करेंगे, और दृढ़ हुआ।

पुस्तक की सामग्री जुटाने में तरुण भारत संघ के सभी कार्यकर्ताओं व क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों का योगदान है; लेकिन श्री कन्हैयालाल गुर्जर, श्री गोपाल सिंह, श्री छोटेलाल मीणा, श्री जगदीश गुर्जर, श्रवण शर्मा, पेमाराम मेवाल, बोदन पटेल, श्री मुरारी लाल जांगिड़, सुश्री देवयानी कुलकर्णी व श्री मुरारी लाल शर्मा का आभारी हूँ, जिन्होंने सामग्री संकलन के इस कार्य में प्रभावी भूमिका निबाही और मुझे यथासंभव सहयोग प्रदान किया। साथ ही श्री सत्येन्द्र सिंह जी का इसलिए भी विशेष रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने सरसा से संबन्धित फोटोग्राफ्स संकलित कर यथासमय मुझे उपलब्ध कराये। श्री विनोद कुमार साधुवाद के पात्र हैं कि उन्होंने रात-दिन एक कर टंकण कार्य को पूर्ण किया। सच तो यह है कि मैंने संकलित सामग्री को क्रमबद्ध कर पुस्तकाकार रूप देने व सरसा के क्षेत्रवासियों के शब्दों को कहीं-कहीं इसमें अपनी कमजोरीवश अपने शब्दों में देने का प्रयास किया है। आदरणीय भाई श्री राजेन्द्र सिंह जी द्वारा प्रदत्त इस दायित्व को मैं कहां तक पूरा कर सका हूँ, इसका निर्णय तो स्वयं वह और पाठकगण ही करेंगे।

इसी आशा और विश्वास के साथ।

महाशिवरात्रि

23 फरवरी, 2009

– ज्ञानेन्द्र रावत

पुरातन परंपरा के प्रतीक : जोहड़ और तालाब

हमारे पारंपरिक समाज में अपने प्राकृतिक संसाधनों को सहेजने व उसे उपयोग करने की एक दृष्टि रही है जो बहुतेरे मायनों में आधुनिकतावादी दृष्टि से बेहतर थी। इसमें दो राय नहीं कि वह निर्विवाद रूप से विकास के मौजूदा ढांचे के बरक्स छोटे और रचनात्मक विकल्प हैं। उस देशज और पारंपरिक दृष्टि को पश्चिमी सभ्यता से ओत-प्रोत हमारे आजाद भारत के विकासवादियों ने तिरस्कृत करने का काम किया। जोहड़ और तालाब उसी देशज और पारंपरिक दृष्टि के प्रतीक हैं, जिनके माध्यम से राजस्थान के ग्रामीण अंचल के लोगों को स्वावलम्बी बनाने में कुछ कर गुजरने का जज्बा लिए उत्साही नौजवानों के संगठन तरुण भारत संघ ने 90 के दशक में प्रभावी भूमिका अदा की। यह बात दीगर है कि जिन्हें अकाल व सूखे का अनुभव न हो, या जिन्होंने उस क्षेत्र की पीड़ा को समझा न हो, उनके लिए बड़े-बड़े बाँधों, नहरों और आधुनिक औद्योगिक सभ्यता के इस युग में छोटे-छोटे बाँध या जोहड़ बनाने, पोखर व तालाब खोदने का काम मध्ययुगीन या दकियानूसी लग सकता है। उन्हें जोहड़ का पानी पीने वाले असभ्य लग सकते हैं, लेकिन जिन्होंने जोहड़ों या छोटे-छोटे बाँधों के सहारे अपनी उजड़ती सभ्यता को फिर से बसाया है और आर्थिक स्वावलंबन कायम किया है। वे इसे पुनः प्रकट हुई सरस्वती (नदी) या 'कामधेनु' की संज्ञा देते हैं।

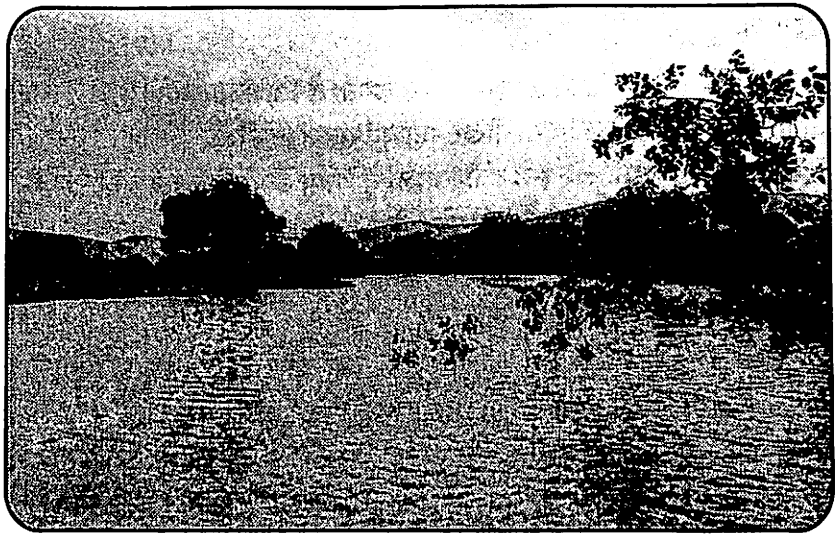

पानी का महत्त्व साबित करने के लिए कोई तर्क देने की जरूरत नहीं है। फिर भी नगरीय व औद्योगिक सभ्यता के विकास की झोंक में इस महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन के सदुपयोग व दुरुपयोग का अंतर भूल चुके लोगों को बार-बार इतना याद दिलाना जरूरी है कि इतिहास में पानी के निकट ही मानवीय सभ्यताओं की शुरुआत हुई थी और पानी की कमी व अधिकता के कारण कई सभ्यताएं नष्ट हुई हैं। इसलिए पानी के समुचित प्रबन्ध पर ध्यान दिए बिना इस धरती पर मानव ही नहीं, संपूर्ण सृष्टि का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है।

तरुण भारत संघ का सबसे महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कार्य 'जोहड़' व छोटे-छोटे बाँध बनाने का है। इस संगठन ने पच्चीस सालों में अलवर जिले में हजारों बाँध व जोहड़ बनाये हैं। इसके अलावा सवाई माधोपुर, करौली, दौसा, जयपुर, टोंक, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, पाली, चित्तौड़गढ़, उदयपुर व अजमेर सहित राजस्थान के बीसियों जिलों में भी अपने काम को फैलाते हुए वहां भी हजारों बाँध बनाए। इनसे न सिर्फ इस इलाके में अकाल व बाढ़ से लड़ने की क्षमता आई, बल्कि हजारों हेक्टेयर खेती और जंगल हरे-भरे हुए हैं। अगर लागत देखी जाए तो गांव वालों के श्रमदान का मूल्य लेकर भी यह 20 करोड़ रुपये की सीमा नहीं पार करती है। जोहड़ बनाने से हुई आर्थिक उपलब्धि के साथ अगर गांवों में आई संगठन शक्ति और सामुदायिक सम्पत्तियों के संरक्षण व प्रबन्धन की नई दृष्टि का मूल्य भी (पुनर्जीवित पारम्परिक दृष्टि) जो लिया जाए तो उपलब्धि की तुलना में लागत बहुत मामूली है।

'जोहड़' जौहर से निकला हुआ शब्द लगता है। संभवतः समर्पण और त्याग यानी जौहर के बिना तालाब या पोखर नहीं बन सकते। इसलिए इसे जोहड़ का नाम दिया गया होगा। इसीलिए इन्हें बनाने वालों का नाम अमर हो जाता था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों और राजस्थान के अलवर जिले में धरती के ऊपर पानी के संरक्षण के लिए बनने वाले ढांचों को जोहड़ कहते हैं। राजस्थान के ही बीकानेर, गंगानगर, बाड़मेर, जैसलमेर में इसे 'सर' तो जोधपुर में नाडा-नाडी कहते हैं। भरतपुर व पूर्वी उत्तर प्रदेश का पोखर भी इसी का भाई है। हालांकि अपने देशकाल और बोली, भाषा के कारण वह थोड़ा अलग लग सकता है। जोहड़ एक तरह से तालाब ही है। पर हर जगह न तो तालाब की संरचना जोहड़ से मिलती है, न ही हर जगह तालाब को जोहड़ कह सकते हैं लेकिन इससे मिलती-जुलती संरचनाएं पूरे भारत में पाई जाती हैं।

भारत की जल संरक्षण तकनीक और इंजीनियरिंग भू-सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हुए तय की जाती थी, लेकिन जल दर्शन समूचे भारत का एक जैसा ही था; जिसमें जल को सहेजना और अनुशासित होकर उसका उपयोग करना अहम माना जाता था। इसीलिए भारत के परंपरागत जल प्रबन्धन को पारंपरिक सामुदायिक विकेन्द्रित जल प्रबंधन कहा गया है।

अलवर क्षेत्र में बनने वाले जोहड़ चंद्राकार (द्वितीया के चांद जैसे) होते हैं। इनका मुंह उस तरफ खुला रहता है, जिधर पहाड़ी या पठारी ऊँचाई होती है। ताकि ढलान से पानी आकर उसमें जमा हो और जहाँ से जानवर वगैरह पानी पी सकें। इसे आगौर या घाट कहते हैं। दूसरी तरफ आंशिक गोलाई में पाल या बाँध बना होता है जो पानी को रोकता है। पाल का आधार बीच में किनारे के आधारों से चौड़ा होता है। यहां यह गौर करने की बात है कि जहां पाल की जितनी ऊंचाई होती है, वहाँ उसकी नीचे की चौड़ाई लगभग पांच गुणा रखते हैं। जबकि इसकी ऊपरी सतह की चौड़ाई समान रूप से लगभग पांच हाथ रखते हैं। पाल पर पानी के दबाव को नियंत्रित करने के लिए कभी-कभी उसे बीच में थोड़ा उत्तल कर देते हैं, ताकि पानी का दबाव दो तरफ बंट जाए। उसे कोहनी कहते हैं। इसके अलावा पाल के किनारों को थोड़ा काटकर वहाँ पत्थरों की पिचिंग करके भी पानी निकलने की व्यवस्था की जाती है। इसे नेष्ठा (उफरा या अफरा) बोलते हैं।

समतल इलाकों में इसे आयताकार संरचना दे देते हैं और वहाँ भी एक तरफ खोल देते हैं। ताकि आदमी और पशुओं को पानी तक पहुंचने में आसानी हो। अरावली की पहाड़ियों से होने वाली वर्षा को बटोरने वाले ये जोहड़ गहरे होने की वजह से पानी का वाष्पीकरण रोकते हैं। इससे न सिर्फ आसपास के खेतों में नमी रहती है, बल्कि उनकी सिंचाई होती है और नजदीक के कुओं में भरपूर पानी रहता है। बताते हैं कि प्रकृति के सर्वाधिक अमूल्य रत्न पानी को सहेजने की यह बैंकिंग प्रणाली पांचवीं से उन्नीसवीं सदी तक जारी रही। इसी के बूते पर इस कम वर्षा वाले क्षेत्र में लोग एक बूंद पानी को बेकार नहीं जाने देते थे। हालांकि तालाब सिर्फ कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हों, ऐसा नहीं है। भारी वर्षा वाले बंगाल से लेकर मध्यम वर्षा वाले म.प्र, उ.प्र., बिहार और दक्षिण भारत तक तालाब अद्वैत भाव से फैले हुए हैं। पूरे देश में करीब 11 से 12 लाख तक तालाबों का रिकॉर्ड मिलता है। एक बार इनका पेट भर जाये तो ये अकाल के लिए भी महाकाल बन जाते थे।

गोंड, लोनिया, मीणा, ढ़ीमर, दुसाध, मुसहा से लेकर पुष्करणा ब्राह्मणों तक तालाब बनाने वालों का एक लंबा जातीय इतिहास है। बताते हैं कि पहले बड़े पैमाने

पर पेयजल की पूर्ति इन्हीं जोहड़ों से होती थी। सन 1950 में भारत के कुल सिंचित क्षेत्र की 17 फीसदी सिंचाई भी जोहड़ों से होती थी और अतीत में 80 फीसदी तक सिंचाई होने का भी दावा किया जाता है। लेकिन पिछले सालों से इस जल बैंकिग प्रणाली का विज्ञान खोता गया और यह दिवालिया होने लगी। नतीजन जोहड़ों में गाद भर गई। बाँध टूट गये। वर्षा का पानी खेतों में रुकने या धरती में छनकर जाने के बजाय पहाड़ियों से नीचे सीधे उतर कर जाने लगा। जिन्होंने भाग्यवधू से प्रतिज्ञा की थी, उन्होंने आजाद भारत में अपनी सरकार पर ही सारी जिम्मेदारी डाल दी। नतीजन गांव की सामुदायिक शक्ति क्षीण और उदासीन हो गई। फिर गाँवों में आधुनिकीकरण के मार्ग में जोहड़ों या बाँधों का कोई महत्त्व नहीं बनता था। बल्कि वे पिछड़ेपन के प्रतीक व विकास के मार्ग में बाधक माने जाने लगे।

सन् 1986-87 का वर्ष इस इलाके में भयंकर अकाल का था। लोग गांव छोड़कर भागने लगे थे। कुएं व जोहड़ सूख गए थे। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मची हुई थी। लोगों को न पीने का पानी मिलता था, न समय पर रोटी। युवकों के शादी विवाह बंद होने लगे थे। वे बड़े शहरों की तरफ भाग रहे थे। गांव में पड़े रह गए बूढ़े-बच्चे और महिलाएं कुपोषित हो चुके थे। महिलाओं का ज्यादातर समय इधर-उधर से पानी का जुगाड़ करने में ही बीतता था।

ऐसी स्थिति में तरुण भारत संघ ने उम्मीद की तलाश शुरू की। उसने गांव के बुजुर्गों से बातचीत की और आसपास के, राजाओं के यहां तैयार व नष्ट हो रहे गंवई दस्तूरों का अध्ययन शुरू किया। इससे उनको पता चला कि 60 सेंटीमीटर सालाना वर्षा वाले इस क्षेत्र में पानी को जमा करने और धरती के पानी को रिचार्ज करने की सुदृढ़ व्यवस्था थी। इस तरह तरुण भारत संघ ने नष्ट हो रहे 'आर्किमिडीज के सिद्धान्त' को पा लिया। संस्था ने इस ज्ञान पर पेटेंटिंग की कोशिश नहीं की। बल्कि गांवों के प्रयोगों और अनुभवों से प्राप्त इस प्रौद्योगिकी के विस्तार की तरुण भारत संघ पर इसकी धुन सवार हो गई।

पहले साल में तो संस्था ने गोपालपुरा गांव में सिर्फ दो जोहड़ बनाए। लेकिन इन जोहड़ों से गांवों की जीवन-शक्ति इस तरह से बढ़ी कि वह पूरे इलाके में चर्चा का विषय बन गई। लोग संस्था के कार्यकर्ताओं से संपर्क करने लगे। वे अपने इलाके में जोहड़ बनाने का आग्रह करते और सहयोग का प्रस्ताव रखते। इस उत्सुकता को देख कर संस्था के लोगों ने 30 जनवरी 1986 से फरवरी तक पदयात्रा की। इस दौरान

इलाके में जोहड़ की संभावनाओं का पता लगाया और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी लोगों को जगाया।

गोपालपुरा के जोहड़ निर्माण की सफलता के अवसर पर आगंतुकों को खीर खिलाते ग्रामीण फोटो में बाएं हैं श्रीमती मीना सिंह, साथ में बेबी रेनू, बीच में हैं माँगू काका व अन्य

गोपालपुरा दरअसल मीणाओं (अनुसूचित जनजाति) का गांव है और मीणा भी राजस्थान में तालाब व जोहड़ बनाने में निपुण माने जाते थे। संभवतः इसीलिए संस्था ने अपना प्रयोग वहीं से शुरू किया। बाँध या जोहड़ बनाने के काम में गांव वाले एक-तिहाई काम श्रमदान के रूप में करते रहे हैं और दो-तिहाई व्यय संस्था उठाती है। बाद में वह जोहड़ या बाँध गांव या उस व्यक्ति को सौंप दिया जाता, जिसके अधिकार क्षेत्र में वह पड़ता। हैरत की बात यह है कि उसमें से किसी बाँध या जोहड़ पर संस्था का नाम होने के बजाय या तो उस व्यक्ति का नाम दर्ज है जिसका वह खेत है या फिर उन्हें स्थानीय परंपरा में प्रचलित नाम ही दिया गया है। जैसे मेवालों का बाँध, चौंतरे वाला जोहड़, ऊलाळा बाँध, बीच वाला बाँध, नया बाँध या गौर्‌याळा बाँध।

गोपालपुरा गांव में तरुण भारत संघ ने प्राकृतिक संसाधनों के लिए आवर्ती ग्राम कोष बनाया और सरकारी स्तर पर गठित ग्राम पंचायत के अलावा ग्राम सभाएं गठित कीं। जोहड़ व बाँध निर्माण की इस प्रक्रिया में जहां पानी आया, खेती शुरू हो सकी,

पेड़ हरे-भरे हुए, वहीं गांव के संगठन भी जीवित हो उठे। दूसरे वर्ष में सरिस्का के बफर जोन का गांव मांडलवास भी गोपालपुरा की राह पर चल पड़ा। चार जोहड़ बनाए जाने के बाद तो यह गांव 'पेई 'यानी अनाज रखने की कोठरी बन गया। फिर देवरी, किशोरी, बाछड़ी और कालालांका जैसे गांव क्यों पीछे रहते?

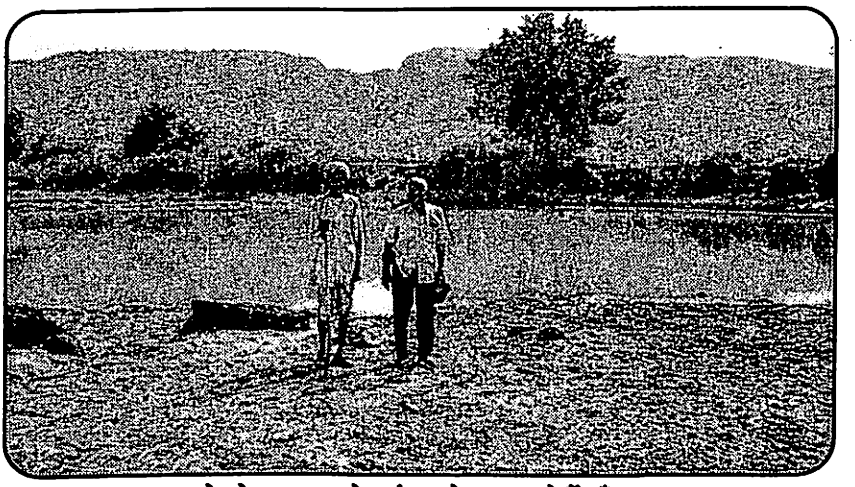

चबूतरा वाले जोहड़ पर अपने प्रशंसक के साथ खड़े हैं माँगू काका

लेकिन यह सब इतना आसान नहीं था। दरअसल गांव के गड़बड़ भूमि रिकॉर्ड व विकास की दृष्टि इस दिशा में बाधक थे। गोपालपुरा गांव में जोहड़ बनने के दो साल के भीतर सिंचाई विभाग ने उन्हें तोड़ने के नोटिस दे दिए। पर गांव वालों का संगठन देख कर वे हिम्मत नहीं जुटा सके। दिसम्बर 1988 में सरिस्का घूमने आए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने वहां अपने मंत्रिमंडल की बैठक की। इस दौरान तरुण भारत संघ ने उन्हें इलाके की समस्याओं और जिला प्रशासन के इस रवैये के बारे में ज्ञापन दिया। जिला प्रशासन इस बात से चिढ़ गया। वह गोपालपुरा के जोहड़ों के आगौर यानी जलागम या जलदाता क्षेत्र में बंधुआ मजदूरों को बसाने लगे। उसने जोहड़ों के पानी के प्रभाव से उगे पेड़ों को कटवाकर वहां छह परिवार बसा दिए। स्थानीय सरपंच वगैरह भी जिला प्रशासन के पाले में खड़े हो गये। काफी जद्दोजहद और दिल्ली के कुछ वरिष्ठ पत्रकारों और पर्यावरणवादियों के हस्तक्षेप के बाद यह मामला सुलझा। लेकिन जल्दी-जल्दी ज्यादा से ज्यादा जोहड़ बनाने की धुन में जुटी संस्था का यह वर्ष (1988-89) बेकार हो गया। संस्था को इस दौरान गांव की अंदरूनी राजनीति का

भी सामना करना पड़ा। फिर भी तीसरे वर्ष में ही अंगारी व सूरतगढ़ के ग्रामीण जीवन में जोहड़ का चमत्कार हुआ। इससे न सिर्फ गेहूँ की अच्छी फसल हुई बल्कि वहां जंगली पेड़-पौधे भी अपने आप उगने लगे। इतना ही नहीं पेड़ों पर पक्षियों ने घोंसले भी लगा लिए। जमीन का कटाव रुक गया और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ने लगी।

इस दौरान गांव के बेकार लोगों को खूब काम मिला। छोटे से छोटे जोहड़ बनाने में भी 20 मजदूरों को लगभग एक महीना लग जाता था। संघ के कार्यकर्ताओं ने काम के बदले अनाज वाली योजना के तहत भी इस इलाके में जोहड़ बनाए। जोहड़ बनाने का यह तेईसवाँ वर्ष चल रहा है। इस दौरान इस क्षेत्र के गाँवों में सैकड़ों 'गजधर' जी उठे हैं। पुराने जमाने में तालाब बनाने का दारोमदार गजधर पर ही होता था। अब तो गांव वालों की मदद के लिए इंजीनियर भी आ गए हैं। पर चलती गांववालों की ही है। गूजरों की लोसल में एक जोहड़ को देखकर जिले के एक बड़े इंजीनियर ने कहा कि यह ठीक से नहीं बना है, 'गाँव बह जाएगा'। लेकिन गांव वाले अड़े रहे। थोड़े दिनों बाद जमकर पानी बरसा और यहीं गांव वालों का और इंजीनियर का इम्तिहान हो गया। जोहड़ ने खूब पानी बटोरा और उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा। इससे लगता है गाँव वालों के अनुभव अपने पर्यावरण और पारिस्थितिकी के मामले में ज्यादा खरे हैं।

पारंपरिक दृष्टि से किए गए इस रचनात्मक काम से इतनी ऊर्जा पैदा हुई कि तरुण भारत संघ जैसा छोटा-सा संगठन सरिस्का के खान माफिया से भी जा टकराया। यह जोहड़ बनाने का पांचवाँ वर्ष (1991-92) था। तिलवाड़ी गाँव में जोहड़ों में पानी नहीं आया तो लोगों को लग गया कि इन खानों के रहते न तो पानी को इकट्ठा कर पाना संभव है और न इस इलाके की जैविक वन्य संपदा बचाई जा सकती है। इस संघर्ष में संस्था ने जोहड़ों को खानों के विकल्प के रूप में पेश किया। ऐसा खनन जो कि मानव सभ्यता के विकास के लिए अति आवश्यक नहीं है। वह भोगवादी और विनाशकारी है। उसकी तुलना में जोहड़ जहां खेतिहर व्यवस्था को स्वावलम्बन देते हैं, वहीं वे प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा भी करते हैं। किसी राष्ट्रीय नीति के बिना ही जो तालाब हमारे गाँव-गाँव और पुरवा ढाणी में बने हुए थे। आज भी हम उनका कोई समर्थ विकल्प पेश नहीं कर सके हैं। ग्रामीण समाज बनाम औद्योगिक समाज की बहस चलाने वाले भी आज इनके महत्त्व को स्वीकार कर रहे हैं। इसलिए पुरातन परंपरा के प्रतीक तालाबों और जोहड़ों का टिकाऊ ग्रामीण व्यवस्था का प्रतीक बन जाना स्वाभाविक है।

नदी का सवाल, सभ्यता और सरसा

जहां तक नदियों का सवाल है, पुराणों में भी इनके बारे कहा गया है कि जो प्रदेश नदी से हीन है, वह ज्ञान-विज्ञान से भी हीन होता है। इसलिए नदी की आवश्यकता का मूल यही रहा कि वह अगाध पापराशिजनित भय का निवारण कर सदैव सुशोभित रहे और सबका हित करती रहे। ज्ञानी जनों ने भी इनकी स्तुति की है। उन्होंने कहा कि आप अन्न की प्रदात्री और उत्तम ऐश्वर्यवती होकर नहरों को जल से परिपूर्ण करें। आप सदैव गतिशील रहने वाली हैं और मेघों के बरसने के बाद जिस प्रकार कल-कल ध्वनि का नाद करती हैं, इसीलिए आपका नाम नदी पड़ा है। इसमें दो राय नहीं है कि नदियां किसी भी सभ्यता की अर्द्धांगिनी होती हैं। वे उसके पोर-पोर से जुड़ी होती हैं। ऐसी कि अगर नदियां न हों, तो सभ्यता विकास की अधूरी पगडंडियों पर ही स्थगित हो जाये। नदियां जीवनदायी होती हैं, तभी तो हमारे पुरखों ने नदियों पर गीत रचे, श्लोक रचे। कूर्म पुराण के आठवें अध्याय में आदमी के अस्तित्व और उसकी संवेदनाओं से जोड़ते हुए नदियों को इस तरह महिमामंडित किया गया है...

त्रिभिः सारस्वतं तोयं सप्ताहेन तु यामुनम्
सद्यः पुनाति गांगेयं दर्शनादेव तु नार्मदम्।

इस श्लोक का अर्थ साफ है कि सरस्वती तीन दिन में, यमुना एक सप्ताह में, गंगा तुरंत और नर्मदा तो दर्शन मात्र से ही पवित्र कर देती है। यह पवित्रता भले ही पाप और पुण्य के अर्थों में प्रचारित की गई हो, सच तो यह है कि यह हमारे मानसिक विकास की सूचक है। 33 हजार पाँच सौ करोड़ साल पहले जन्मी इस पृथ्वी पर नदियां बननी शुरू हुईं और पिछले बीस करोड़ वर्षों के दौरान पृथ्वी की सतह में दरारें पड़नी शुरू हुईं। नदियों के बनने के साथ ही मानव सभ्यता की पैदाइश भी दर्ज है। हम यहां उस नदी का जिक्र करने जा रहे हैं, जिसके इतिहास और भूगोल की परिधि छोटी जरूर है, किंतु जीवन की सृजनशीलता को जीवित रखने के लिए वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह आज अपने पुनर्जीवन के बेहद ही खूबसूरत रूप में है, जो व्यवस्था की मरी हुई बुद्धिमता का शिकार होकर मर चुकी थी। वह नदी है सरसा नदी। यह अरावली की पर्वत शृंखला के सरिस्का क्षेत्र के कुछ हिस्सों में रेंगती है।

भौगोलिक परिचय

सरसा नदी की मुख्य धारा, राजस्थान के पूर्वोत्तर में स्थित अलवर जिले की तहसील थानागाजी के अन्तर्गत आने वाले अंगारी, गुढ़ा किशोर दास व मैजोड़ गाँवों की सीमाओं से निकल कर दक्षिण की ओर जयसिंहपुरा, डेरा, बामनवास, किशोरी, भीकमपुरा आदि गाँवों के समीप से गुजरती हुई पहले जैतपुर बाँध में, फिर अजबगढ़ के जयसागर में और फिर सरसा देवी बाँध में जाती है । यहाँ से यह धारा पूर्व दिशा में घूम कर धीरोड़ा, कीटला, श्यालूता, नांगल दासा होते हुए आगे को बढ़ती है । नांगल दासा से आगे यह पहले अरवरी नदी को अपने में मिलाती है और फिर कुछ ही दूरी पर रेडिया व उरवाड़ी गाँवों के नीचे जहाज वाली नदी, भगाणी व तिलदह नदियों को अपने में समेटती हुई बाँदीकुई की ओर चली जाती है। रेडिया के नीचे त्रिवेणी संगम से आगे बैजूपाड़ा तक यह नदी 'साँवाँ नदी' के नाम से जानी जाती है। वहीं बैजूपाड़ा के पास यह साँवाँ नदी 'मैड़' से आने वाली बाणगंगा में मिल जाती है।

बाणगंगा नदी को उतंगन नदी के नाम से भी अभिलिखित किया जाता है । बाणगंगा नदी बैजूपाड़ा से आगे, गम्भीर नदी में मिलकर चम्बल के समानान्तर चलती

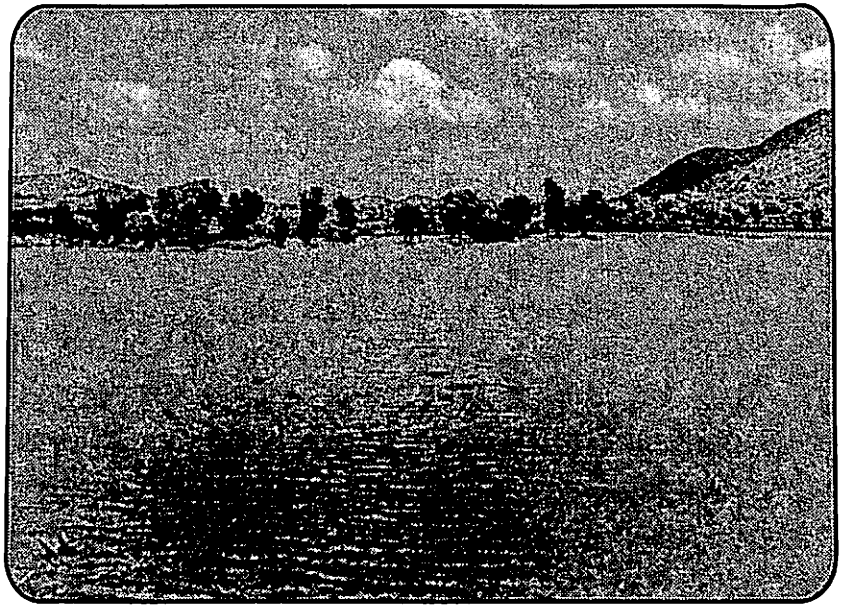

हुई यमुना नदी में जाकर समा जाती है। यमुना नदी प्रयाग (इलाहाबाद) में 'राष्ट्रीय नदी गंगा' में समाहित हो जाती है, और गंगा नदी अन्त में गंगा सागर में आत्मसात् होकर सागर-स्वरूप हो जाती है।

सरसा नदी गुढ़ा किशोर दास से नांगल दासा तक ही मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि इन दोनों गाँवों के बीच ऐतिहासिक गांव भानगढ़ (जो वर्तमान में उजड़ा हुआ है) के पास सरसा देवी का मन्दिर स्थित होने के कारण ही इस नदी का नाम 'सरसा नदी' पड़ा। गुढ़ा किशोर दास से नाँगल दासा तक सरसा नदी बहुत सारी छोटी-बड़ी धाराओं को अपने में समेटती हुई आगे बढ़ती है। इसकी मुख्य धारा में एक नाला तो अंगारी से शुरू होकर जयसिंहपुरा के पास मिल जाता है और दो नाले मैजोड़ और बाछड़ी से निकल कर बामनवास के पास पहले आपस में मिलते हैं, फिर थोड़ी दूर आगे जाकर मुख्य धारा में मिल जाते हैं। एक नाला बीसूणी से चलकर डेरा के पास नदी में मिल जाता है।

बामनवास से किशोरी के बीच अलग-अलग जगहों पर पाँच नाले सरसा नदी में मिलते हैं। उनमें एक सूरतगढ़ से, एक क्यारा से, एक श्यामपुरा के जंगल से, एक नीमाला से तथा एक रायपुरा-भाल से आता है। दौलतपुरा, भीकमपुरा व जैतपुर के बीच भी कई नाले अलग-अलग जगहों पर मुख्य धारा में मिलते हैं। इनमें से एक नाला बलुवास-दौलतपुरा-नीमाला से शुरू हो कर आता है और एक बलुवास के दक्षिणी भाग से, एक साढ्यास-किशोरी से, एक भीकमपुरा से तथा एक नाला गोपालपुरा - गोविन्दपुरा की ओर से आकर ये सब नाले अलग-अलग जगहों पर मुख्य धारा में मिलकर अंत में जैतपुर बाँध में मिल जाते हैं एक उपधारा पिपलाई, मोरड़ी से भी चलकर 'किलाणा के बाँध' को भरती हुई जैतपुर बाँध के नीचे मुख्य धारा में आकर मिल जाती है।

इन धाराओं के अलावा सीली बावड़ी व अजबगढ़ के गुवाड़ों के जंगल का पानी भी बहुत सारे छोटे-बड़े नालों के माध्यम से सरसा नदी में आकर मिल जाता है। गूगली का गुवाड़ा के जंगल से एक बड़ा नाला अजबगढ़ के 'जयसागर बाँध' में आ कर मिलता है। जय सागर में ही पश्चिमी पहाड़ियों के बीच में बने हुए रियासत कालीन 'सोम सागर' का पानी भी बाँध के भरने के बाद अथवा झरने के रूप में आकर मिलता है। जय सागर और सरसा देवी के बीच दोनों तरफ की पहाड़ियों के ढाल का पानी भी

सरसा नदी में ही आकर मिलता है। भानगढ़ व गोला का बास का पानी भी धीरोड़ा के पास मुख्य नदी में आ कर मिल जाता है और धीरोड़ा में ही धीरोड़ा के पूर्वोत्तर भाग का वर्षा-जल भी विभिन्न नालों के माध्यम से आकर मुख्य धारा में मिल जाता है।

नाँगल-चंदेल, लाँकाश और पावटा आदि गाँवों का पानी भी अलग-अलग दिशाओं से आकर श्यालूता के पास मुख्य नदी में मिल जाता है। बिरकड़ी बाँध का पानी तथा नारायणी माता के जंगल का पानी अलग-अलग दिशाओं से आकर नांगल-दासा के पास आकर सरसा नदी की मुख्य धारा में मिल जाता है। नाँगल-दासा से एक-डेढ़ किलो मीटर आगे सरसा और अरवरी, दोनों नदियों का संगम हो जाता है। इस संगम से आधा-एक किलो मीटर दूर इन दोनों संयुक्त नदियों में 'जहाज वाली नदी' तथा 'भगाणी व तिलदह' नदियाँ भी आकर मिल जाती हैं। इस त्रिवेणी-संगम से आगे इन सभी संयुक्त नदियों का नाम ''साँवाँ नदी'' हो जाता है।

सरसा नदी का जलागम क्षेत्र मुख्यतः पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह क्षेत्र सरिस्का के बफर व पेरीफेरी ज़ोन में आता है। यहाँ के गाँवों के आस- पास पुराना जंगल बहुत कम बचा है, लेकिन पिछले 15-20 वर्षों के दौरान जहाँ-जहाँ लोगों में संगठन व जागरूकता आई है, वहाँ-वहाँ स्थानीय नये पेड़ों में वृद्धि स्पष्ट दिखाई देने लगी है। सूरतगढ़, गोपालपुरा, सीली बावड़ी आदि गांव इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इस क्षेत्र में कहीं पथरीली, कहीं दोमट व कहीं काली मिट्टी है।

दोमट व काली मिट्टी फसल के लिए तथा पथरीली मिट्टी पेड़-पौधों के लिए उपजाऊ होती है। यहाँ रबी की फसल में गेहूँ, जौ, सरसों व चना आदि होते हैं तथा खरीफ में मक्का, बाजरा, ज्वार, तिल आदि होते हैं। जायद में सब्जियाँ पैदा की जाती हैं। भू-गर्भ स्थित जल प्रायः वर्षा पर निर्भर है; लेकिन यदि वर्षा-जल को संरक्षित कर लिया जाता है, तो दो-तीन वर्ष के अकालों में भी वह जल की आपूर्ति करता रहता है। सरसा नदी जलागम क्षेत्र के लगभग सभी गांवों में जल संरक्षण के अच्छे काम हुए हैं।

गुढ़ा किशोर दास में सरसा नदी जलागम क्षेत्र के ऊपरी भाग की रिज लाइन का लेवल समुद्र तल से 440 मीटर ऊपर, मध्य भाग में सरसा देवी मन्दिर के पास 340 मीटर तथा सबसे नीचे के भाग में 'नाँगल दासा' के पास, 'जहाँ अरवरी नदी का संगम है', वहाँ का लेवल, समुद्र तल से 294 मीटर ऊपर है। जबकि इस क्षेत्र के सर्वोच्च पर्वत-शिखर की ऊँचाई समुद्र तल से 684 मीटर ऊपर है।

गुढ़ा किशोर दास से सरसा देवी मंदिर तक अर्थात् उत्तर से दक्षिण को इस नदी की सीधी दूरी 28 किलोमीटर है तथा नदी की घुमावदार लंबाई लगभग 32 किलोमीटर है। सरसा देवी मंदिर से नांगलदासा के आगे त्रिवेणी संगम तक अर्थात् पश्चिम से पूर्व को नदी की सीधी दूरी 11 किलोमीटर तथा घुमावदार लम्बाई लगभग 14 किलोमीटर है। इस प्रकार गुढ़ा किशोर दास से त्रिवेणी संगम तक नदी के घुमाव के अनुसार लम्बाई लगभग 45 किलोमीटर है।

विश्व-भू-मानचित्र में सरसा नदी क्षेत्र 27 डिग्री, 03 मिनट, 54 सैकण्ड उत्तरी अक्षांश से 27 डिग्री, 21 मिनट, 01 सैकण्ड उत्तरी अक्षांश तथा 76 डिग्री, 13 मिनट, 36 सैकण्ड देशान्तर से 76 डिग्री, 23 मिनट, 44 सैकण्ड पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। सरसा नदी का जलागम क्षेत्र 278.8 वर्ग किलो मीटर है। इस क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा सन् 1985 से मार्च 2013 तक जन सहभागिता से कुल 269 जल संरचनाओं का निर्माण हुआ है।

□□□

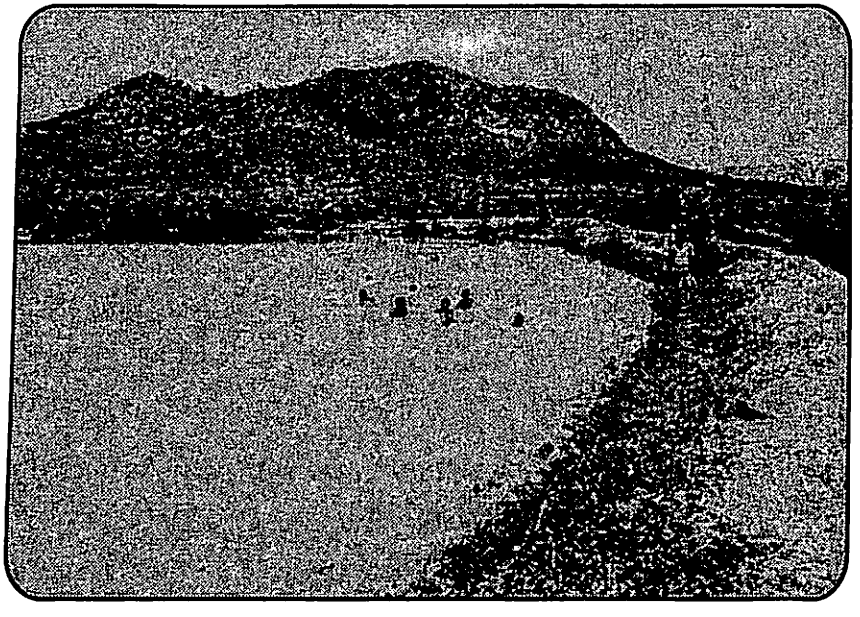

वन विकास नहीं, विनाश ने बनाया बेपानी

इतिहास गवाह है कि कोई भी सभ्यता वहां नहीं टिक पाई है, जहां पानी की अनुपलब्धता रही है। सरसा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। सरसा नदी पहाड़ों से निकली है। जब तक पहाड़ों पर हरियाली थी, घने जंगल थे, तब तक इन पहाड़ों से सैकड़ों झरने बहा करते थे। यदि मानसून अच्छा हुआ तो पौष-माघ और फाल्गुन तक इन धाराओं में पानी बहा करता था। लेकिन आज़ादी के बाद जब जमींदारी के जंगल सरकारी होने लगे, तो बड़ी तादाद में जंगल का कटना शुरू हुआ। इससे पहले वन-प्रबंध लोगों का अपना था। लोग अपनी मौलिक जरूरतों के मुताबिक ही वनों का उपयोग करते थे। किसी के द्वारा दुरुपयोग करने पर उसके लिए जुर्माने का प्रावधान था। आज़ादी के बाद इन जंगलों का कोई धणी-धोरी, मालिक-मुख्तार नहीं रहा। सारा का सारा जंगल वन-विभाग के कब्जे में चले जाने के कारण लोग भी जंगल की ओर से उदासीन हो गये। इस जंगल का कौन क्या करता है, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं रह गया। इस तरह पूरी बेहयाई से जंगल काटा जाने लगा। कुछ इस भाव से कि "राम नाम की लूट है, लूट सको तो लूट"। वन विभाग के कर्मचारियों ने भी वनों की कटाई कर उसकी अवैध खरीद-फरोख्त शुरू कर दी। इस तरह जंगल के खत्म होने के साथ-साथ पानी का खत्म होना भी स्वाभाविक हो गया। पिछले तीस-चालीस साल का रिकॉर्ड बताता है कि जिस दिन वर्षा होती थी, बस उसी दिन पानी के दर्शन होते थे। फिर अगले दिन गायब। यानी एक दिन के दर्शन भर के अलावा जरूरत के समय सरसा नदी सूखी मिलती थी।

इस प्रकार सूखे ने इस पूरी नदी के जलग्रहण क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया। अलबत्ता सरकार ने भी पुनर्भरण से ज्यादा जलशोषण के कारण इस पूरे इलाके को डार्क जोन घोषित कर दिया। इधर पुराने कुएं सूखने लगे थे। चारों ओर पानी का जबरदस्त अभाव दिखता था। सरसा नदी के कैचमेंट एरिया में आने वाले गाँव के गाँव भी पलायन करने लगे। जो बचे, वे गहरी प्यास झेलते हुए बचे। किसानों ने अपने द्वार से गायों को खोल दिया। उन दिनों में भैंस पालना तो एक सपने की तरह था। पीने के पानी के ही लाले थे, नहाने-धोने की बात तो बेमानी थी। खेती करना लोग लगभग भूल ही गये थे, या यूं कहें कि खेती का काम उस समय आसान नहीं रहा था। यह पूरा क्षेत्र लाचारी, बेकारी और बीमारी से ग्रस्त हो गया था। यहां केवल बच्चे और बूढ़े ही बचे थे। जवान तो गांव छोड़कर चले गये थे। अब तो यहां काटने के लिए जंगल भी नहीं बचा था। हालात यह हो गये कि यह पूरा इलाका बेपानी हो गया था।

□□□

तबाही के दौर में बदला तरुण भारत संघ ने निजाम

वह ऐसा ही तबाही का दौर था, जब गोपालपुरा गाँव में तरुण भारत संघ की मदद से पानी का काम शुरू हुआ। जोहड़ बनाने के इल्म में माहिर माने जाने वाले मीणाओं की बस्ती गोपालपुरा में सबसे पहले मेवालों का बाँध एवं चौंतरे वाला जोहड़ 1986 में बना। इनके बनने से एक बारगी ही पानी चमक उठा। लेकिन पानी के पुनर्जीवन का अंकुर अभी ठीक से फूटा भी नहीं था कि सिंचाई विभाग ने उन्हें तोड़ने के नोटिस दे दिये। पर तब तक गोपालपुरा के लोगों ने पानी पा लेने के साथ ही अपना संगठन भी कायम कर लिया था। जीवंत और जुझारू संगठन। 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने सरिस्का में अपने मंत्रीमंडल की एक बैठक रखी थी। गोपालपुरा वासियों ने सिंचाई विभाग और जिला प्रशासन के बदसूरत चेहरे को प्रधानमंत्री के सामने ज्ञापन के रूप में रखा।

इस घटना से जिला प्रशासन और भड़क उठा। वह गोपालपुरा के जोहड़ों के आगौर, जिसे हम जलागम क्षेत्र भी कहते हैं, में खानाबदोश बंजारों को बसाने लगा। यह ग्लोबलाइजेशन का वह दौर था, जब ग्लोबल स्तर पर पर्यावरण को विकास की एक अहम् धारा माना जा रहा था। यही वजह थी कि राजधानी दिल्ली के कुछ वरिष्ठ पत्रकारों और अनिल अग्रवाल व उन जैसे अन्य पर्यावरणविदों ने इस मामले में हस्तक्षेप कर गोपालपुरा के लोगों का साथ दिया।

यहां यह जान लेने की बात है कि सन् 1988 में दीपावली के दिन हरियाणा के गुड़गांव स्थित नूंह की पत्थर खदानों से अड़तालीस बंधुवा मजदूर मुक्त कराए गए। उन्हें राजस्थान के अलवर जिले में बसाने का फैसला किया गया। 48 में से 20 लोगों को किशनगढ़ बास के समीप बसाया गया, शेष 28 लोगों को थानागाजी तहसील में बसाने की कोशिश की गई। प्रशासन ने उन मजदूरों को पहले कुछ दिनों के लिए इस तहसील के एक स्कूल एवं पंचायत समिति में रखा, किन्तु बाद में उन्हें अमरा का बास नामक स्थान पर बसाया गया। लेकिन अमरा का बास सरिस्का अभयारण्य क्षेत्र में आता है, इसलिए एक माह के बाद वन विभाग ने उन्हें वहां भी नहीं रहने दिया। इसके अलावा अन्य कई स्थानों पर उन्हें बसाने का प्रयास किया गया। लेकिन स्थानीय विरोध के कारण प्रशासन उन लोगों को बसा नहीं पाया।

अंत में प्रशासन ने गोपालपुरा गांव के उस स्थान को चुना, जिसे गांववासियों ने तरुण भारत संघ के सहयोग से पिछले तीन वर्षों से वृक्षारोपण एवं वनस्पतियों का संरक्षण करने हेतु पत्थर की चार फुट ऊंची चारदीवारी से आरक्षित करके रखा था। इस स्थान को बंधुआ मजदूरों को आवंटित करने हेतु प्रशासन ने 21 जून को आवंटन समिति की बैठक बुलाने का निर्णय किया था, लेकिन इस स्थान को आवंटित करने में स्थानीय जन-प्रतिनिधियों का विरोध होने की आशंका के कारण एस.डी.एम. अलवर, श्रीमती उषा शर्मा ने अपने विशेष अधिकार द्वारा आवंटन समिति की बैठक से एक दिन पूर्व ही आवंटित कर दिया। बाद में भगवान गुप्ता, तहसीलदार, थानागाजी ने संबंधित लोगों को राजी कर लिया और उनका प्रशासन के अनुकूल उपयोग किया। फलस्वरूप गोपालपुरा गांव का स्व-अभिक्रम जिनके द्वारा यह गांव हरा-भरा व प्राकृतिक संसाधनों के विकास की दृष्टि से अद्वितीय दिखता था, तहस-नहस होना आरम्भ हो गया।

ग्रामवासियों को जब इस घटना की जानकारी हुई तो सभी ग्रामवासी 23 जून 1989 को प्रातः गोपालपुरा के तेजाजी के स्थान पर इकट्ठे हुए। बाद में यहां एक बैठक हुई। इस बैठक में लम्बी चर्चाएं हुईं। इसमें प्रशासन के साथ-साथ गांव के उन लोगों की भी निन्दा की गई जो इसमें प्रशासन की मदद कर रहे थे। सभा के निर्णय के अनुसार ग्रामवासियों ने एक ज्ञापन तैयार करके जिलाधीश को दिया। जिसमें लिखा था : गोपालपुरा गांव के खसरा नं. दो व तीन पर तरुण भारत संघ की सहायता से हम लोगों ने हजारों पेड़ लगाये हैं, जो अब बढ़कर दो से पांच फुट तक लम्बे हो चुके हैं। हमें ज्ञात हुआ है कि इस पहाड़ी क्षेत्र पर बंजारों को बसाया जा रहा है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप इस जंगली क्षेत्र में आबादी नहीं बसायें। यदि आपने इस क्षेत्र में आबादी बसाने की कोशिश की तो हम आपके इस कदम के खिलाफ 'सत्याग्रह' करेंगे। आवश्यकता हुई तो हम सभी ग्रामवासी बलिदान करने को भी तैयार रहेंगे। लेकिन हम अपना जंगल नहीं काटने देंगे। आशा है कि आप स्वयं ध्यान देकर हमारे जंगल को बचायेंगे।

ग्रामवासियों के ज्ञापन को जिलाधीश ने अच्छी तरह से पढ़ा और कहा कि पेड़ तो कटेंगे ही, पर लोग कैसे गर्दन कटाते हैं, यह हम देखेंगे। ग्रामवासियों ने बहुत प्रार्थना की और कहा 'महाराज जंगल की रक्षा करो', इसके बावजूद भी जिलाधीश ने उनकी बात अनसुनी कर दी। ग्रामवासी निराश होकर वापस लौट आये। जिन बंधुआ मजदूरों

के छः परिवारों को लगभग 60 बीघा पक्की जमीन तहसील कार्यालय में ही बैठकर एस.डी.एम. ने आवंटित कर दी थी, वह सीधे-सीधे गरीब से गरीब को आपस में लड़ाने की साजिश साबित होने लगी। इसमें यह भी साफ दिखाई देने लगा कि प्रशासन गांव के स्व-अभिक्रम को समाप्त करना चाहता है, क्योंकि गोपालपुरा अनुसूचित जनजाति का गांव है और वहाँ गरीबी ही गरीबी है। इस गांव के वासियों ने तरुण भारत संघ की प्रेरणा से अपने जल-संसाधनों का प्रबन्धन और मिट्टी के संरक्षण हेतु जंगल संवर्धन का एक अभिक्रम आरम्भ किया था। उसे तोड़ने के लिए प्रशासन एकदम तल्लीन हो गया था। इसलिए दूसरे गांवों की बकरियों समेत अन्य पशुओं द्वारा गांववासियों के लगाए जंगल को उजाड़ने का आदेश दे दिया गया। एस.डी.एम. अलवर ने चरवाहे बुलाकर स्पष्ट कहा कि तुम इसमें पशुओं को चराओ, कोई मना करे तो हमें बताना। मजदूरों से पेड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा कि झाड़ियाँ काट कर साफ कर दो। विडम्बना देखिए कि उनकी नजर में पेड़ झाड़ी बन गए थे।

जिस गांव ने अपने अनुशासन व अभिक्रम से जंगल को हरा-भरा बना लिया था, वह अनुशासन ही अब प्रशासन की आंख की किरकरी बन गया था। उसी को तोड़ने के लिए बंधुआ मजदूरों को भी मजबूर होना पड़ रहा था। जबकि गाँव की तरफ से माँगू पटेल ने अपने गाँव का दस्तूर दो जुलाई को बंधुआ मजदूरों को मिलकर बता दिया था, जिसे उस दिन उन्होंने मान लिया था और पेड़ काटने की तैयारी से आये मजदूर वापस लौट गये थे। लेकिन प्रशासन को तो सबसे पहले उसी पर हमला कराना था। इसलिए वही हुआ। प्रशासन ने बंधुआ मजदूरों को यह सब करने के लिए पुनः तैयार किया और दूसरी तरफ गांव के ही कुछ लोगों द्वारा गांव का संगठन तोड़ने का काम कराया। प्रशासन की शह पाकर उन लोगों ने गांव में फूट डालने के साथ-साथ बंधुआ मजदूरों को भड़काने का भी काम किया।

असल में ऐसे लोगों का हित तो बिगाड़ में ही था, क्योंकि गांव के संगठन से पहले इस गांव में उनकी खूब चलती थी और एक से सौ बनाने का उनका कारोबार भी खूब चलता था। संगठन बनने पर उनका यह काम रुक गया। फिर भी उनकी पुरानी पकड़ तो थी ही और ऊपर से उन्हें प्रशासन का सहारा भी मिल गया था। उसका लाभ प्रशासन ने मनचाहे ढंग से पूरा उठाया और स्थिति यह बना दी कि जिस गांव में गांव की इजाजत के बिना पेड़ का एक पत्ता तक नहीं तोड़ा जाता था, वहीं सभी एक दूसरे के विरोध में आमने-सामने खड़े हो गये।

जब गांव की यह स्थिति बन गई तो प्रशासन ने दूसरी बार पांच जुलाई को गांव में पेड़ काटने के लिए पुलिस संरक्षण के साथ बंधुआ मजदूरों को भेजा। वही दिन इस गांव के लिए 'काला-दिवस' बन गया। इस दिन ग्रामवासी खड़े-खड़े अपनी आंखों से गांव के दस्तूर की अवहेलना होते देखते रहे और कुछ नहीं कर सके। उनके मन में पेड़ के प्रति प्यार, जिसे लम्बे समय से वह संजोये रखे थे, बिखर रहा था। गांव का अपना सपना उनकी आंखों के सामने ही टूट रहा था। इन घटनाओं के बाद गांव पहले जैसा नहीं रहा।

गांव का अनुशासन तो समझो खत्म ही हो गया था। साथ ही बंधुआ मजदूरों को उनके साथ काम कर रही शक्तियों ने गांववासियों के सामने भी खड़ा कर दिया था। जबकि गांववासियों व तरुण भारत संघ ने पहले, जब बंधुआ मजदूर अमरा के बास में रहते थे, वहां उनके खाने के लिए गेहूं पहुंचाया था और यही नहीं उन्हें कोई कष्ट नहीं हो, ऐसा संकल्प भी लिया था। बंजारों (बंधुआ मजदूरों) की तरफ से ग्रामवासियों को कुछ भी कहा जाये, तब भी उनके बसाने में ग्रामवासियों का सहयोग होना चाहिए, यह तय था। बावजूद इसके स्थितियां बिगाड़ की तरफ बढ़ती ही चली गईं। नतीजन बंधुआ मजदूरों के मन में भी भय समाता चला गया।

बेचारे बंधुआ मजदूर दर-दर की ठोकरें खाकर परेशान हो चुके थे। उन्हें चारों तरफ धोखा दिखाई देने लगा था। उनकी भलाई की भी कोई बात करे तो वे उससे लड़ने लगते थे। अब गांववासियों और बंधुआ मजदूरों के बीच अविश्वास बहुत बढ़ गया था। ऐसी परिस्थतियों का कायम रहना गांववासियों और बंधुआ मजदूरों दोनों के लिए ही खतरनाक था।

अखबारों में भी यह विवाद सुर्खियों में था, इस विवाद को समाप्त करने के लिए 20 जुलाई को प्रभाष जोशी, चन्डीप्रसाद भट्ट और डा. जी.डी.अग्रवाल का एक उच्चस्तरीय तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल गोपालपुरा पहुंचा। यहां की स्थिति देखकर प्रतिनिधिमण्डल ने निर्णय लिया कि अब गांव का जंगल तो तहस-नहस हो ही चुका है। गांव का अनुशासन भी टूट गया है। इसलिए सबसे पहले अन्य बातों को पीछे रखकर बंधुआ मजदूरों और ग्रामवासियों का मन मिलाना आवश्यक है। प्रतिनिधिमण्डल ने अगले दिन जिलाधीश से मुलाकात की और उन्हें इनके मन मिलाने और आत्मविश्वास बढ़ाने की योजना सुझाई।

22 जुलाई को प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यगण, जिलाधीश अलवर, तरुण भारत संघ के पदाधिकारी, ग्रामवासी और बंधुआ मजदूर सभी गोपालपुरा गांव के तेजाजी के स्थान पर इकट्ठे हुए। आपस में बातचीत हुई। जिलाधीश ने अपनी गलती स्वीकार की और बंधुआ मजदूरों को अन्यत्र नहीं बसा सकने की अपनी मजबूरी भी बताई। तब ग्राम़वासियों ने बंधुआ मजदूरों को अपनाया और कहा कि आप हमारे भाई हैं। आपको भी हमारे गांव के दस्तूर मानने पड़ेंगे। मजदूरों ने गांव वालों की बात को स्वीकारा। फिर ग्रामवासियों ने जिलाधीश को गणेशजी की एक प्रतिमा भेंट की। अंत में सबने मिलकर एक साथ सहभोज किया। इस अवसर पर बंधुआ मजदूरों के बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था की जिम्मेदारी तरुण भारत संघ ने ली। इसके अलावा संघ ने अन्य आवश्यक कार्यों में भी सहयोग का वचन दिया। 24 जुलाई को मुक्त बंधुआ मजदूरों गोपाल व नारायण के दो परिवारों को एक मण गेहूं व पहनने के लिए कपड़े दिये गये।

गौरतलब है कि ये बंधुआ मजदूर अब से पहले चार जगह बसाये गये थे, फिर उठाये गये और अंत में इन्हें ऐसे गांव ने स्वीकार किया जिनके मन में पेड़ों के साथ-साथ आदमी के प्रति भी प्रेम रहा है। बीच-बीच में अनेक प्रकार की विघटनकारी शक्तियां इन्हें लड़ाने का प्रयास करती रहीं, लेकिन प्रभाष जोशी, चन्डी प्रसाद भट्ट, अनिल अग्रवाल और सुनीता नारायण जैसी जागरूक हस्तियों ने स्थिति को सम्भाल लिया तथा एक 'अनहोनी' से बचाने में अहम् भूमिका निबाही।

इस घटना के 21 साल बाद वह सारी जमीन इन बंधुआ मजदूरों के हाथ से निकलकर फिर एक अधिकारी के हाथ में पहुंच गई। अब यह जमीन न पेड़ों की रही, न गांव की और न ही बंजारों की रही। और तो और वह कौड़ियों के मोल बिक गई। पेड़ भी कट गये, जमीन भी गई और बंजारे भूमिहीन हुए सो अलग। यही है आज के विकास के नाम पर विस्थापन, पुनर्वास और विनाश का यथार्थ।

गोपालपुरा के बाँधों का प्रभाव 1986 से जाहिर होने लगा था। इसके प्रभाव को देखकर 1987 में सरसा नदी के सबसे ऊपरी गांव अंगारी जहां से सरसा नदी चलती है, में भी पानी के पुनर्जीवन को लेकर ऐसा ही काम शुरू हुआ। क्योंकि अंगारी गांव में गोपालपुरा की रिश्तेदारी थी। इस गांव का कुल क्षेत्रफल 1163 हैक्टेयर है, जिसमें से 95 हैक्टेयर भूमि पर सिंचित खेती है। यहां 336 हैक्टेयर असिंचित खेती होती है। शेष 732 हैक्टेयर भूमि पर पहाड़ी शृंखलाएं हैं। इस गांव से पानी दो हिस्सों में बंटता है।

सरसा नदी की धारा वाले हिस्से पर लोगों ने बाँध बनाना तय किया। ताकि पानी को रोका जा सके और अकाल से उबरा जा सके। बाँध बनकर तैयार हो गया।

जुलाई 88 की वर्षा में यह बाँध पूरा भर गया। इस बाँध का भराव क्षेत्र लगभग सात हैक्टेयर है, जिसमें पानी पूरा का पूरा फैल गया था। यह सारा पानी अक्टूबर के अंत तक खाली हो गया और इस सारी भूमि में गेहूं बो दिये गये। परिणाम देखकर गांव वालों की बाँछें खिल गईं। अंगारी में कितने ही सालों के बाद गेहूं की फसल लहलहा रही थी। 88 की बारिश में जब यह बाँध भरा, तो बाँध के नीचे की तरफ के 21 कुओं का जलस्तर रातों रात ऊपर आ गया था। इन कुओं में सात कुएं तो ऐसे थे, जिनमें पानी कभी टूटता ही नहीं था। इन कुओं से लगभग 23 हैक्टेयर क्षेत्रफल वाली भूमि दो बार से तीन बार सिंचित होने लगी। ये वे कुएं थे, जिनका जलस्तर या तो बहुत कम हो गया था, या वे बिल्कुल ही सूख गये थे।

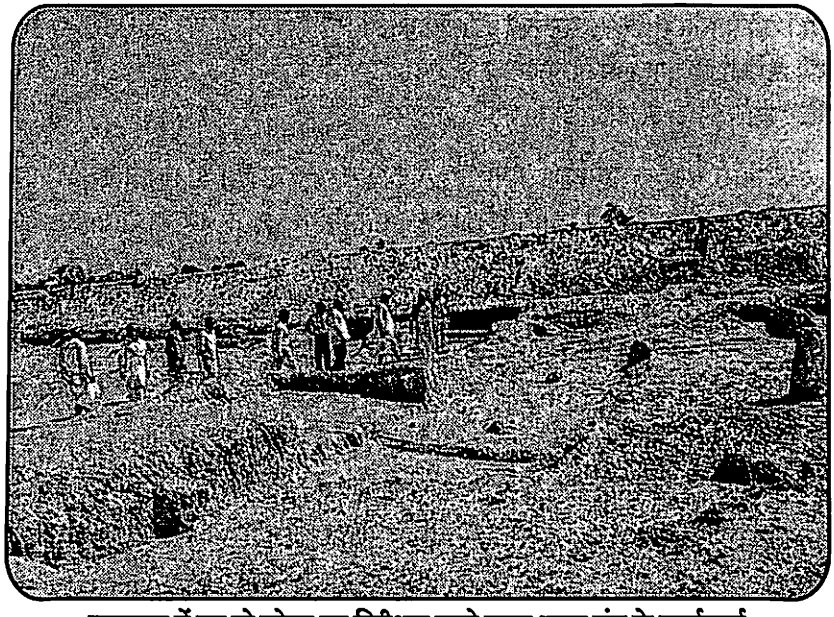

साड्यास में बन रहे जोहड़ का निरीक्षण करते तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता

इस बाँध से लगभग 50 हैक्टेयर भूमि का कटाव थम गया। पहले होता यह था कि पानी तो वहां ठहरता ही नहीं था, पानी के साथ-साथ गांव की ढेर सारी उपजाऊ मिट्टी भी कटकर बह जाया करती थी। बाँध बनने के बाद गांव की लगभग एक सौ

पचास हैक्टेयर उपजाऊ भूमि की मिट्टी कटकर बाहर जाने से रुक गई। इस बाँध के कैचमेंट में नंगी पहाड़ियां होने के कारण तेज बरसात के समय मिट्टी का कटाव अधिक होने लगा था। किसान यह सब उदास आंखों से देखा करता कि जिस मिट्टी की उपजाऊ पर्त को बनने में कई सौ वर्ष लगते हैं, वह वृक्षविहीन ढालू पहाड़ियों पर पानी के वेग के कारण मिनटों में कटकर बह जाया करती थी। साथ-साथ पत्थर के टुकड़ों को भी बहाकर ले जाया करती थी। अतः वह जहाँ जमती थी, वहाँ भी भूमि को नुकसान पहुंचाती थी। अब इस गांव के एक बड़े हिस्से में मिट्टी और पत्थरों का कटकर बह जाना रुक गया है।

अंगारी में इस बाँध से अब दो सौ हैक्टेयर भूमि में नमी बनी रहती है। नमी के कारण अब यहां पर घासें भी खूब जम आईं हैं। कीकर, रोंझ, पापड़, नीम, पीपल आदि के वृक्ष स्वतः उग गये हैं। इससे आस-पास की पारिस्थितिकी का खूबसूरत विकास भी हो रहा है। अब यहां जंगली जानवरों और पालतू पशुओं के लिए भी पानी की कमी नहीं रही है। ढेर सारे वृक्षों पर पंछी अपने कलात्मक नीड़ का निर्माण कर चुके हैं। पहले की अपेक्षा अब यहां पर दो सौ क्विंटल अनाज अतिरिक्त पैदा होने लगा है। पशुओं के लिए चारे की भी अब कोई कमी नहीं रह गई है।

अंगारी गांव के रामनिवास मीणा (भोला) का कहना है कि यदि यह बाँध नहीं बनता, तो सरसा नदी पुनर्जीवित नहीं हुई होती। हम 17 परिवार तो गांव छोड़कर बाहर चले जाते। हमारा कोई 'धणी-धोरी' नहीं था। अब तो यह बाँध ही हमारा सब कुछ है। राम निवास कहते हैं कि बाँध में पानी भरने के तुरंत बाद उन्हीं कुओं के कैचमेंट एरिया में मक्का की फसल हुई, जो कुएं भर गये थे। बाकी दूसरी जगह मक्के की तमाम फसलें सूख गई थीं। प्रभाती लाल कहते हैं हमारी जमीन पर पहले की तुलना में अब तीन गुणा फसल अधिक होने लगी है। छोटे लाल बलाई बताते हैं सरकार ने आज तक हमारे गांव के लिए कोई काम नहीं किया। इस बाँध की वजह से ही हम लोग अंगारी में रह पाये हैं। नहीं तो दूसरों की तरह हमें भी मजूरी की खोज में दिल्ली जाना पड़ता। कुएं भरे रहने से गांव के लगभग एक सौ व्यक्तियों को अब अपनी ही जमीन पर 90 दिनों का अतिरिक्त रोजगार मिल गया है। गांव से पलायन तो पूरी तरह समाप्त हो ही गया है। अब कोई बाहर जाता भी है, तो मजबूरी में नहीं बल्कि शौक़-मौज़ के लिए अथवा अधिक रुपये कमाने के उद्देश्य से ही जाता है।

नदी की धारा उसकी घाटी में बसने वाले गाँव की पूंजी होती है। यह आपस में भाई-चारे जैसी स्थितियों को बढ़ाती है और सहकारिता को उसके वास्तविक रूप में

कायम रखती है। नदी और उसका पानी प्राकृतिक संसाधनों के लिए रीढ़ की हड्डी की तरह है। अंगारी में बाँध बनने के बाद मैजोड़, बाछड़ी, कालालांका, काबलीगढ़, सूरतगढ़, क्यारा, रायपुरा, भाल, किशोरी, भीकमपुरा, गोविंदपुरा, जैतपुर, सीलीबावड़ी, अजबगढ़ के गुवाड़े, लील्यां, धीरोड़ा, नांगल चन्देल, श्यालूता, लाँकाश, कीटला, बलदेवगढ़, नांगलदासा आदि सभी गांवों में भी बाँध और जोहड़ बनाने का काम शुरू हुआ। एक के बाद एक जोहड़ बाँध बनने लगे। बहुत सुकून देने वाली है यह उपलब्धि कि आज इस क्षेत्र में 269 बाँध बन चुके हैं। यह नदी 1995 से अब वर्ष भर बहने लगी है। लेकिन पूरी तरह सूखी पड़ी हुई नदियां अचानक और एकबारगी ही बहने नहीं लग जातीं। सरसा नदी भी यूं ही नहीं बहना शुरू हुई, उसके बहने की भी एक अलग कहानी है।

यह 1990 में असोज यानी अक्टूबर तक बही। 1991 में कार्तिक अर्थात् नवंबर तक बही। 1992 में पौष यानी दिसंबर, तक 1993 में फरवरी यानी फाल्गुन तक, 1994 में चैत-बैशाख यानी मार्च और अप्रैल तक सरसा नदी में पानी दिखा। अगले साल 1995 में मई और जून में पहली बार पूरे वर्ष भर पानी देखा गया। जेठ के महीने में भी आंखों के सामने पानी होने से कई हजार आंखें एक साथ चमक उठीं। यह पानी सबसे पहले किसान के कुओं में और खेतों में दिखाई पड़ा। किसानों के कुओं और खेतों को भरने के बाद यह पानी नदी में बहने लगा। आज हजार-हजार खुशियाँ बनकर हजार-हजार आंखों में यह बहता हुआ दिखाई देता है।

अब दरवाजों पर पहले की तरह भेड़-बकरी बंधे नहीं दिखाई पड़ते हैं। उनकी जगह अब गाय और भैंसें दिखती हैं। गाँव-गाँव के जवान लड़के अब खेतों में काम करना ज्यादा पंसद करते हैं। शहर की ओर जाते भी हैं, तो मजबूर होकर या मजूरी की तलाश में नहीं, बल्कि ऊंची नौकरी की तलाश में जाते हैं।

असलियत है कि 50-60 साल पहले तक यह नदी बहती थी। गांव के अपने जंगल थे, सब लोग प्रकृतिमय थे लेकिन जबसे इस इलाके में वोटों की राजनीति ने जोर पकड़ना शुरू किया, तब से ही यहां का समाज टूटने लगा और आपसी मन-मुटाव होने लगे तथा जगह-जगह जंगलात विभाग ने जंगल बचाने के नाम से चौकियां बनानी शुरू कर दी थीं। जंगलात विभाग जंगल बचाने के नाम पर जंगल का ठेकेदार बन गया। पहले जो गांवाई जंगल के पट्टे गांवों के मुखिया के पास होते थे, उनको सरकार ने निरस्त कर दिया। नतीजन लोगों का जंगल के प्रति लगाव कम होने लगा और धीरे-धीरे इलाके के जंगल खत्म होने लगे। इससे यहां की प्रकृति भी रुष्ट हो गई।

80 के दशक के शुरू में ही इस इलाके को अकाल ने अपनी चपेट में ले लिया। लोग सरकारी राहत कार्यों के प्रति मुंह ताकने लगे। लेकिन प्रशासनिक स्तर पर ग्रामीण विकास के कार्यों को देखने पर पाया गया कि जो कार्य ग्रामीण समाज के लिए किए गये थे, वे सब कार्य सिर्फ फाइलों तक ही सीमित रहे हैं। इसलिए आमजन का इससे कोई सरोकार ही नहीं रहा। हालात यह थे कि इस इलाके के लोगों के पास शिक्षा के नाम पर अंगूठा, स्वास्थ्य के नाम पर असमय मौत, सड़क के नाम पर पगडण्डी, रोजगार के नाम पर पलायन और पैतृक सम्पति के नाम पर कर्ज था, जिसे चुकाते-चुकाते उसकी सारी जिंदगी बीत जाती थी लेकिन साहूकार का मूलधन बरकरार ही बना रहता था।

समाज में रूढ़ियाँ जैसे बाल विवाह, मृत्यु भोज आदि एक परम्परा का रूप धारण कर चुकी थीं। किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर मृत्यु भोज करना उसके परिजनों की मजबूरी बन गई थी। खेतिहर और गरीब तबके के लोगों का जीवन महाजन के अधीन था। अंधविश्वास और रूढ़ियों के जाल में पूरा समाज जकड़ा हुआ था। रोजगार के साधनों से वंचित लोग गरीबी में जैसे-तैसे जी रहे थे। साधनविहीन परिस्थितियों में जीवनयापन करना उन की नियति बन गई थी। चारों ओर बेकारी, लाचारी और बीमारी का साम्राज्य था। इलाके से नौजवान रोजगार की तलाश में दिल्ली, अहमदाबाद जैसे महानगरों में जाने लगे थे। गाँव एक दम वीरान व सुनसान होने लगे थे।

इसी दौरान 1985 में तरुण भारत संघ नाम की संस्था के राजेन्द्र सिंह जी अपने चार साथियों के साथ सरसा नदी क्षेत्र के गाँव किशोरी में आए। यहां से अगले दिन उन्हें गोपालपुरा का बद्री मीणा अपनी ऊंट गाड़ी में बैठाकर भीकमपुरा लाया। यहां बद्री प्रसाद गुप्ता के मकान में वह रहने लगे। राजेन्द्र सिंह जी यहां के गांवों के लोगों के लिए अजनबी थे, लेकिन कुछ करने का जज्बा व आत्मविश्वास उनमें कूट-कूट कर भरा था। उसी के बलबूते उन्होंने गोपालपुरा-गोविन्दपुरा, रायपुरा भाल आदि गांवों में शिक्षा का काम शुरू किया। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद गोपाल पुरा के माँगू मीणा ने उनसे कहा कि अगर काम करना है तो कल गैंती, फावड़ा लेकर आना, काम मैं बताऊंगा। रात को भाई साहब राजेन्द्र सिंह भीकमपुरा आये और माँगू मीणा की बात अपने साथियों को बताई। इस पर साथियों ने उनसे कहा कि हम मिट्टी खोदने नहीं आए हैं, हम पढ़े लिखे हैं, दूसरे काम कर सकते हैं। अगली सुबह उनके अन्य साथी

अपना बोरी-बिस्तर बाँध कर जयपुर वापिस चले गये और रह गया अकेला राजेन्द्र सिंह, जो पहुंच गया माँगू पटेल के पास गोपाल पुरा गांव में गैंती-फावड़ा लेकर।

माँगू पटेल ने गाँव के पास चबूतरा वाली जोहड़ी पर जाकर बताया कि अन्दर से मिट्टी खोदकर पाल के ऊपर डालनी है और फिर जुट गये जोहड़ खोदने में राजेन्द्र सिंह। जब 10 दिन तक अकेले ही वह बराबर जोहड़ खोदते रहे, तो माँगू पटेल ने गाँव में मीटिंग की और बताया कि एक बाहर का आदमी आकर अपने गांव में जोहड़ खोदे और हम बैठे-बैठे देखते रहें, यह तो शर्म की बात है। अगर पैसा मिलता है तो ठीक, और नहीं मिलता है तो भी हम काम करेंगे, जिससे हमारा जोहड़ तो बन ही जाएगा। अगले दिन से जोहड़ के काम में प्रत्येक परिवार के लोग जुट गये। दिन में भाई साहब, गोपालपुरा के लोगों के साथ जोहड़ खोदते और रात को उनके साथ बात करते व अपने मित्रों व अनुदान देने वाली संस्थाओं को अपने काम के बारे में लिखते भी। लोग भगवान भरोसे जोहड़ खोदने के काम में जुट रहे थे। कहते हैं जब कोई भी व्यक्ति बिना फल की आशा किए कर्म करता है, तो भगवान भी ऐसे भक्त की पुकार जल्दी ही सुनते हैं। उनको उसका फल भी जल्दी मिला। भाई साहब के लेख पढ़कर 'कासा' नाम की संस्था ने 400 क्विंटल गेहूं गोपालपुरा भेजा।

उस गेहूं का वितरण लोगों के बीच चौकड़ियों के हिसाब से हुआ। फिर तो लोग दुगुने उत्साह से काम में जुट गये। मेवालों के बाँध का काम शुरू हुआ। वहां सीली बावड़ी के लोग भी काम करने आने लगे। इस प्रकार गोपालपुरा में एक के बाद एक काम शुरू होता चला गया। बरसात के पहले मानसून में ही जोहड़ भरने से सूखे कुओं में पानी आना शुरू हो गया। बाँधों का असर अगले वर्ष ही दिखना शुरू हो गया और सितम्बर-अक्टूबर में तो अधिकतर कुएं आधे से भी ज्यादा भर गये। इससे लोगों में एक नया कौतूहल जाग उठा।

अंगारी का राम निवास मीणा गोपालपुरा में अपनी रिश्तेदारी में आया हुआ था। रात को उसने लोगों से जोहड़ में पानी भरने के कारण कुओं में पानी हो जाने की बात सुनी तो जिज्ञासावश पूरी जानकारी ली। सुबह होते ही वह पहुंच गया भीकमपुरा में राजेन्द्र सिंह जी के पास। राजेन्द्र सिंह जी से उसने अपने गांव की राम कहानी बतायी और कहा कि हमारा गांव सरसा नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित है। इसलिए वहां की हालत और भी बदतर है। भाई साहब ने राम निवास की दु:ख भरी कहानी सुनते ही कहा कि आप कल से ही काम शुरू कर दें।

रामनिवास को मुंह मांगी मुराद मिल गई। अंधे को क्या चाहिए, दो आंख। शाम को अंगारी में आकर रामनिवास ने गांव वालों को इकट्ठा किया और गोपालपुरा में हुए काम की कहानी से लेकर भीकमपुरा में भाई साहब से हुई पूरी बात कह सुनाई। इस पर गांव वालों द्वारा एकजुट होकर सुबह से ही जोहड़ में मिट्टी खोदने का काम शुरू हो गया। नतीजन एक बाँध बनने से गांव के 7 कुओं में पानी हुआ। इन कुओं से लगभग 20 हैक्टेयर क्षेत्रफल वाली भूमि में तीन बार सिंचाई होने लगी तथा 50 हैक्टेयर भूमि का कटाव रुका। गांव वालों की मानें तो पहले बरसात का पानी जैसे ही धरती पर गिरता था, तेजी से दौड़ता हुआ अपने साथ मिट्टी को बहाकर जैतपुर बाँध को सिल्ट करता था। इससे अंगारी की जमीन बंजर व अनुपजाऊ हो गई थी। बाँध बन जाने पर उपजाऊ जमीन की मिट्टी कटकर बाहर जाने से रुक गई।

वर्ष 1987 तक सूरतगढ़ गांव की पहचान भी सूखाग्रस्त क्षेत्र के रूप में रही। सूखे ने गांववालों को वर्षों से बेचैन कर रखा था। बरसात के दिनों में वर्षा होती, लेकिन समुचित जल-प्रबंध नहीं होने के कारण पानी सूरतगढ़ में नहीं रुकता था। वर्षा होने के बावजूद गांव सूखा का सूखा रह जाता था। कुओं का जलस्तर बढ़ने की तो कोई बात ही नहीं थी। आषाढ़ के पहले दिन से आखिरी दिन तक वर्षा होने के बावजूद सूरतगढ़ गांव सूखा रहने की पीड़ा झेलने के लिए विवश रहता।

सन् 1985-86 में जब सूखे का विकराल रूप सामने आया, सूरतगढ़ में पानी व चारे की बहुत विकट समस्या खड़ी हो गई थी। पशुओं के सामने चारे के रूप में रोंझड़ा के पेड़ की छाल डालने तक की नौबत आ चुकी थी। पशु कुपोषण के शिकार होने लगे थे। गरीब आदमी दाने-दाने को मोहताज हो रहा था। दूसरे गांवों से चारा लाते-लाते भी लोग थक चुके थे। फिर दूसरे गांवों में इस बाबत उन्हें प्रतिरोध भी सहना पड़ता था, क्योंकि वहां भी पानी का समंदर नहीं बहता था। पानी का दुःख सभी जगह था, कहीं कम, कहीं ज्यादा। चारे के मूल्यों में इस कदर वृद्धि हो गई थी कि आदमी उसे खरीदने में सक्षम नहीं था। उसे खरीदना उसके बूते के बाहर हो गया था। स्थितियां पूरी तरह से लाचारी की सूचक थीं। चारों ओर घोर बदहाली ही बदहाली दिखाई देती थी। इस गांव में कीर जाति के लोग भी रहते हैं, जो चापूण्याँ की लकड़ियों से खूबसूरत टोकरियां बनाने का काम करते हैं। अकाल ने सूरतगढ़ के जंगलों-पहाड़ों से चापूण्याँ की लकड़ी खत्म कर दी थी और ये लोग दूसरे के जंगलों-पहाड़ों पर निर्भर रहने लगे थे। इन्हीं

नाजुक स्थितियों में तरुण भारत संघ का प्रवेश सूरतगढ़ में हुआ। संघ की पहल पर मार्च 1991 में सूरतगढ़ गांव में सरसा नदी की एक जलधारा, 'हजारीवाला नाला' पर एक बाँध बनाया गया। इसके परिणाम स्वरूप आज सूरतगढ़ में भी गोपालपुरा और अंगारी गांवों की तरह ही समृद्धि अपने पांव पसार चुकी है।

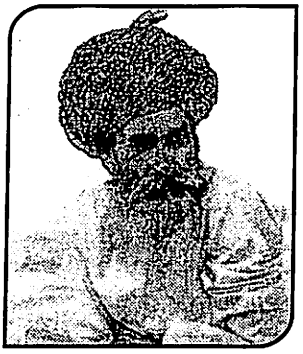

यद्यपि सूरतगढ़ गांव के श्री सुमेर सिंह जी तो वैचारिक रूप से प्रारम्भ से ही तरुण भारत संघ के साथ जुड़े हुए थे, लेकिन गोपालपुरा, कालालांका, बाछड़ी, अंगारी आदि गांवों के कामों को देखकर गांव के अन्य लोगों में भी पानी के कामों के प्रति जागरूकता बढ़ी। सबसे पहले धाना का गुवाड़ा की जोहड़ी का काम श्रमदान से पूरा हुआ। लेकिन यह एक छोटा काम था। बड़े काम के लिए 'हजारी वाला 'नाला' जहां कभी हजार मण अनाज पैदा होता था, पर एक बाँध के बनने की बात गांव की ग्राम सभा में तय हुई। लेकिन यह किसी को भी विश्वास नहीं था कि इतना बड़ा काम हम गांव वाले पूरा भी कर पायेंगे। कोई भी श्रमिक या मजदूर काम करने को तैयार नहीं था। ग्राम सभा के अध्यक्ष श्री सुमेर सिंह जी ने ग्राम सभा में भी और व्यक्तिगत रूप से भी उन्हें समझाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन गांव वालों का आत्मविश्वास जाग्रत नहीं हुआ। पर इन्हीं गांव वालों में एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने अपना आत्मविश्वास नहीं खोया था। गांव के उस व्यक्ति का नाम था, सूरजा मीणा।

सूरतगढ़ गांव के धानाका गुवाड़ा के सूरजा मीणा ने किसी भी संदेह की परवाह किये बगैर अकेले ही खुदाई का काम शुरू कर दिया। देखने वाले लोग उसको पागल

कहने लगे। कहते थे कि यह अकेला इतने बड़े काम को कैसे पूरा कर लेगा? पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसका हौसला देखकर दो-तीन दिन बाद उसके परिवार वालों की भी सहयोगात्मक रुचि बढ़ी। वे भी उसका साथ देने लग गये। इस प्रकार सूरतगढ़ के धाना का गुवाड़ा के लोग तो काम पर लग गये लेकिन गांव के अन्य श्रमिक वर्ग के लोगों में से कोई भी व्यक्ति काम पर नहीं आया। पर सूरजा मीणा व

उसके परिवार के लोग पूरे उत्साह से बाँध की खुदाई के काम में लगे रहे। वे कहते थे कि पैसा भी नहीं मिलेगा तो भी हम काम करेंगे, क्योंकि काम तो हमारा ही है ।

लेकिन काम बड़ा था, लोग कम थे, इसलिए संस्था के कार्यकर्ता गोपालसिंह ने अमनसिंह जी से राय करके दूसरे गांव के लोगों को काम पर लगा लिया। इसे देखकर गांव के लोगों में समझ बनी कि यह काम तो हमारे गांव का है, इसे तो हमें ही करना चाहिए। यदि यह काम दूसरे गांव के लोग करें तो यह हमारे लिए शर्म की बात है। हमारा पैसा दूसरे गांव में क्यों जाये ? इस प्रकार की यह समझ आ जाने के बाद तो गांव के सभी समाज के लोग काम पर आने लगे। उनमें रैगर, मीणा, कीर, धोबी, कुम्हार, गुर्जर, स्वामी व नाई आदि सभी समाज के लोगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। एक तरफ श्रमिक वर्ग के लोग श्रमदान करने में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर रुचि ले रहे थे, तो दूसरी तरफ समाज को जोड़ने वाले विचारवान् व बुद्धिजीवी लोग भी गांव के सभी परिवारों के लोगों को जोड़ने में और उनको सहयोग जुटाने में पूरी तरह से लगे हुए थे। आखिर उनकी मेहनत रंग लाई और गांव का सबसे बड़ा बाँध 'हजारी वाला बाँध' बन कर तैयार हो गया।

गांव के लोग अपने ही श्रम पर आश्चर्यचकित थे कि कैसे हमने इतना बड़ा काम पूरा कर लिया ? फिर तो यही बाँध नहीं बल्कि इस बाँध के दक्षिणी सिरे से लगता हुआ एक और बड़ा बाँध, जिसे कानूँ वाला नाले पर बनाने के कारण 'कानूँ वाला बाँध' नाम दिया गया, का काम भी सभी ग्रामवासियों ने मिलकर पूरा कर लिया। अब तो सभी का उत्साह बढ़ता जा रहा था। इसी उत्साह में इसी नदी पर नीचे गांव के पास रावण वाली नदी पर भी एक ऐनीकट बनाया गया। इसे 'रावण वाली नदी का ऐनीकट' नाम दिया गया क्योंकि यहां पर दशहरे के दिन रावण के पुतले का दहन होता है । इस बाँध (ऐनीकट) में पड़ोस के खेत मालिक भगवान सहाय गुर्जर के अकेले परिवार ने बराबर का सहयोग करके इस काम को पूरा किया। उधर दूसरे नाले पर रमशी कीर, जगदीश कीर व बाबू कीर ने भी अपने खेत पर 'भूरा बाँध' नाम से एक बड़ा बाँध (ऐनीकट) बनाया। यह ऐनीकट घरट से चूने को पीसकर बनाया गया। इसी नाले में ऊपर की ओर 'माद्याला बाँध' का काम, राजपूत व गुर्जर समुदाय के लोगों ने मिलकर पूरा किया और साथ ही इसी नाले पर ऊपर कबीरावाली जोहड़ी के दोनों तरफ के नालों को इसी

कबीरावाली जोहड़ी के साथ जोड़ कर पूरे गाँव ने मिलकर एक बाँध बनाया। पर इसे अब भी लोग 'कबीरावाली जोहड़ी' ही कहते हैं।

एक तीसरा नाला जो सूरतगढ़ गांव के पश्चिम से पूर्व को जाता है, पर भी गाद से भर चुके एक पुराने बाँध, जो 'लूल्याळा बाँध' के नाम से जाना जाता है, की भी ऊंचाई, चौड़ाई व लम्बाई बढ़ा कर विस्तार किया गया। उसमें अब काफी पानी रुकता है। इसमें घरट से पीसे हुए चूने से पक्की दीवार बनाई गई और सपोर्ट के लिए मिट्टी का काम भी किया गया। इस बाँध को 'बाई जी का बाँध' या 'बुआ जी का बाँध' के नाम से भी जाना जाता है। गांव के पूर्व में ये तीनों नाले एक जगह आकर मिल जाते हैं। इसके नीचे एक और बाँध मूलचन्द जी पटेल के खेतों में भी बनाया गया और इसी के एक किनारे पर वासुदेव जी भट्ट के खेत पर भी बाँध का काम किया गया। इसके अलावा गांव के दक्षिण पश्चिम के जंगल व कृषि क्षेत्र जिसे 'ताळवा' के नाम से जाना जाता है, में भी बहुत सारे छोटे-बड़े बाँधों और मेढ़बंदियों का काम हुआ। साथ ही कानूँ वाला नाले के ऊपर आठ स्टोन बैरियर के काम भी हुए। इस प्रकार 1991 से 1995 तक गांव में कुल 54 जल संरचनाओं का निर्माण हुआ। उसका परिणाम यह हुआ कि पूर्व में बारहमास बहते रहने वाले कुण्डों के लिए प्रसिद्ध यह गाँव, जो कि प्रारम्भिक कार्यों के दौरान जल का अभाव महसूस करने लगा था और कुण्डों का बहना भी बंद हो गया था, उक्त कामों के बाद वह पुनः सजल हो गया।

सूरतगढ़ के जल संरक्षण कार्य में शारीरिक श्रम में धाना का गुवाड़ा के सूरजा मीणा के साथ ही उनकी ही ढाणी के श्री मूलचन्द मीणा, कजोड़ मीणा, रब्बू मीणा तथा गांव के मूलचन्द रैगर, जीवण्या रैगर, भगवान सहाय रैगर, नाथूराम कुम्हार, मातादीन कुम्हार, भगवाना कुम्हार, गणेश कीर, बाबूलाल कीर, जगदीश महन्त, गणपत धोबी, बद्री नाई, नाथूराम मीणा, मन्नी मीणा व इनके परिवार के लोगों की सक्रिय भूमिका रही है। इनके अलावा भी सैकड़ों और ऐसे नाम हैं जिनकी श्रम के काम में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, लेकिन विस्तार भय से सबका नाम नहीं लिखा जा रहा है। संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ करने में तथा वैचारिक व बौद्धिक कार्यों में श्री सुमेर सिंहजी, केदार जी शर्मा, मिठ्ठन लाल जी पारीक, प्रहलाद जी पारीक, लालचन्द जी शर्मा, राजेश जी शर्मा, वासुदेव जी भट्ट, श्रीमती रजनी देवी भट्ट, जगदीश जी कीर, हनुमान जी मीणा, रामपालजी रैगर आदि लोगों की महती भूमिका रही है। इन्हीं सब के प्रयासों से सरसा नदी की यह एक धारा पुनर्जीवित हुई।

जल संरक्षण के अलावा इस गांव में जो सबसे महत्त्वपूर्ण काम हुआ है वह जंगल-संरक्षण का हुआ है। जंगल संरक्षण हेतु गांव में हर माह बड़ी ही सक्रियता से ग्राम सभा की बैठकें होना तथा तय किए गए नियमों का बड़ी ही सख्ती से पालन करना, यहां का एक अनूठा काम रहा है। गीली लकड़ी काटने पर पूर्णत: पाबन्दी लगाना व उसका पालन होना भी यहां की एक बड़ी विशेषता रही है। यहाँ वन सुरक्षा हेतु गार्ड भी गाँव वालों की पसंद से ही लगाये गए।

सूरतगढ़ में जंगल बचाने वाले गार्ड को पुरस्कृत करते पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र

इसके अलावा यहां पर संस्था के प्रारम्भिक काल में स्वास्थ्य कार्यक्रम भी सुचारु रूप से चलाया गया और शिशुपालना व बाल शिक्षण व प्रौढ़ शिक्षण का कार्य भी तारा कुमारी भट्ट ने बड़ी ही मेहनत, ईमानदारी व लगन से किया। उसे उनकी छोटी बहन सीमा कुमारी भट्ट ने उत्तरोत्तर आगे बढ़ाया। महिला संगठन व महिला समूह बनाने के कार्य श्रीमती रजनी भट्ट ने बड़ी ही मेहनत व लगन से किये हैं।

इस प्रकार सूरतगढ़ गांव में जल संरक्षण, जंगल संरक्षण, ग्राम संगठन, महिला-संगठन, महिला बचत-समूह, स्वास्थ्य व शिक्षा कार्यक्रम जो हुआ है, वह अपने आप में एक उदाहरण है। यहां के जल संचय के काम से सरसा नदी की एक उपधारा

पुनर्जीवित हुई और गांव में फिर से समृद्धि लौट आई। जिस प्रकार गांव के पुराने लोगों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि सदियों से बारह मास बहते रहने वाले कुण्डों के लिए मशहूर इस गांव में भी पानी की समस्या आ सकती है, उसी प्रकार पुनः पानी आ जाने से आज की युवा पीढ़ी को भी सहज ही विश्वास नहीं होता कि कुछ ही वर्षों पूर्व हमारे गांव में पानी की कमी भी थी। आज के हरे-भरे लहलहाते हुए खेतों को देखकर कोई नहीं कह सकता कि कभी सूरतगढ़ के लोग भी पानी के बिना लाचार थे। इस तरह की कायापलट की किसी ने कभी कोई कल्पना भी नहीं की थी। अब यह गांव वानिकी व खेती में भी अव्वल है। अब गांव के लोग तीन-तीन फसलें भी लेने लगे हैं और यहां की सब्जियां अब थानागाजी व अलवर तक की मण्डियों में भी जाने लगी हैं।

सूरतगढ़ के काम को देखकर क्यारा गांव में भी जोहड़ों का निर्माण कार्य शुरू हो गया। माना जाता है कि क्यारा गांव कभी मेवाल गोत्र के मीणाओं की राजधानी रहा था। यहां पर उस जमाने का बना तालाब टूट गया था। क्यारावासियों ने सबसे पहले क्यारा के उसी 'राजधानी वाले जोहड़' से पानी का कार्य शुरू किया। इसके बाद और दूसरे काम शुरू हुए। फिर तो किशोरी, रायपुरा, भाल, बीसूणी, बाछड़ी, कालालाँका, जैतपुर, सीलीबावड़ी व 27 बासों (ये अजबगढ़ के 27 गुवाड़ों के नाम से जाने जाते हैं) में भी एक को देखकर दूसरे गांव में, गांव वालों में अपने यहां जल संरक्षण कार्य कराने की एक होड़-सी लग गई। इन सब कामों को करने में मुख्य भूमिका यहां के स्थानीय समाज के कुछ अगुवा पुरुषों ने

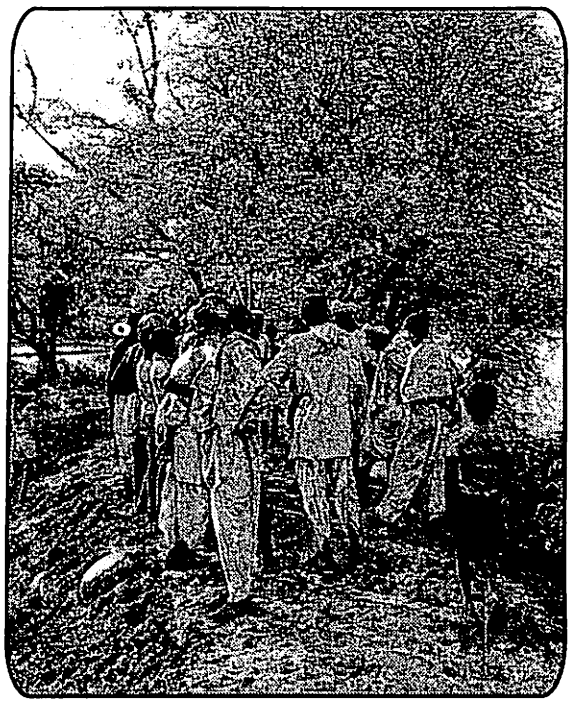

बीजा की ढाह में जल स्रोतों की रक्षा करने जाते ग्रामीण

निबाही। अपने गांव को उजड़ा-वीरान होते देख उनमें एक हूक-सी उठती थी, लेकिन वे बेबस व लाचार थे। भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी ने लोगों की आखों में बसी बेबसी को देखा और उनकी लाचारी की कहानी को समझा। उनको ढाढस बंधाया और कहा कि गांव में एका करो, श्रमदान करो और चलाओ जोहड़ का काम। इसका परिणाम यह हुआ कि जोहड़ बनाने व जल-जंगल के संरक्षण का अभियान चल पड़ा।

इस जल संरक्षण अभियान की भनक यहां के प्रशासन तक भी पहुंची। जल संचय का काम बिना सरकारी आदेश के कोई कैसे कर सकता है? इस पर प्रशासन भड़क उठा। उसे जानकारी मिली कि पहले गांव संगठित होकर श्रमदान करता है, फिर राजेन्द्र सिंह उनको सहयोग करता है। गांव संगठित होकर पानी का काम हमारे आदेश के बिना कैसे कर सकता है ? इसे आधार बनाकर सिंचाई विभाग ने फरवरी 1987 में गोपालपुरा-गोविन्दपुरा में अकाल मुक्ति के लिए बनाये गये बाँधों को तुड़वाने का नोटिस जारी कर दिया। इस प्रकार इन बाँधों को तुड़वाने में सरकार ने कोई भी कोर-कसर नहीं छोड़ी, लेकिन इस क्षेत्र के लोगों ने संगठित होकर यह निर्णय लिया कि हमारी जमीन पर गिरा वर्षा का जल हमारा है, जो भगवान् ने हमें दिया है। हम ही इसका सर्वहितकारी प्रबन्धन करेंगे। अंत में विभाग को लोगों की बात माननी पड़ी। पर, इससे लोगों की यह समझ बनी कि सरकार जनहितकारी कार्यों में सहयोग करती नहीं दिखती, बल्कि आज की सरकारी व्यवस्था समाज के कार्यों में बाधक ही है। देखने में तो वह कल्याणकारी दिखती है, जबकि उसके काम विनाशकारी और शोषणकारी हैं। इस व्यवस्था को बदलने की जरूरत है। इस लिहाज से भी सरसा का समाज स्वयं ही कुछ करने को प्रेरित हुआ।

भीकमपुरा गांव जो सरसा नदी के बीच में स्थित है, के लोगों ने भी छोटे-छोटे जोहड़ बनाने का कार्य शुरू किया। भीकमपुरा में तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने गड्ढे खोद-खोद कर नंगी भूमि पर वृक्षारोपण किया जिसके कारण आज वहां पूरी पहाड़ी हरियाली से पूर्ण दिखाई देती है; जबकि एक समय 1986 में यहां घास तक भी नहीं होती थी, पेड़ों की तो बात ही बेमानी है। तरुणों के श्रम से हरित हुए इस स्थान को 'तरुण आश्रम' नाम दिया गया और यहां पर ही संस्था का कार्यालय भी बनाया गया। यहां पर एक 'झालरा' भी बनाया गया तथा जल संरक्षण के अन्य काम भी किए गए।

सबसे बड़ी बात यह है कि भीकमपुरा के लोगों ने जंगल बचाने के लिए पुरानी परम्परा को नए तरीके से पुनः प्रतिष्ठित किया। यहां के लोग रक्षाबन्धन के दिन पेड़ों

तरुणाश्रम की पुलिया के पास का दृश्य
(वर्ष–1989 में)

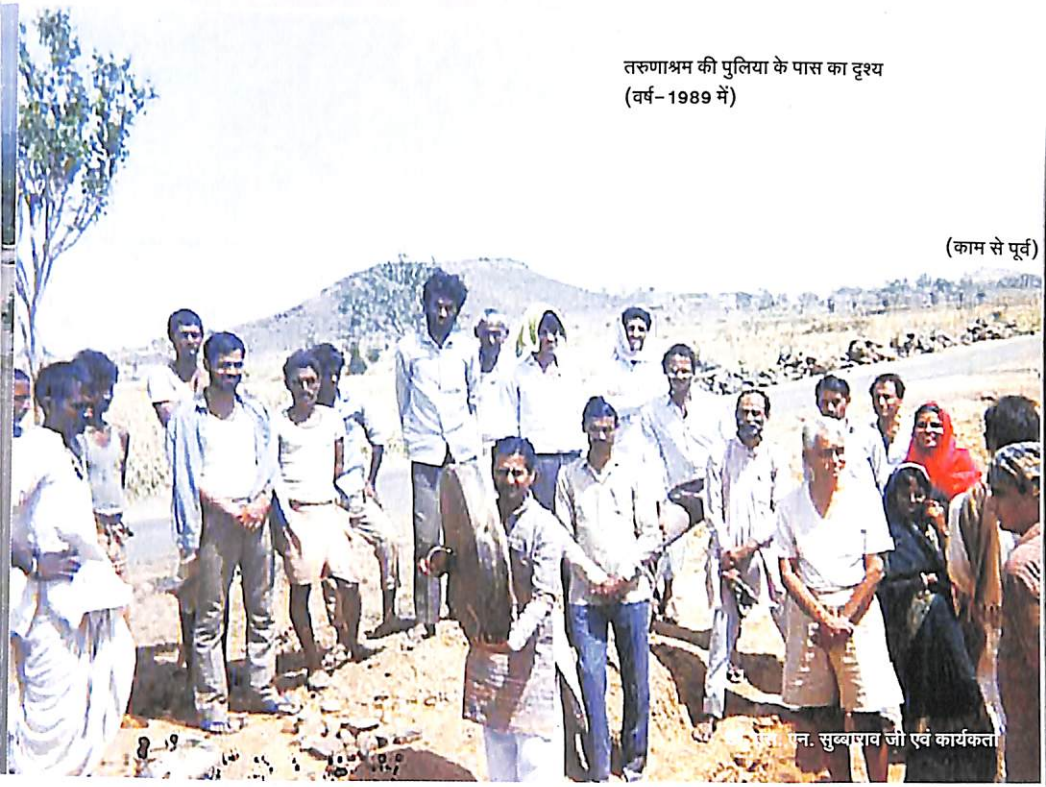

तरुणाश्रम की पुलिया के पास का दृश्य
(वर्ष–2012 में)

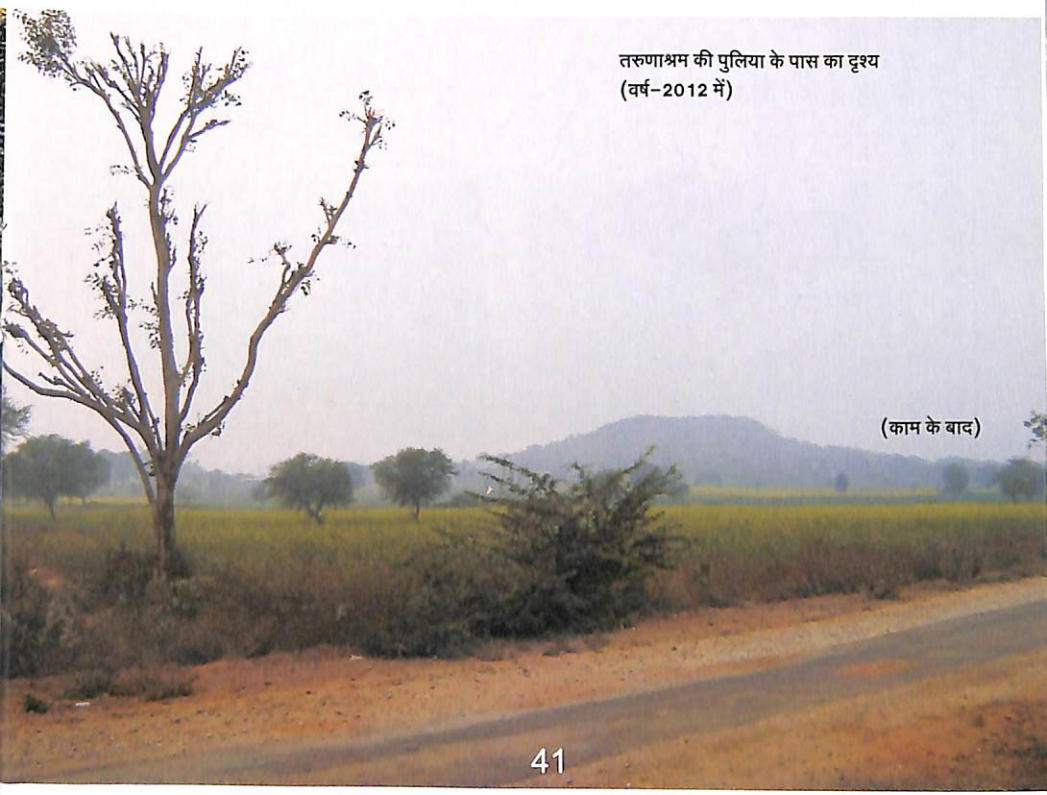

सरसा नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ

(वर्ष 1985 से मार्च 2013 तक)

(तहसील थानागाजी, जिला–अलवर (राजस्थान)

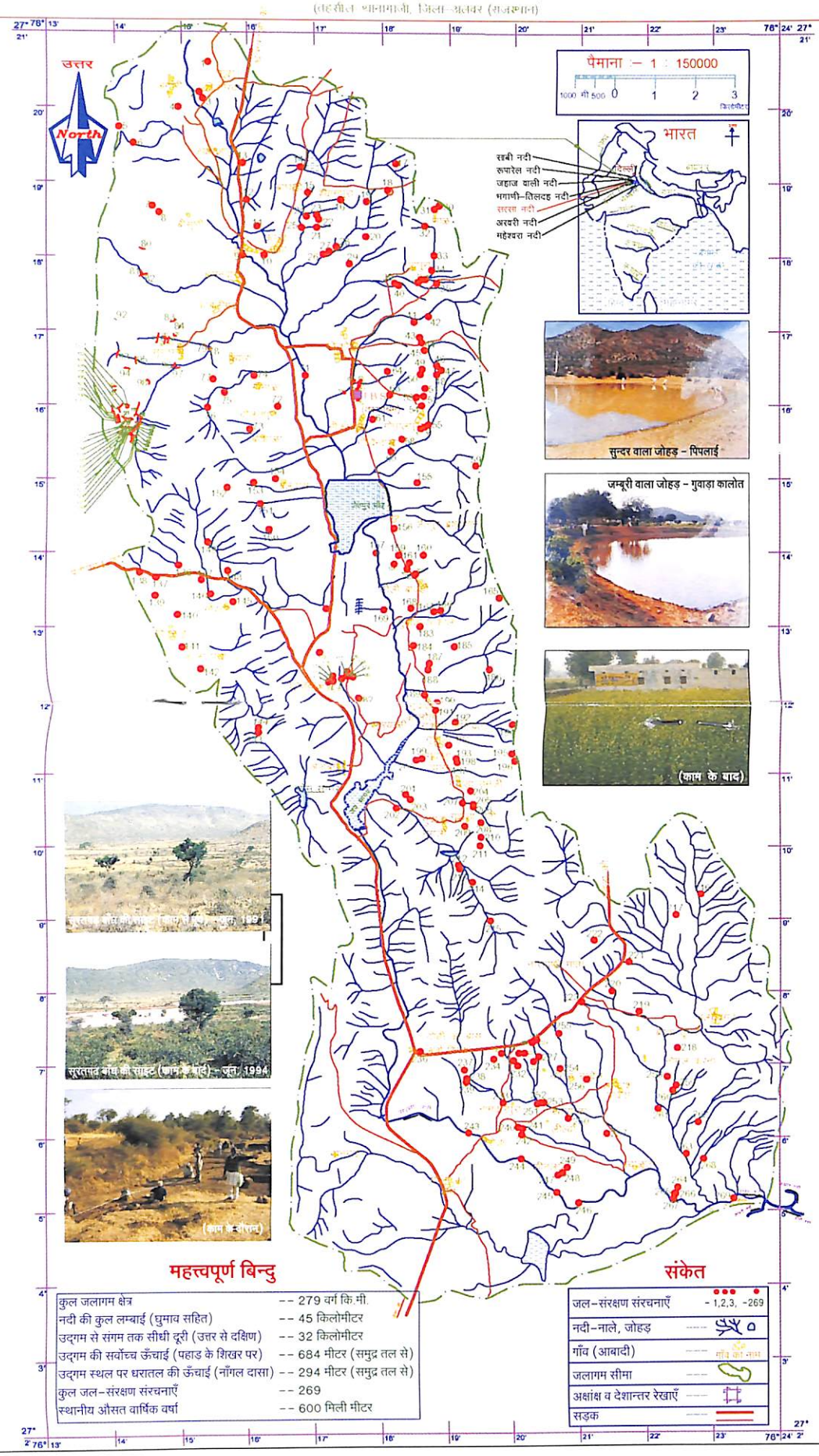

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

कुल जलागम क्षेत्र	-- 279 वर्ग कि.मी.
नदी की कुल लम्बाई (घुमाव सहित)	-- 45 किलोमीटर
उद्गम से संगम तक सीधी दूरी (उत्तर से दक्षिण)	-- 32 किलोमीटर
उद्गम की सर्वोच्च ऊँचाई (पहाड़ के शिखर पर)	-- 684 मीटर (समुद्र तल से)
उद्गम स्थल पर धरातल की ऊँचाई (नाँगल दासा)	-- 294 मीटर (समुद्र तल से)
कुल जल–संरक्षण संरचनाएँ	-- 269
स्थानीय औसत वार्षिक वर्षा	-- 600 मिली मीटर

संकेत

जल–संरक्षण संरचनाएँ	- 1,2,3, -269
नदी–नाले, जोहड़	
गाँव (आबादी)	
जलागम सीमा	
अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ	
सड़क	

नाई नळा का एनीकट (तरुणाश्रम में)

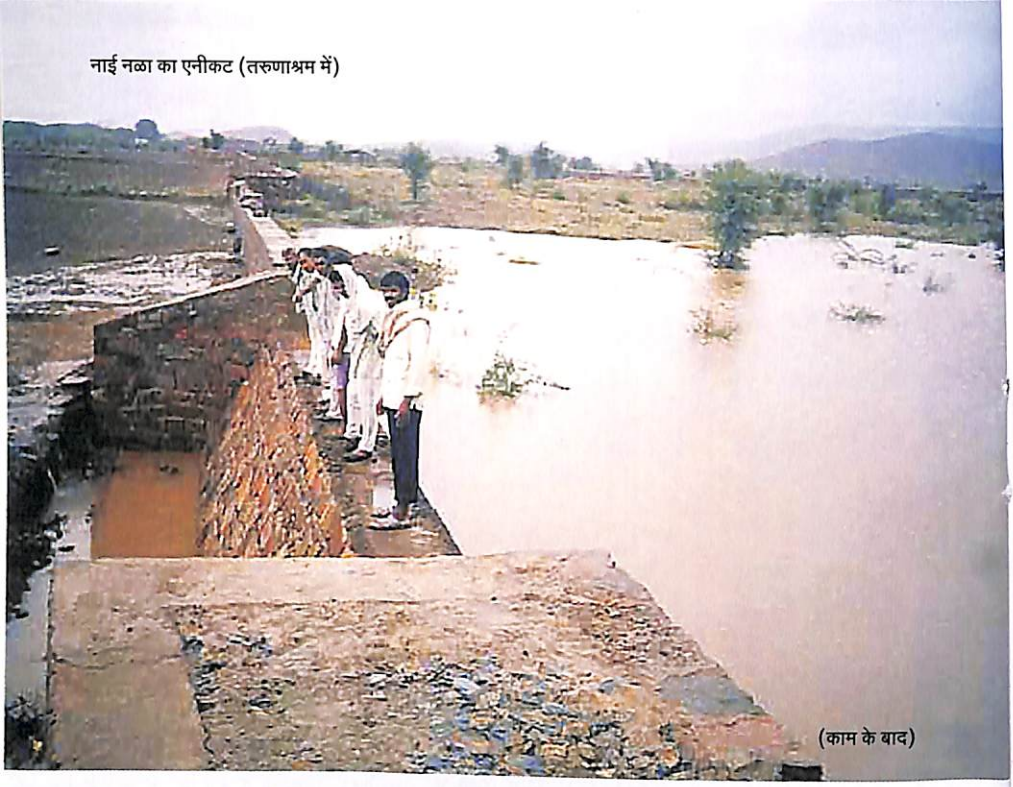

(काम के बाद)

तरुण-ताल (झालरा)

(काम के बाद)

को राखी बाँधते हैं और पेड़ लगाओ–पेड़ बचाओ पद यात्रा भी करते हैं। भीकमपुरा के पास बलुवास व दौलतपुरा गांव के लोगों ने भी तरुण भारत संघ की मदद से अपने–अपने गांवों में जोहड़ बनाये। उनमें पूरे साल पानी रहने लगा है। इससे कुओं का जलस्तर भी बढ़ा है। पिपलाई, कालापारा व अजबगढ़ के गुवाड़ों ने भी अपने–अपने गांव के पास जोहड़ बना कर पानी रोकने का काम किया। यहां के लोगों ने न केवल पानी रोकने हेतु तालाब बनाए, बल्कि जंगल बचाने के लिए भी आन्दोलन चलाए।

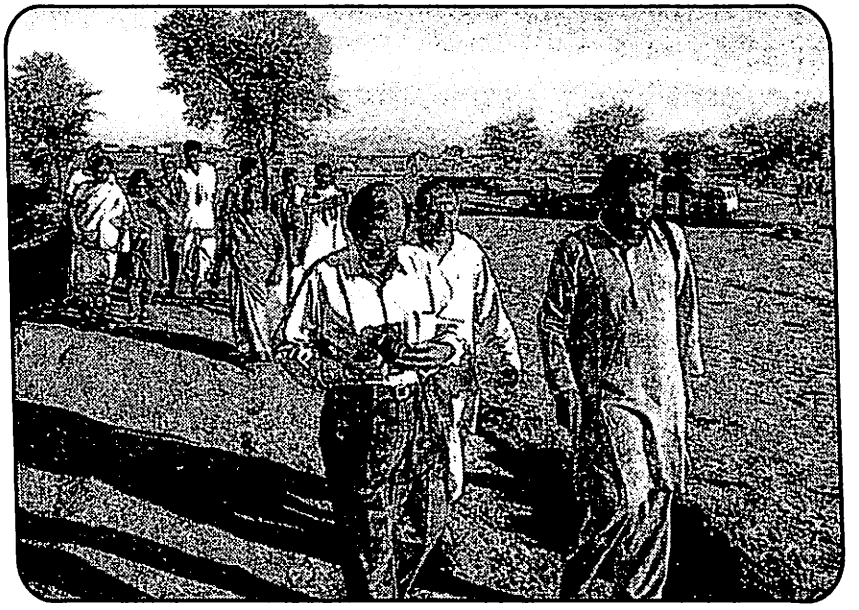

पे७ड लगाओ यात्रा में पर्यावरणविद् अनिल अग्रवाल, राजेन्द्र सिंह व अन्य साथी

सरिस्का का देश–विदेश में महत्त्व होने की वजह से इसमें गैर वानिकी गतिविधियों के चलने का भी हमेशा अंदेशा बना रहा है। पर्यटन की दृष्टि से सैलानियों की दिनों–दिन बढ़ती भीड़भाड़ को देखकर देश के नामी उद्योगपति पोद्दार ग्रुप ने अजबगढ़ के जयसागर बाँध के नीचे 'झिलमिल दह' नामक एक धार्मिक आस्था के तीर्थ स्थान पर, जहां लोग अमावस्या व पूर्णिमा को मछलियों को आटा डालते थे, वहां सरकार से मिलकर एक पांच सितारा होटल बनाने की योजना पर कार्य शुरू किया। इसका गांव वालों ने न सिर्फ विरोध किया बल्कि आन्दोलन के रूप में श्री गोविन्द राम मीणा के नेतृत्व में लम्बा सत्याग्रह भी चलाया। अजबगढ़ में ग्रामीणों ने होटल के सामने अखण्ड रामायण का पाठ कर होटल की प्रस्तावित योजना को रद्द करने का दबाव भी

बनाया। लेकिन अपने उच्च रसूकों के बूते पर होटल मालिक जन भावनाओं के विपरीत होटल का निर्माण कार्य करते रहे। इसी बीच होटल निर्माण के खिलाफ तरुण भारत संघ ने गोविन्द राम मीणा के नेतृत्व में राजस्थान उच्च न्यायालय में याचिका भी दायर की। नतीजन दो साल तक होटल निर्माण रुका रहा। लेकिन ऊंची पहुंच और दौलत का असर यह हुआ कि फिर से होटल निर्माण शुरू हो गया। अजबगढ़ बाँध के नीचे इस होटल के निर्माण के विरोध के पीछे ग्रामीणों का मकसद एक तरफ जहां बाँध के पानी के दुरुपयोग को रोकना था, वहीं दूसरी तरफ इलाके को मौज मस्ती का अड्डा बनने देने से रोकने का भी था। क्योंकि यहां के समाज की 'झिलमिल दह' से आस्था जुड़ी हुई थी। इतना ही नहीं 'झिलमिल दह' जैसे पवित्र तीर्थ स्थान का नाम बदल कर 'अमन बाग' कर दिया गया। इसका सभी गांव वालों को बेहद दु:ख है।

जयसागर के नीचे गोला का बास, धीरोड़ा, कीटला, नांगल-चन्देल, लांकाश, बलदेवगढ़, श्यालूता, नांगलदासा आदि गांवों के लोगों ने ऊपर के कामों को देखकर लील्याँ गांव के रामस्वरूप भाई के नेतृत्व में तरुण भारत संघ से सहयोग लेकर अपने-अपने गांवों में जल संरक्षण का काम शुरू किया। रामस्वरूप गुर्जर अपने क्षेत्र को उजड़ते, उसे जंगल बनते व गहराते जल संकट को देखकर दु:खी थे। गाँव वालों ने देखा कि ऊपर के इलाके में तो पानी है और नीचे पानी का संकट है, जबकि पानी नीचे डाउन स्ट्रीम में ज्यादा होना चाहिए। इस अंतर को समझने के लिए वह अपने क्षेत्र के 15 लोगों को लेकर भीकमपुरा गए। वहां की बैठक में उन्होंने सुना कि जोहड़-बाँधों के बनने से कुओं में पानी आ गया है, उन्हें विश्वास नहीं हुआ। इसका विश्वास उन्हें गोपालपुरा जाकर और कुंओं में पानी का असर देखकर हुआ। वैसे यह बात संस्था के कार्यकर्ता जगदीश गुर्जर ने भी उन्हें पहले भी कई बार बताई थी, लेकिन देखे बिना रामस्वरूप को जगदीश गुर्जर की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। यहां के कामों को देखकर रामस्वरूप व उसके साथ आई टीम को पूरी बात समझ में आ गई और जब भाई साहब से उन्होंने बातचीत की तो उनसे भाई साहब ने भी कहा कि अगर आप संस्था के नियमानुसार काम करने को तैयार हैं तो आज ही जगदीश गुर्जर व श्रवण जी को साथ ले जाकर काम शुरू कर दो। फिर क्या था, लग गये रामस्वरूप जी और सब, जगदीश गुर्जर के मार्ग-दर्शन में पूरे उत्साह व उमंग के साथ, पानी सहेजने के काम में। इन लोगों ने धीरोड़ा, लील्याँ, कीटला, नांगल चन्देल, श्यालूता व बलदेवगढ़ के साथ पूरे क्षेत्र में जल संरचनाओं की एक शृंखला खड़ी कर दी।

श्यालूता गांव के लोगों ने गांव के पास नदी पर ऐनिकट बनाया जिसके ऊपर से सरसा नदी बहती है। आज इस ऐनिकट के नीचे के कुओं पर चार-चार इंजन चलते हैं; तब भी यहां पानी की कोई कमी नहीं पड़ती। वैसे ही धीरोड़ा, लील्याँ, कीटला व नांगलदासा में भी सरसा की मुख्य धारा पर बनाऐ गये ऐनिकटों से जहां केवल वर्षा पर आधारित खेती होती थी, आज गांव के लोग रबी की फसल में सरसों व गेंहूँ की फसल भी लेने लगे हैं। इससे पूरे इलाके में समृद्धि लौट आई है।

□□□

जोहड़ निर्माण में श्रमदान करते ग्रामीण

कायापलट की कहानी – लोगों की जुबानी

आइए, अब हम सरसा नदी से इस इलाके में गाँवों की होने वाली कायापलट पर नजर डालें। सबसे पहले सूरतगढ़ को लें। अक्सर ऐसा होता है कि नदियों की चर्चा फसल और प्यास तक ही विस्तार पाकर रह जाती है। लेकिन यह तथ्य है कि नदी–पानी के न होने से कई दूसरी तरह की अराजकताएं भी सामने आने लगती हैं। लोगों की सांस्कृतिक समझ में घुन लगने लगता है और सामलात देह की व्यवस्था बिखरने लगती है। अकाल के दौर में सूरतगढ़ में कुछ लोगों ने शराब बनाना शुरू कर दिया था। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह और मृत्युभोज का प्रचलन काफी बढ़ा हुआ था। तरुण भारत संघ की पहल पर इन कुप्रथाओं के खिलाफ मुहिम छेड़ी गई। साथ ही आरंभ हुआ पानी सहेजने के लिए ग्रामीणों का सामलाती प्रयास।

आइए, यहां की समृद्धि की कहानी सुनते हैं यहां के लोगों की जुबानी। सबसे पहले रजनी भट्टअपना अनुभव सुनाती हैं। सूरतगढ़ में जब 1962 में वह इस गाँव में विवाहित होकर आईं थी, तब पानी की कमी नहीं थी; पर अस्सी के दशक में अकाल का दामन चारों ओर फैल गया था। वह कहती हैं मेरे घर के सामने चार कुएं हैं। सभी सूख गये थे। गाँव में जौ, चना और सरसों की फसल होती थी। श्रमिक महिलाएं जंगल से सूखी लकड़ियां लाकर बेचती थीं। तरुण भारत संघ की मदद से जब हमने अपने यहां सात–आठ बंधे–जोहड़ बनाये, तो पानी का अभाव नहीं रहा। पूरा का पूरा जीवन ही बदल गया। गाँव में अब गेहूं जैसी फसल होने लग गई है। ऊसर जमीनें उपजाऊ जमीन में बदल गई हैं। इस तरह सिवायचक में पड़ने वाली भूमि सामलात देह के दायरे में आ रही है। आज लगभग सभी परिवारों के पास अपना पैदा किया हुआ अन्न और अपने मवेशियों का दूध है। जो पलायन पानी के अभाव में शुरू हुआ था, वह लगभग खत्म हो गया है। वे आज अपने गाँव में कृषि और पशुपालन जैसे कार्यों में जमकर लगे हुए हैं। रजनी देवी कहती हैं कि आज खुशहाली हमारे सामने खड़ी है।

उमराव लाल कीर सूरतगढ़ गाँव के पढ़े–लिखे युवक हैं। कहते हैं मेरे मन में काफी दिनों से इच्छा थी कि काश ! मेरे गाँव में भी बाँध होता। 1990 में जब तरुण भारत संघ की मदद से हमने बाँध बनाया, तो बहुत खुशी हुई। वरना हमने तो तय कर लिया था कि शहर जाकर कोई रोजगार करेंगे; क्योंकि उस समय पानी रोकने की कोई सूरत ही नजर नहीं आती थी।

जगदीश कीर ने अपने खेतों में पानी रोकने के लिए तरुण भारत संघ की मदद से ऐनीकट बनाया। वह आज सूरतगढ़ के समृद्ध किसानों में से एक हैं। कहते हैं– "ऐनीकट नै बणबा सूँ खेताँ में खाद की माटी आकर जमी। जमताँ–जमताँ सारो नाळो माटी सूँ भरगो। जींसू अब ईं नाळा में चणा, सरस्यूँ की खेती करबा लग्गो। ईं सूँ भी ज्यादा फायदो ईं कै तळावाळा कुआ नै होगो, जींमे सैकड़ूयूँ कुआ तो चौमासा में फुल ही भर जावै छै। चाहे ऊपर बैठ्या–बैठ्या ही कुर्ला–फाँकैळा करो और पाणी पी ल्यो।"

सूरतगढ़ का हजारी वाला बाँध

जगदीश महंत कहते हैं "मैं खुद बाँध बणबा सूँ पहल्याँ कुआ सूखबा सूँ जयपुर में कमाबा चल्यो गयो छो। जयपुर में मूंगफली और कुल्फी को धंधो करबा लग्गो छो। पर आज ईं कुआ में पाणी की कोई कमी नहीं छै। ऊँ टाइम में दाणा खाबा न भी कोना व्है छा, पर आज ईं धरती में ही 90–95 मण गेहूँ पैदा करूँ छूँ। पाणी खूब होबा सूँ कुआ माळै इंजन लगवा लियो। अब इण्डें ही राम जी की मौज़ हो गई। अब जयपुर जाबो छोड़ दियो और अपणा खेताँ में ही खेती करूँ छूँ, गाय और भैंस राखूँ छूँ। दूध खूब होबा लागगो"।

बीसूणी गाँव के रामेश्वर मीणा का कहना है कि पहले हमारे गाँव में बरसात में जब भी पानी बरसा, वह बहकर नदी नालों द्वारा नीचे चला जाता था। 1995–96 से

हमारा सम्पर्क तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं से हुआ और हमने अपने गाँव में संस्था के सहयोग से जोहड़, बाँध बनाकर पानी को रोका। इससे यहां के कुओं में पानी बढ़ा, हमारी खेती की प्रतिबीघा की दर से पैदावार बढ़ी और जमीन बढ़ी सो अलग। यहां के कैलास मीणा कहते हैं कि हमारे गाँव में पानी का काम होने से अब हम तीन-तीन फसलें लेने लगे हैं। इससे हमारा भाग्य ही बदल गया है।

गोकुल जी मास्टर की मानें तो उनके गाँव बीसूणी में तरुण भारत संघ के सहयोग से जल, जंगल संरक्षण कार्य के साथ ही शिक्षा का कार्य भी शुरू हुआ। वहीं के रघुनाथ ने बताया कि हमने तरुण भारत संघ के सहयोग से स्कूल के भवन का निर्माण किया है। पहले हमारे बालक पांच किलोमीटर दूर डेरा-बामनवास में पढ़ने जाते थे। छोटे-बच्चे इतनी दूर जाने से घबराते थे। अब हमारे गाँव में संस्था के सहयोग से स्कूल बन जाने से हमारे बालक ही नहीं बल्कि सभी बालिकाएं भी स्कूल जाने लगी हैं। वहीं के बरदू मीणा कहते हैं कि यहां गाँव में पानी होने से शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है। अब तीन फसलें लेने से गाँव में समृद्धि लौट आई है।

रायपुरा (भाल) गाँव के सज्जन सिंह कहा करते थे कि मेरा गाँव बिल्कुल पहाड़ की जड़ों में स्थित होने के कारण यहां पानी तेज गति से दौड़ता हुआ, खेतों में मिट्टी को काटता हुआ बह जाता था। वर्षा के तुरन्त बाद एक बूंद भी पानी नहीं ठहरता था। इस गाँव में एक ओर बड़ा पहाड़ और एक ओर छोटा पहाड़ है। दोनों के बीच में गाँव स्थित है। सारी जमीन स्लोप (ढालू) होने के कारण मिट्टी कट जाने से खेतों में छोटे-मोटे पत्थर दिखने लगे थे। रबी की फसल के लिए कुओं में पानी नहीं था। बरसाती फसल में बाजरा, ज्वार व मक्का लेते थे। अगर वर्षा बीच में नहीं हुई तो फसल सूख जाती थी। लोग ललचाई आंखों से बादलों को निहारते रहते थे कि इन्द्र भगवान् बूंद छोड़ दें तो दो महीने रोटी-चारा का इंतजाम हो जाये।

रायपुरा भाल के भोमाराम गुर्जर, बाबू सिंह व रामधन कहते हैं कि जब हमारा सम्पर्क तरुण भारत संघ से हुआ और हमारे दोनों गाँवों में जल, जंगल संरक्षण हेतु संगठन बना, उसके बाद तो लोग जुट गये जल, जंगल संरक्षण के कामों में। फिर एक के पीछे एक जोहड़, एनिकट बनने से हमारा ज्यादातर

पानी जो बह जाता था, रुक गया और नतीजा यह हुआ कि आज हमारा गाँव खुशहाल है।

भाल वाले भैंरू सहाय गुर्जर कहते हैं कि हमारे गाँव में पानी रुकने से ही खेती शुरू हुई। पहले यहां स्कूल भी नहीं था। तरुण भारत संघ के सहयोग से ही स्कूल चालू हुआ था। आज गाँव में सरकारी स्कूल है और पानी की वजह से फसल अच्छी होने से गाँव में फिर से रौनक लौट आई है। ब्रज मोहन गुर्जर जो पहले अपने ही गाँव में संस्था की तरफ से स्कूल चलाते थे, आज अपने गाँव में हुए पानी के काम से बहुत खुश हैं।

किशोरी के सरिया बोहरा की मानें तो बोहरा वाला एनिकट बनाने के बाद से नदी का बहना शुरू हुआ, जिससे नदी के किनारे के करीब 30 कुओं का जलस्तर बढ़ा है। किशोरी के कांकरवालों ने मिलकर जो बाँध बनाया उससे करीब 50 बीघा खेती होने लगी है। इस जमीन में पूरे रायपुरा भाल का पानी आकर पूरी मिट्टी को बहा ले जाता

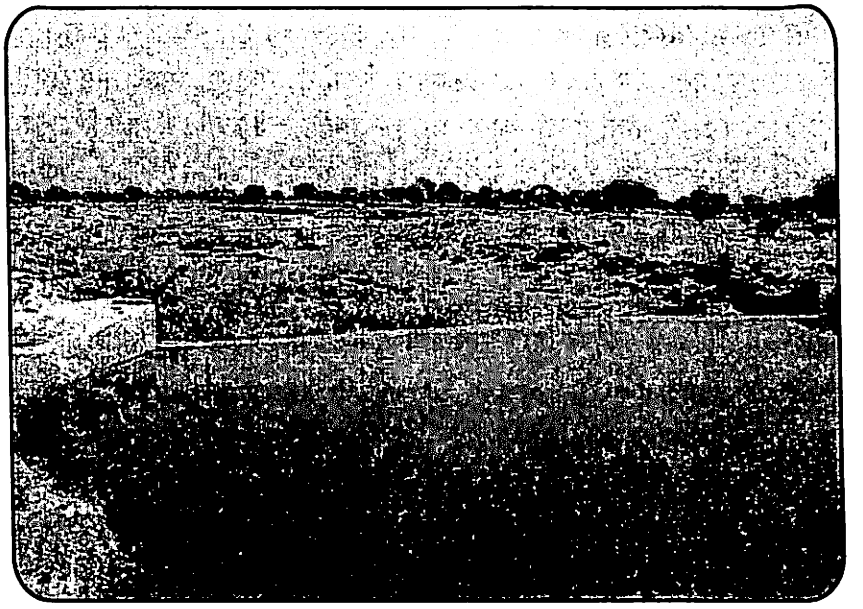

किशोरी का बोहरा वाला एनिकट

था। इसके कारण यहां बहुत गहरे-गहरे नाले हो गये थे। जबसे यह बाँध बना है, यहां की जमीन में पानी रुकता है व यहां के नीचे राड़ी व भीकमपुरा के कुओं के जल स्तर में भी बहुत इजाफा हुआ है। यहां रबी में गेहूं की फसल लेते हैं जिसमें न तो किसी प्रकार का खाद डालना पड़ता है एवं मात्र दो पानी देने पर ही गेहूं की फसल तैयार हो जाती है।

भीकमपुरा गाँव की कस्तूरी खटीक कहती हैं कि जब राजेन्द्र सिंह भाई साहब हमारे गाँव में आए, तब सब लोग भाई साहब व इनके चारों साथियों से बात करने तक से कतराते थे। धीरे-धीरे लोगों की झिझक दूर हुई। लोगों का विश्वास कायम हुआ। शुरू-शुरू में मैं रामटेक मन्दिर में मीटिंग में गई। वहां और भी महिलाएं थीं। वहां भाई साहब ने बताया कि घर में सास बहू को बेटी का दर्जा दे और बहू सास को मां का दर्जा दे तो घर-परिवार में कलह स्वतः ही दूर हो जाती है। कस्तूरी कहती है कि भाई साहब की यह बात मेरे मन में बैठ गई। इसके बाद मैं जहां भी मीटिंग होती, उसमें जरूर जाती। इस पर कई बार मेरे पति ने कहा कि उसे मीटिंगों में उसका आना-जाना अच्छा नहीं लगता। वह मुझे डांटता रहता था। इस डांट-फटकार का पता जब भाई साहब को लगा तो उन्होंने मेरे पति हजारी को बुलाकर, बद्री प्रसाद गुप्ता के सामने पूरी बात समझाते हुए कहा कि आप कस्तूरी को सामाजिक कार्य करने पर नहीं डांटो। यहां सब लोग एक ही परिवार की तरह रहते हैं। भाई साहब की बात-चीत से हजारी को विश्वास हो गया और फिर तो मैं भीकमपुरा, किशोरी, रायपुरा, भाल, गोपालपुरा, गोविन्दपुरा आदि गाँवों में जा-जाकर महिला समूह बनाने लगी। मैं पढ़ी लिखी तो नहीं हूँ, केवल हस्ताक्षर करना ही जानती हूँ। इसलिए महिला समूह में लिखाई-पढ़ाई का काम करने हेतु गीता देवी शर्मा को लगाया।

इसके बाद कस्तूरी देवी ने दुगुने उत्साह से महिला समूह बनाए। इन महिला समूहों को रोजगार से जोड़ने की खातिर कस्तूरी देवी व गीता शर्मा जोधपुर भी गयीं। वहां पर त्यागी जी व शशि बहन के साथ रहकर कढ़ाई, बुनाई, रंगाई, छपाई, अचार, मुरब्बा बनाने का प्रशिक्षण लिया और यहां के महिला समूहों को रोजगार से जोड़ने का कार्य किया। इसके साथ ही महिला समूहों ने संस्था के साथ

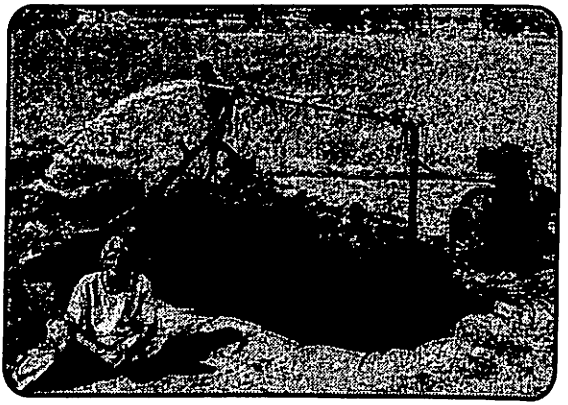

कुओं में पानी आते ही चलने लगे पम्प

मिलकर जंगल एवं जल संरक्षण का काम करके यहां की धरती का चेहरा बदलने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है।

बाछड़ी के हनुमान मेवाल की मानें तो यह बदलाव की हवा बहाने का श्रेय तो राजेन्द्र सिंह भाई साहब को ही जाता है। यदि वह इस इलाके में नहीं आते तो आज जो यहां की तकदीर बदली है, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। तरुण भारत संघ के सहयोग से इलाके में बने जोहड़-जोहड़ी और बाँधों ने सरसा को तो पुनर्जीवित किया ही है, इलाके के लोगों के बुझे-सूखे चेहरों पर लाली और उनके जीवन में खुशहाली लाकर पुण्य का काम भी किया है।

भैंरू सहाय सैनी जैतपुर वाले वैद्य के नाम से मशहूर थे, उन्होंने अपने गाँव में एक जोहड़ जिसे मालियों का जोहड़ कहते हैं व एक ऐनिकट खुद के खेत में बनाया। इससे यहां के कई कुओं में पानी का स्तर बढ़ा है। इससे नीचे के कुओं में भी पानी बढ़ा है। इस बाँध के बन जाने से यहां का जंगल भी कटने से बचा है। देखा जाये तो आज इस बाँध के पास में सैकड़ों पेड़ बबूल के खड़े हैं। आज भले ही भैंरू सहाय वैद्य जी इस संसार में नहीं हैं, लेकिन उनका बनाया गया बाँध और यहां खड़े पेड़ उनकी यादों को ताजा करते हैं।

राम अवतार सैनी तो यहां तक कहता है कि मेरे पिताजी ने जो बाँध तरुण भारत संघ के सहयोग से बनाया है, उसी के बलबूते हमारे परिवार का भरण-पोषण हो पाता है। जहां तक भैंरू सहाय वैद्य जी की बात है, उन्होंने तरुण भारत संघ के साथ मिलकर कार्य भी किया। उन्होंने हिम्मतनगर (गुजरात) से लेकर दिल्ली तक 'अरावली चेतना पदयात्रा' की। इस पदयात्रा में वैद्यजी ने तीन गीत तैयार किए थे। इन गीतों के माध्यम से उन्होंने लोगों का उत्साह और जोश तो बढ़ाया ही, उनमें वृक्ष, जल संरक्षण के प्रति चेतना भी पैदा की। इन गीतों के बोल हैं, "करेंगे राष्ट्र का निर्माण युवा सब ध्यान लगायेंगे।" "वह बात पुरानी याद करो, जो सदियों से चलती आई है।" "उठ जाग बावले जाग अवसर आया है।"

गोविन्दपुरा के सेडूराम मीणा कहते हैं कि गोविन्दपुरा में तरुण भारत संघ द्वारा शुरू किया गया पानी का काम बड़ा काम था। यह एक साल में पूरा नहीं हो पाया, दूसरे साल में हुआ। प्रभु मीणा यह कहता है कि इस बाँध के बन जाने से हमारे गाँव के कुओं में

खूब पानी है। पहले हमारे एक ही कुएं में पानी था, आज सब में पानी है। आज हम पानीदार हैं। नतीजन हमारे यहां अब खूब खेती होने लगी है।

श्री राम मीणा कहते हैं कि बीसावाला बाँध बन जाने से हमारी किस्मत खुल गई। अब हमारे कुओं में खूब पानी रहता है और अब हम खेती करते हैं। हमारे गाँव के सभी बच्चे अब तो स्कूल जाते हैं। आज गाँव के पांच बच्चे सरकारी नौकरियों में लग गये हैं। यह सब पानी का ही तो करिश्मा है।

पिपलाई गाँव मेन सड़क से 3 कि.मी. पश्चिम–दक्षिण दिशा की तरफ पहाड़ी की तलहटी में छः ढाणियों में बसा हुआ है। इस गाँव को पहले मीणाओं ने बसाया था। बाद में राजपूत, ब्राह्मण, रैगर, माली, बागड़ा, जोगी, कुम्हार, खाती, बलाई आदि आकर बस गये। इस गाँव में तरुण भारत संघ ने 1989–90 में स्वास्थ्य केन्द्र चलाया। छोटे बच्चों के लिए शिशुपालन गृह से लेकर इस गाँव में तरुण भारत संघ ने जोहड़ों के अनेक कार्य किये। यहां पानी का बहुत ही अभाव था। पानी की सुविधा से गाँव में पशु पालन के माध्यम से अपना जीवन यापन करने में लोगों को आसानी हुई है। यहां पर हरिनाथ, शिम्भू दयाल बागड़ा, कन्हैया पटेल और मुरारी लाल आदि ने मिलकर ठाकुर मंगेज सिंह के सहयोग से जोहड़ बनवाने का कार्य किया।

कालापारा गाँव को लें, इसमें मीणा, बलाई, रैबारी और सैन समाज के परिवार रहते हैं। गाँव मेन सड़क से 2 कि. मी. पूर्व में बसा हुआ है। इसमें रैबारी जाति के लोग ऊंट का टोला रखते हैं। मीणा खेती करते हैं। छोटा रैबारी के भी 3 बीघा खेती की जमीन थी जो बारानी किस्म की थी। छोटा रैबारी को भी संस्था के लोगों की बात समझ में आई कि क्यों न मैं भी पानी रोकने का काम करूं? जमीन में पानी रुकेगा तो जीव–जन्तु सभी को मिलेगा। रैबारी ने अपने खेत में जल संरक्षण कार्य करने का मन में तय किया और पानी का काम किया। इससे उसके यहां खेत में आज आराम से अपने परिवार चलाने लायक पर्याप्त मात्रा में अनाज पैदा हो जाता है। यह लोग पहले पानी न होने की वजह से खेती करना अटपटा समझते थे। पर आज वे खेती कर रहे हैं। गाँव में पानी के जल स्तर बढ़ने से आज पैदावार बढ़ी है।

गाँव कालापारा के मूलचन्द मीणा की सुनें। इन्होंने 1995 में जब इनके गाँव में तरुण भारत संघ का कार्यकर्ता गया तो उससे मुलाकात की। संघ के कार्यकर्ता ने इन्हें

जल, जंगल और जमीन संरक्षण के कार्य के बारे में बताया। तब उन्होंने कहा कि मेरे खेत गाँव की दक्षिण दिशा में चौड़ डेरा नामक जगह पर हैं। यदि उसमें संस्था की मदद से कुछ कार्य हो जाता तो मेरे परिवार का पालन-पोषण हो जाता। संघ के कार्यकर्ता छोटेलाल मीणा ने तब कहा कि आधा हिस्सा आपको खर्च करना होगा। मूलचन्द मीणा ने कहा हम तैयार हैं। पैसा कब और कैसे देना होगा? तब छोटे लाल ने सिलसिलेवार पूरी बात बताई। तब वह तैयार हुआ। जब गाँव के लोगों ने देखा कि मूलचन्द का तो खूब काम हो रहा है। इसके बाद गिरधर मीणा, श्योबख्श मीणा, कजोड़ मीणा और लालाराम मीणा ने भी मिलकर जन भागीदारी से अपने खेतों में डोल, पाल, मेड़बन्दी करवायी। इस तरह गाँव की कम से कम 100 बीघा जमीन पर काम हुआ। आज मूलचन्द भाई के घर खुशहाली है। वह कहीं भी बाहर मेहनत-मजदूरी करने नहीं जाते हैं। जबकि पहले वह गुजरात में 12 में से 9 माह बाहर रहते थे; तब कहीं जाकर परिवार का भरण-पोषण होता था। आज उनके दो बेटे हाईस्कूल में पढ़ते हैं।

मूलचन्द मीणा खेती के साथ पशुपालन भी करते हैं, क्योंकि अब कालापारा में पानी का जल-स्तर ठीक है, जबकि इससे पहले बहुत परेशानी थी। आज इस गाँव में कोई भी मेहनत-मजूरी करने बाहर नहीं जाता है । पहले इस गाँव में न तो सड़क थी और स्कूल की भी व्यवस्था ठीक नहीं थी। कुछ समय रामजी लाल मीणा जैसे कुछ युवा लड़कों ने इस गाँव के बच्चों को पढ़ाने का कार्य किया। 5-6 वर्ष पहले गाँव के रामजी लाल मीणा ने संगठन बनाया। उस समय गाँव के सामने स्कूल की बिल्डिंग की समस्या थी। तब संस्था ने लोक जुम्बिश से स्कूल की बिल्डिंग बनवायी। तब कहीं जाकर बच्चों को खुले आकाश के नीचे बैठने से मुक्ति मिली। इसमें छोटेलाल गुर्जर की भूमिका सराहनीय थी।

इस गाँव में जंगल संरक्षण के सवाल पर रामजी लाल मीणा कहते हैं कि संस्था ने हमें ज्ञान की अपार सम्पत्ति प्रदान की है। उसने जहाँ हमें सरकारी कर्मचारियों की लूट से मुक्ति दिलायी, वहीं हमें आत्म बल से भी पूर्ण किया। तरुण भारत संघ ने अलवर, जयपुर, दौसा आदि बीसियों जिलों में पानी का कार्य करके मानव को जीने का तरीका सिखाया है। इस गाँव में खादी ग्रामोद्योग के कार्य में भी तभासं ने

प्रभावी भूमिका अदा की। इस गाँव में जो महिलाएं सूत कातने व दरी बनाने का काम जानती थीं, उनको रोजगार दिया।

मोरड़ी की ढ़ाणी में माली और जोगी समाज के लोग रहते हैं। माली समाज के लोगों का मुख्य धंधा खेती बाड़ी करना है। यहां पर जगदीश सैनी एक छोटी-सी परचूनी की दुकान चलाता था। संस्था के कार्यकर्ता से मुलाकात होने पर जल संरक्षण कार्य में उसकी रुचि बढ़ी। उसने गाँव के लोगों को श्रमदान के बारे में प्रेरित किया। जंगल संरक्षण के काम और जोहड़ बनाने के बाद गाँव के कुओं में पानी बढ़ा। अब गाँव के लोग साल में दो फसलें लेने लगे हैं।

रामानन्द शर्मा कहते हैं कि वे अपने तीन भाइयों के साथ यहां वर्षा कम होने के कारण हरियाणा में पापड़ का धन्धा करने जाते थे। उन्होंने 20 साल तक पापड़ का धन्धा किया। पर उस काम में वह मज़ा नहीं आया जो आज अपनी खेती करने में मिल रहा है। यह सब पानी के कारण ही संभव हुआ है। इसके लिए हम तरुण भारत संघ के आभारी हैं। उसके ही कारण आम आदमी को इतना फायदा हुआ, कुओं का जल स्तर बढ़ा और फसलें लहलहाने लगीं। संस्था के कारण ही हमें नई जिंदगी मिली है।

मोरड़ी की ढ़ाणी में बोदूराम मीणा ने अपने गाँव में सब से पहले अपने खेत में एक एनिकट बनवाया था। इन्होंने सार्वजनिक जोहड़ निर्माण कार्य में भी भाग लिया। उनके तीन बेटे हमेशा बाहर दिल्ली में बेलदारी का काम करते थे। बोदूराम एवं उनके पिताजी व छोटे बच्चे यहां रहते थे। इनके यहां आर्थिक तंगी थी। आज जल संरक्षण के कार्य से इनको बहुत ही लाभ हुआ है और वे परिवार का भरण-पोषण कर अच्छी तरह से रह रहे हैं तथा गाँव में हर कार्य में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। उनके बड़े बेटे साँवरिया ने बाँध-जोहड़-ऐनीकट बनवाने के बाद अपने खेत में कुआं खुदवाया, जिसमें अच्छा पानी मिला। ऐनीकट के बनने से पानी की कमी नहीं है और अब कोई बाहर धन्धे की तलाश में नहीं जाता है। बोदूराम कहते हैं कि इन्सान की जिंदगी में खुशहाली तभी आती है जब वहां पानी व बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था हो। शिक्षित परिवार ही दूसरे को सही दिशा देता है।

पिपलाई के कन्हैया लाल मिस्त्री कहते हैं कि हम गाँव में कभी भी एक वर्ष में एक माह से ज्यादा नहीं रुके। हम परिवार सहित बैंगलूर में ही रहते थे। पहले हम खेती-किसानी का काम करते थे। पर अकाल के दौरान जब फसल अकाल की चपेट में आ

गई, तब बंगलूर में जाकर मोटर बॉडी बनाने का काम करके अपने परिवार का भरण पोषण करने लगे । जब संस्था का गाँव में दौरा हुआ, तब मैं अपने गाँव आया हुआ था। उस समय गाँव में संस्था अपने कार्यकर्ता मुरारी शर्मा के माध्यम से जल संरक्षण संरचना का कार्य करा रही थी। उस समय जोगियाँवाला जोहड़ का निर्माण कार्य भी चल रहा था। तब गोवर्धन जी शर्मा से मैंने अपने खेत में एक छोटा सा ऐनीकट बनाने की बात कही। धीरे-धीरे नापतोल के बाद श्रमदान से 1996 में ऐनिकट बना। इसके बनने के बाद कुएँ में पानी व खेत में नमी हो जाने पर मेरे परिवार ने बंगलूर जाना बन्द कर दिया। अब यहां पीने के लिए शुद्ध पानी है और पानी की बदौलत लहलाते खेत।

वह कहते हैं "इसे छोड़कर अब बंगलूर जाने का मन ही नहीं करता। अब मेरे खेत में गेहूं, सरसों, चना होते हैं। परिवार का गुजारा खेती से चलता है। अब हम जंगल से गीली लकड़ी काटने नहीं देते हैं और हमेशा जंगल के प्रति जागरूक रहते हैं। मैंने हमेशा मेहनत-मशक्कत करके ही कुछ पाया है। आज जब खेत में फसल देखता हूँ तो मन खुशी से भर आता है, मेरा दिल बहुत आनन्दित होता है। ऐनीकट बनने से आज मुझे और मेरे परिवार को खाने के लिए अनाज मिल रहा है। साथ ही पशुओं को पेट भर के चारा मिल जाता है। दूध, घी, दही सब घर पर ही मिलने लगा है। यह सब तरुण भारत संघ के सहयोग से संभव हुआ है"।

गाँव सीली बावड़ी, अलवर जिले की थानागाजी तहसील में पहाड़ की तलहटी में सरसा नदी के पूर्व की ओर बसा हुआ है। इसमें गुर्जर, मीणा, कोली, बलाई, रैगर, शर्मा, खाती आदि जाति के लोग रहते हैं। एक समय में यहां अकाल का ऐसा दौर आया जब पहाड़ की तलहटी के गाँव पानी का संकट गहराने से वीरान हो गए। यहां के बुजुर्ग कहते हैं आब, आबरू, आवादानी, सबका गुरु है पानी। पानी की कमी से अनाज-चारा-पशुधन सभी का अकाल हुआ। गाँव का रामजी लाल बलाई कहता है कि तब एक उपाय रह गया था बाहर जाकर नौकरी कर पेट पालने का। लोग लाचार-बीमार और गरीबी से त्रस्त थे।

रामजी लाल के अनुसार उसी बीच तरुण भारत संघ ने गोपालपुरा में जल संरक्षण के कामों की शुरूआत कर दी थी। 1986 में सीली बावड़ी गाँव से जीता राम कोली गोपालपुरा गया। वहां उसने काम के बारे में समझा और अपने गाँव जाकर गाँव के अन्य लोगों को समझाया। दूसरे ही दिन से सीली बावड़ी के लोग गोपालपुरा में मजदूरी करने जाने लगे। वहां राजेन्द्र सिंह जी ने पूछा कि आप लोग सीली बावड़ी से इतनी दूर क्यों आते

हो? अगर आपके गाँव वाले भी श्रमदान करने को तैयार हो जायें, तो हम आपके गाँव में भी जोहड़ का काम शुरू कर सकते हैं। सायंकाल गोपालपुरा से वापस आकर जीताराम, रामजी लाल पटवा और बुद्धा भाई आदि ने गाँव की चौपाल पर चर्चा की। उसके बाद गाँव के बुजुर्ग कानाराम, गंगाधर व बुद्धालाल ने खुद गोपालपुरा जाकर राजेन्द्र सिंह जी से नियम-कानून समझे, उन्हें गाँव का दुःख बताया। दूसरे ही दिन भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी ने रामकिशन मीणा को गाँव में जोहड़ बनाने हेतु सर्वे करने भेज दिया। रात्रि में गाँव में मीटिंग हुई। ग्राम सभा बनी। फिर क्या था, देखते ही देखते काम शुरू हो गया।

गाँव के लोग कहते हैं कि किस्मत का करिश्मा देखो, उसी साल वर्षा भी अच्छी हुई। जोहड़-तालाब लबा-लब भर गये और फिर तो हमारा पानी का संकट हमेशा के लिए मिट गया। कुएं जो सूखने लग गये थे, उनमें पानी आया-खेती हुई, पशुधन बढ़ा और गाँव में खुशहाली लौटी। इसे देख कर आस-पास के जैतपुर, कुण्ड्याळ, काँकडक्याँ, खोड़ाँ की ढाणी, गुवाड़ा पखाल, गुवाड़ा सीरा के लोग भी अपने-अपने गाँवों में जोहड़-तालाब बनाने के काम का प्रस्ताव लेकर आने लगे। सब गाँव-ढाणियों में ग्राम सभा बनी, वहां संगठन खड़ा हुआ तथा पानी के कामों की शुरूआत होने लगी। यह सिलसिला आज तक बरकरार है। नतीजा यह हुआ कि सीली बावड़ी के नीचे सरसा नदी में पूरे साल पानी रहने लगा। पानी के साथ-साथ गाँव में शिक्षा, शराब बंदी और अन्य विकास के काम भी होने लगे। फिर गाँव वालों ने पहाड़ के ऊपर पानी रोकने का प्रस्ताव ग्राम सभा में रखा। इसमें बोदन पटेल, छोटे लाल, रामजी लाल, कानाराम व बुद्धा लाल ने प्रमुख भूमिका निबाही। भाई साहब के कहने के बाद व गाँव के सहयोग से पहाड़ पर 2-3 तालाब और बने। उनमें अब सालों-साल पानी रहता है।

गुवाड़ा सीरा के लोग भी गुवाड़ा व बावड़ी के लोगों की बदली तस्वीर देखकर खुद तरुण भारत संघ से जुड़ने लगे। जगदीश योगी व प्रभुराम मीणा ने मिलकर तीन गुवाड़े-गुवाड़ा सीरा, गुवाड़ा डाबर व गुवाड़ा भूलाँ के लोगों की मीटिंग की। उसके बाद वह मीटिंग की रिपोर्ट लेकर भाई साहब से मिले। भाई साहब राजेन्द्र सिंह ने वहां सर्वे के लिए कार्यकर्ता भेजा। सर्वे के बाद वहां संगठन बना और गाँव वाले इकट्ठा होकर श्रमदान करने लगे। इससे स्कूल के ऊपर वाले जोहड़ का कार्य चालू हुआ। काम पूरा हुआ और वर्षा में उसमें पानी आया। इससे कुओं का जलस्तर बढ़ा। वहां का प्रभुराम कहता है कि अब हम अपनी जमीन में सरसों-गेहूँ बोते हैं। अब हम खुशहाल हैं। यह सब पानी का ही चमत्कार है।

जम्बूरी कालोत ने भी अपने गाँव की जिम्मेदारी ली और गाँव वालों को इकट्ठा कर कालोत की जोहड़ी में श्रमदान कराया। रात-दिन के परिश्रम के बाद उस जोहड़ के बनने में सफलता मिली। उसकी देखा-देखी सरसा नदी घाटी क्षेत्र के 27 गुवाड़े खुद ब खुद अपने यहां जोहड़-तालाब बनाने का काम करने लगे। संस्था के कार्यकर्ता वहां काम देखने जाते तो श्रवण सोनी कहता, भाई हमको भुगतान मिले या न मिले, अब हमारा जोहड़ तो बन ही जायेगा। जब गोर्वधन शर्मा, श्रवण शर्मा गाँव के जोहड़ का भुगतान लेकर वहां पहुंचते तो गाँव के बूढ़े, बच्चों व स्त्रियों में खुशी देखते ही बनती थी। उनको जोहड़ में पानी मिला, कुओं का जलस्तर बढ़ा, नतीजन इंजन पूरे दिन चलने लग गया। लोगों की लाचारी-बदहाली में बदलाव आया।

एक दिन गुवाड़ा सोती के पीपल वाले कुएं पर गुवाड़ा गूगली के निवासी प्रधानाचार्य रामनाथ मीणा किसी काम से आये। उनका पहला सवाल था, "थाँको इंजन कितना घंटा चालै छै?" इस पर राम जी सोती ने कहा, पूरे दिन। यह मेहरबानी हमारे जोहड़ बनने से हुई है। रामनाथ जी ने सारी प्रक्रिया जानकर दूसरे दिन अपने भाई जगदीश को श्रवण शर्मा के पास गुवाड़ा व्यास में भेजा। वहां श्रवण व्यास ने मास्टर जी के भाई को पूरी बात बतायी। उनके बताये अनुसार उन्होंने अपने गाँव में संगठन की प्रक्रिया शुरू की। फिर सबसे पहले 'साँवलदास के जोहड़' को बनवाने की पहल हुई। वह बना और भगवान की कुदरत से वर्षा में जोहड़ में पानी आया। जोहड़ का लाभ सबको मिला, कुओं का जलस्तर बढ़ा। उसके बाद वहां और भी दूसरे काम होते चले गये। वहां बड़े-बडे.जोहड़ बनने से गाँव की तस्वीर बदली। रामनाथ मीणा कहते हैं कि आज इन गाँवों में छोटे से महकमे से लेकर बड़े महकमे तक के भी दो से चार कर्मचारी मिल ही जायेंगे। आज यहाँ शिक्षा है, खुशहाली है। यह सब पानी की ही मेहरबानी है।

राड़ी का गुवाड़ा का श्योबख्श कहता है कि हमारे यहां की खुशहाली की सारी माया तरुण भारत संघ की मेहरबानी से है। मुरारी शर्मा के प्रयास से तरुण भारत संघ ने जो सिपला वाला बाँध बनवाया है, इससे पूरे गाँव के कुओं को फायदा हुआ है। यहां जलस्तर काफी बढ़ गया है। रामनाथ की मानें तो तरुण भारत संघ द्वारा पिछले सालों में गोपालपुरा में किए गए पानी के काम से हमारे कुओं का केवल जलस्तर ही नहीं बढ़ा, बल्कि सरसा नदी भी पुनर्जीवित हो गई है। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

पूर्व सरपंच गोविन्द शर्मा कहते हैं कि मैंने तो संस्था के कामों को बहुत गहनता से परखा है। इनसे समाज को लाभ ही हुआ है। पाण्डवों के समय के सरसा देवी माता के मन्दिर से आगे सरसा नदी पूर्व की तरफ बहती है। नदी क्षेत्र व गाँव में संस्था के सहयोग से पक्के ऐनीकट बनाये गये हैं। इससे नदी तो सदानीरा बनी ही, साथ में आस-पास के कुओं का जलस्तर भी बढ़ा है।

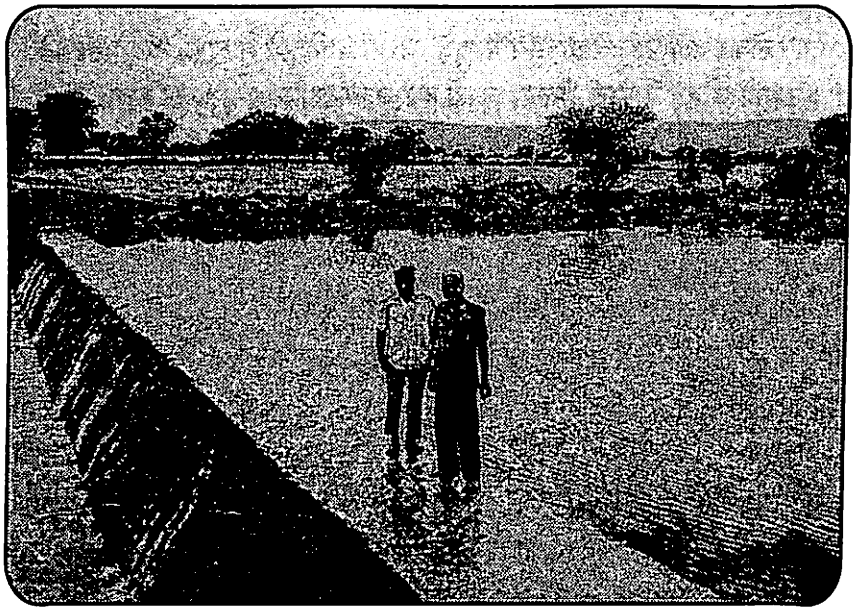

धीरोड़ा की जल-संरचना का अवलोकन करते भ्रमणकर्ता

धीरोड़ा का सौणा गुर्जर कहता है कि हमारे खेतों के पास पहले कुछ नहीं था। पहले कुआं मुश्किल से एक या दो घंटे चलता था। सौणा गुर्जर ने बताया कि भाई, अपना क्षेत्र ढलान क्षेत्र है, यहां पानी नहीं रुकता था। सरसा नदी केवल बरसाती रह गई थी। बाद में श्रवण शर्मा, जगदीश गुर्जर और रामस्वरूप गुर्जर के प्रयास से हम गाँव वालों ने इकट्ठे होकर दो तीन ढाणियों के श्रमदान की जिम्मेदारी ली। काम हुआ और आज क्या बताऊं, हमारे कुओं में 10 फीट नीचे ही पानी रहता है। नदी पुनर्जीवित हो गई हैं। पूरा गाँव खुश है।

धीरोड़ा के ही सुल्तान सैनी ने बताया कि हमने तो गाँव में वन समिति बना रखी है। हमारे यहां जंगल में कुल्हाड़ी ले जाने पर प्रतिबंध है। बकरियों के ग्वाल जंगल में

कुल्हाड़ी लेकर नहीं जाते। महिलाएं गीली लकड़ी काट कर नहीं लातीं। वन समिति में हर गाँव से दो-दो मेम्बर हैं, जो हर माह की निश्चित तारीख को एक जगह बैठकर जल और जंगल संरक्षण के बारे में बातचीत करते हैं। वन समिति ने जो कानून बना रखे हैं, उनको तोड़ने पर 101 रुपये का जुर्माना करते हैं और उन पैसों को जोहड़ खुदाई में लगाते हैं। नांगल चन्देल की कमली माई कहती हैं कि हमारे यहां नांगलवाला बाँध का काम हुआ। उसके बनने के बाद अब हमारे गाँव में पानी की मौज़ है। यहां के रामजी लाल गुर्जर ने भी अपने क्षेत्र में पानी के अच्छे काम करवाये हैं।

सरसा नदी घाटी क्षेत्र में बनी। इस वन समिति में नांगल दासा से खेमा बंजारा, गोपाल गुर्जर; लील्याँ से रामस्वरूप, बाबूलाल; धीरोड़ा से सौणा राम गुर्जर, लाडली शर्मा, सुल्तान सैनी; जाटाला से मांगेलाल, बद्री; दरोगाला से रामगोपाल, भम्बू गुर्जर; नांगल चन्देल से कमली माई, रामजी लाल; लाँकाश से बद्री, प्रभु मीणा; जोगी वाला से प्रभुनाथ, केशानाथ; अवानाला से भागीरथ, रामप्रताप; कीटला से किशन सिंह, आनंदी लाल और श्यालूता से अमर सिंह व राम किशोर आदि शामिल हैं।

यह वन समिति 11 गाँवों की है। इसके अलावा हर गाँव की एक-एक ग्रामसभा और होती है, जो जंगल और जलसंरक्षण कार्य करती है। ग्रामसभा में गाँव के मेम्बर बदलते रहते हैं तथा ग्रामसभा ही वन समिति के मेम्बर तय करती है। अगर कोई सदस्य समाज का अच्छा कार्य करता है, तो सभा में उसी को लगातार चुनते हैं। तरुण भारत संघ में वह 2 अक्टूबर को सम्मानित भी किया जाता है।

स्वीडन संसद की उपाध्यक्ष ईवा जेटरवर्ग धीरोड़ा वासियों के साथ बातचीत करते हुए

धीरोड़ा से आगे सरसा नदी पर कीटला गाँव के पास एक ऐनीकट बना हुआ है। यह ऐनीकट तरुण भारत संघ ने बनवाया था। इसका इतना प्रभाव है कि 15 इंजन रखकर लील्याँ के लोग अपनी परती भूमि में दोहरी पाइप लाइन डालकर एक किलोमीटर तक सिंचाई करते हैं। इस कार्य को आर.एस.एस. के सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी ने भी आकर देखा और सराहा था। उन्होंने बताया कि पानी से ऐसे ही तकदीर बदलती है। कीटला निवासी कैलाश मिस्त्री बताते हैं कि अब कीटला में तीन-तीन फसलें होती हैं; जबकि पहले दो के ही लाले थे। पानी आने से अब तो लाभ ही लाभ है।

श्यालूता के रामप्रताप बताते हैं कि मेरी रिश्तेदारी भूरियावास गाँव में है। वहां के पोखर पटेल का बेटा मेरे यहां ब्याहा है। उसके कहने से मैं तरुण भारत संघ जाकर भाई साहब से मिला। उन्हें मैंने अपने गाँव की हालत बताई। भाई साहब ने गोवर्धन शर्मा को ऐनीकट की जगह देखने को कहा। रामप्रताप जी कहते हैं कि हम इससे पहले भी ऐनीकट बनवाने के वास्ते प्रशासन से भी मिले थे, परन्तु झूठे वायदे के सिवाय कुछ नहीं मिला।

वह कहते हैं कि मुझे वो दिन याद है जब मेरा दामाद श्रवण गुर्जर व उनके साथी श्रवण शर्मा दोनों मेरे गाँव आए। मैंने उनकी कुशल क्षेम पूछी। रात को वह गाँव में रुके। गाँव में मीटिंग की। संगठन बना और आगे की प्रक्रिया शुरू हुयी। वहां पर भी धीरोड़ा वाली समस्या थी। ढलान होने से सारा पानी बहकर सरसा नदी में चला जाता था। वहां नदी सदानीरा नहीं थी। ऐनीकट बना और वर्षा में भरा भी। वहां अफवाह फैलाने वाले भी बहुत थे कि यह भी नीमड़ी ऐनीकट की तरह बह जायेगा। लेकिन जब कुछ नहीं हुआ तो लोग जुड़ने लगे।

देखते-देखते बलदेवगढ़ की तरफ से दूसरी धारा जो सरसा में मिलती है, वहां से भी एक ऐनीकट बनाने का प्रस्ताव अमर सिंह की ओर से आया। वहां भी संगठन बना और काम हुआ। पानी आया और वहां आस-पास के कुएं पानी से लबा-लब भर गए। पैदावार बढ़ने से लोगों की माली हालात भी सुधरी और उनके घर खुशहाली से भर गए।

इस पर श्यालूता वाले अमर सिंह कहते हैं कि हमको तो इसका पूरा-पूरा लाभ मिल गया है। हमारी तो अब एक इंच जमीन भी पड़त नहीं रहती। अब हम संस्था से

जुड़े हैं। एक दिन हमने लांकाश के बाँध का प्रस्ताव रखा। भाई साहब से कहा कि वह बाँध पहले सरकारी था, अब टूट गया है। गाँव के लोगों के पास जमीन होते हुए भी वे बेकार हैं। मजूरी की खातिर वे बाहर जाते हैं। जयपुर में रिक्शा चलाते हैं। अगर संस्था उस बाँध को ठीक कर दे तो शायद पावटा, श्यालूता, लील्याँ, जोगीवाला, आवानाला इन पांच गाँवों को उसका लाभ मिल सकता है। भाई साहब ने हां भर ली और जगदीश गुर्जर, गोपाल सिंह और बोदन पटेल द्वारा किए गए सर्वे के बाद लील्याँ वाले रामस्वरूप गुर्जर की मदद से वहां के कालू-प्रभु और हम सबने मिलकर 22600 रुपये इकट्ठा कर लिये और शेष लांकाश गाँव के 16 परिवारों से किये। तब वहां पक्का काम संभव हुआ। पाल की भी चौड़ाई बढ़ी, जिससे उसके नीचे किशन लाल कोली के कुएं में पानी भी आया और जमीन भी जो बिना पानी पड़ती रह जाती थी, उसमें भी अब फसल होने लगी है।

लील्याँ स्थित ऐनीकट के उद्घाटन के अवसर पर स्वीडन सरकार की विकास मंत्री के साथ राजेन्द्र सिंह व अन्य प्रतिनिधि

लील्याँ के रामस्वरूप गुर्जर कहते हैं कि सच्चाई तो वहां जाकर मालूम पड़ेगी कि आज वहां के हाल कैसे हैं? अब वहां बाँध में पानी भर जाने से बिना सिंचाई चने, तरा और सरसों होती है। कुएं भरे होने से नीचे भी खेती होती है। जोगीवाला का प्रभुनाथ कहता है कि ऐनीकट तो हमारा है, लेकिन इसका फायदा दूसरों को ज्यादा हुआ है। लेकिन इससे भी हमको खुशी ही होती है।

□□□

नाँगल दासा की विचित्र कहानी

नाँगल दासा कोलेश्वर गांव के पास गोलाकाबास से नौ कि.मी. पूर्व की तरफ सरसा नदी के किनारे बसा हुआ है। खेमा बंजारा के बताये अनुसार–"हमारी जमीन श्यालूता के कांकड़ तक पड़ती है, लेकिन ढालू होने से पानी की कमी है। आस–पास बंजारों की ढाणी व उनकी जमीन पड़ती है। गोपालपुरा के बंजारों की जान–पहचान मुझसे थी। जमीन होते हुए भी वे लोग पानी न होने से अत्यंत दुःखी थे। मैंने उन्हें तरुण भारत संघ से मिलने की सलाह दी। वे भाई साहब से मिले। उन्होंने साइट देखी–समझी और जगदीश गुर्जर को नाप–तौल के वास्ते भेजा। उन्होंने वहां का सर्वे किया और गोपाल गुर्जर व मुझे मुखिया बनाकर कुल लागत का चौथाई श्रमदान इकट्ठा करने को कहा। मरता क्या नहीं करता–अपनी जरूरत समझ कर हमने तुरन्त हां कर ली और कार्य चालू हो गया।"

नाँगलदासा में चौखण्डी वाला एनिकट के निर्माण में लगे ग्रामीण

जगदीश पंडित जी काम की देखरेख करने की खातिर, काम खत्म होने तक वहाँ रहे। इस बाँध के बन जाने से नदी में डेढ़ कि.मी. लम्बाई में पानी भरता है। इससे नदी

के नीचे झरना भी बहना शुरू हो गया। यह पानी रेडिया गांव के नीचे तिलदह–भगाणी व जहाजवाली से आने वाली नदी में मिल जाता है। नांगल दासा में आज जो तस्वीर घुमन्तू बंजारों की बदली है, वह देखने लायक है। अब वे यहां से बाहर जाने को मजबूर नहीं। उनके सूखे–बंजड़ खेतों में खेती लहलहाने लगी है। धीरोड़ा से नांगलदासा तक जो भी पानी की संरचनाएं बनी हैं, उनमें मुख्य भूमिका लील्याँ के भाई रामस्वरूप गुर्जर की है; जिन्होंने गाँव–गाँव जाकर लोगों को संगठित करके पानी की मुहिम शुरू की, जिसकी वजह से इस क्षेत्र का भूगोल ही बदल गया है।

सरसा नदी पर बाँध से नदी तो पुनर्जीवित हुई ही, गाँव भी फिर से जी उठा। आज के हरे–भरे खेतों को देखकर कोई नहीं कह सकता कि कभी इस गाँव में लोग अन्न के लिए तरस रहे थे या यहां से पलायन कर रहे थे। इस तरह के कायापलट की किसी ने कोई कल्पना भी नहीं की थी।

सूरतगढ़ में आज किसानों को सहज ही विश्वास नहीं होता अपने गांव की स्थिति को देखकर। कहां तो दाने–दाने को मोहताज थे और कहां आज वानिकी में भी सबसे अव्वल हैं। पानी की पर्याप्त मात्रा से खूब सब्जियां होने लगी हैं। टमाटर, बैंगन, आलू, ककड़ी, खरबूजे, भिंडी, घीया, मूली, गाजर आदि की खेती की जाने लगी है। यहाँ अब गाँव में सब्जियां उगाकर सूरतगढ़ वासी, थानागाजी और अलवर मंडी में बेच आते हैं। सब्जी का धंधा मुख्य रूप से कीर (मेहरा) जाति करती है। परंतु वानिकी खेती में इन जातियों की उन्नति और कमाई देखकर अब मीणा जाति के लोग भी टमाटर आदि की बाड़ी लगाने लग गये हैं। कुछ ने तो अपने खेत मेहरा जाति को बँटाई पर दे दिये हैं। कन्हैया लाल जी का कहना है कि सब्जी के लिए पर्याप्त पानी की जरूरत होती है। अगर न हो, तो पैदावार बिल्कुल ही नहीं होगी। यदि फूल आने पर एक दिन भी पानी की कमी आ गई, तो एक दिन में ही फूल नष्ट हो जायेंगे। फिर दुबारा फूल आने में चार–पांच दिन लग जाते हैं। आज गांव में खूब पानी है, इसलिए वानिकी खेती के मामले में हम सबसे आगे हैं।

□□□

दिशा बदली तो दशा ही बदल गई

बाछड़ी के श्री पेमाराम जी मेवाल कहते हैं कि जब से सरसा की दिशा बदली, इलाके की तो दशा ही बदल गई है। उनके अनुसार मेरे विचार से व्यक्ति की मनोदशा ही है जिस पर व्यक्ति का सुख, दु:ख, खुशहाली व बदहाली निर्भर करती है। तरुण भारत संघ के पांच साथी जब शुरू में भीकमपुरा आए और यहां आकर काम शरू करने का निर्णय किया, तब शायद ही उन्होंने अपनी दिशा तय की हो कि क्षेत्र में किस प्रकार का कार्य किया जाये; ताकि क्षेत्र की बदहाली खुशहाली में बदल जाये। स्थानीय लोगों की प्रेरणा से व उन लोगों के जन सहयोग एवं भागीदारी से उन्होंने क्षेत्र की नदियों पर छोटे-छोटे जोहड़-बन्धे बनाने शुरू किये। शुरुआत के बाद तो जन सहयोग एवं जन भागीदारी से इन कामों का सिलसिला लगातार बढ़ता ही रहा। इसी तरह की कहानी है सरसा नदी की।

सरसा नदी के बाछड़ी गांव में कार्य की शुरुआत तरुण भारत संघ ने जंगलात वाले जोहड़ से शुरू की। उस जोहड़ में बाछड़ी के लोगों को प्रत्येक घर से एक चौकड़ी जन सहयोग के रूप में देनी थी। जब काम शुरू हुआ तो लोगों में भारी उत्साह था। उनके बीच जन सहयोग की होड़ मची थी। जंगलवाला जोहड़ ऐसी जगह पर स्थित है, जहां पालतू पशु ही नहीं, जंगली जानवर भी भय-मुक्त होकर पानी पीते हैं। पूरे वर्ष भर वर्षा का पानी रहता है यहां। इस जोहड़ के बाद तो सरसा नदी पर जोहड़ों की शृंखला बढ़ती ही चली गई। जिनमें मुख्य रूप से बीजा की ढाह, पीपल वाला जोहड़, श्यामपुरा की जोहड़ी, भैंरू का ऐनीकट, ऊपरला बाँध और नीचला बाँध की मरम्मत आदि के काम हैं। इन सभी कामों में सबसे प्रमुख काम बीजा की ढाह का है; जिसमें बारामासी पानी रहता है। इसके कारण इसके निचले हिस्से में सरसा नदी सदानीरा बन गई है।

वर्षा ऋतु व शरद् ऋतु में यहां पक्षी आकर जलक्रीड़ा करते हैं। किसान पानी में सिंघाड़ों की खेती करते हैं। इसके प्रभाव से बाछड़ी गांव का जल स्तर तो ऊँचा उठा ही, आसपास के गांव कालालांका, बामनवास, किशोरी आदि का जल स्तर भी बढ़ा

है और लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा हुआ है।

ये छोटे-छोटे कार्य संस्था के दिशा-निर्देश एवं जन भागीदारी से ही सम्भव हुए हैं। इसी काम की प्रेरणा से शुरू हुयी केन्द्र सरकार की राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना भी सराहनीय है, किन्तु क्रियान्वयन सही दिशा में नहीं होने के कारण न तो उस हेतु मिली धनराशि का ही सही उपयोग हो पा रहा है और न ही उसमें जन भागीदारी हो पाई है। इस कारण राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना महज एक सरकारी योजना बनकर रह गई है। अच्छा हो कि इस योजना में भी संस्था की तरह जन भागीदारी बढ़ा दी जाये एवं जन उपयोगी कार्यों में मुख्य रूप से जल संरक्षण व वृक्षारोपण (सामाजिक वानिकी) के कार्यों को प्राथमिकता दी जाये।

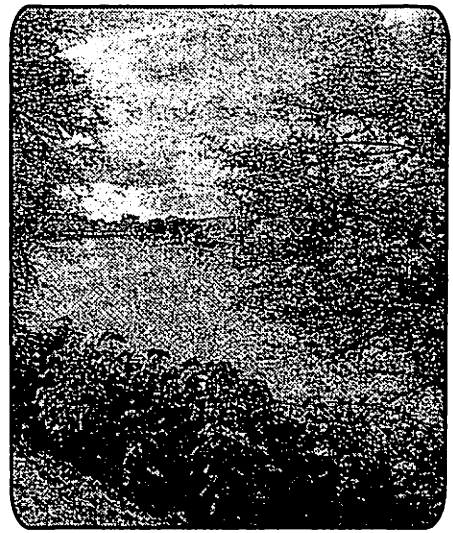

बीजा की ढाह का बाँध, कालालांका-बाछड़ी

तरुण भारत संघ ने समाज को एक नई दिशा दी है। इस पर चलकर पूरा समाज, पूरा देश अपनी दशा बदल सकता है। आज सरसा नदी, क्षेत्र के लोगों के लिए देवी के रूप में मानी जाती है। अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति में समाज ने नदी किनारे भानगढ़ के पास सरसा माता के प्राचीन मंदिर को भव्य मंदिर बनाया है। मन्दिर काफी प्राचीन है, अतः यह कहना आसान नहीं है कि सरसा देवी के नाम पर इस नदी का नाम सरसा पड़ा है या सरसा नदी के नाम पर सरसा देवी का मन्दिर बना है। लेकिन समाज की निगाह में सरसा माता व सरसा नदी दोनों का सम्मान समान है। दोनों पर समाज की अगाध श्रद्धा है एवं सरसा नदी व सरसा माता दोनों एक दूसरे का पर्याय बन गई हैं।

आज समाज को सरसा माता का आध्यात्मिक लाभ कितना मिला है, यह तो प्रत्यक्ष नहीं है; किन्तु सरसा नदी तो क्षेत्र की जनता की जीवन-रेखा ही बन गई है। समाज का सर्वांगीण विकास हुआ है। तरुण भारत संघ व राजेन्द्र भाई का इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसे नकारा नहीं जा सकता। अब तरुण भारत संघ सरसा नदी की संसद् का निर्माण कर रहा है। इस काम में मैं भी लगा हूँ। मेरा तो सरसा नदी के क्षेत्र के लोगों से कहना है कि वे अरवरी की तरह सरसा नदी की भी संसद् बनायें"।

साझी पावड़ी परियोजना की हकीकत

सरसा नदी क्षेत्र के अन्तर्गत 1995 से 1998 तक पावड़ी परियोजना 'अजबगढ़ वाटर शैड' के नाम से चली। इसमें संस्था की भूमिका यह थी कि वह गांवों में ग्राम संगठन करके लोक समिति बनाये और उनको जल, जंगल, जमीन के संरक्षण के लिए तैयार करके इस काम में लगाये। इस तरह इस परियोजना हेतु तरुण भारत संघ ने लोगों को शिक्षण-प्रशिक्षण दिया। इसमें सरकारी विभाग का कार्य तकनीकी शिक्षा देने का था। यह परियोजना एक पायलेट प्रोजेक्ट के तहत थी। इसमें पैसे का अभाव नहीं था। तरुण भारत संघ ने गांव-गांव में ग्राम संगठन द्वारा लोक समिति बनाकर अपना दायित्व पूरी तरह निबाहा। लेकिन सरकारी विभाग द्वारा डेढ़ साल तक काम ही शुरू नहीं किया गया। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं व विभाग की हर माह होती मीटिंग में लोक समिति अध्यक्ष व संस्था के कार्यकर्ता हर बार काम चालू करने की बात कहते। इस पर सम्बन्धित अभियन्ता का जवाब होता था कि अभी ऐनीकट नहीं बना है। इस प्रकार डेढ़ साल निकल गये। उसके बाद सरकारी अधिकारियों ने हरियाणा से मजदूर लाकर यहां के खेतों में पहले से बनी मेड़ों की काट-छांट का काम करवाना शुरू कर दिया। इस पर तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं व विभाग के बीच काफी नोंक-झोंक हुई। संस्था का कहना था कि यह काम यहीं के स्थानीय लोगों द्वारा किया जाना चाहिए। बाहर के लोगों को काम का अनुभव नहीं है। संस्था यह बात इसलिए कहती रही कि स्थानीय लोगों द्वारा सरकारी कर्मचारियों-अधिकारियों को रिश्वत नहीं दी जाती थी। यही वजह थी कि जिसके कारण बार-बार हरियाणा के ठेकेदार और वहां के मजदूरों से यहां के समाज की तनातनी हुई।

इसी दौरान बाछड़ी गांव में एक जोहड़ खुदाई का कार्य शुरू हुआ।

परियोजना के तहत ग्राम नडोली के ग्रामवासी कार्ययोजना बनाते हुए

उसमें भुगतान चौकड़ियों की माप के अनुसार करना था। इसमें जब ठेकेदार ने काम पर नहीं जाने वाले लोगों को मस्टरोल पर दिखाकर पैसा देना शुरू किया तो लोक समिति सदस्य बाछड़ी के हनुमान मेवाल ने इसका विरोध किया और कहा कि ये तो काम पर ही नहीं आये, इनकी हाजिरी कैसे भरी गई ? इस बात पर हंगामा हो गया। लोगों ने मैजरमेंट बुक देखने की कोशिश की। इस पर संबंधित जेई व सुपरवाइजर यह कह कर चले गये कि अब शेष भुगतान लेने कल थानागाजी आ जाना। उनकी इस बात को सुनते ही लोगों का भ्रम विश्वास में बदलने लगा कि इसमें कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ी जरूर है।

लोक समिति, ग्रामीणों व तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने चौकड़ियों की नाप की और इस मामले की शिकायत जयपुर निदेशालय भेजी। जान लेने की बात है कि यहां के लोग मीटिंग में पहले भी दो बार जयपुर निदेशालय जा चुके थे। इसलिए उनकी झिझक खुली हुई थी। जैसे ही स्थानीय विभागीय अधिकारी-कर्मचारियों को पता चला कि बाछड़ी के जोहड़ की शिकायत जयपुर में निदेशक के यहां पहुँच गई है, तो पूरे विभाग में हड़कम्प मच गया और रातों-रात ठेकेदार ने ट्रैक्टरों द्वारा जोहड़ में खोदी गई चौकड़ियों की डोलियाँ तोड़कर समतल कर दी, ताकि सही नाप नहीं हो सके।

अगली सुबह निदेशक श्री निवासन द्वारा जांच हेतु एक विजीलैंस दल बाछड़ी भेजा, जैसे ही जांच दल जोहड़ पर पहुंचा, पूरा ग्रामीण समुदाय जोहड़ पर पहुंच गया और उसने जांच दल से कहा कि इस जोहड़ में 18000 रुपये का गलत भुगतान हुआ है, इसीलिए रात को सब चौकड़ियों को ठेकेदार द्वारा तोड़ दिया गया है। जांच दल ने लोक समिति की बात को गहनता से सुना और परिणामस्वरूप उसी दिन इस जलागम क्षेत्र के छः जेई व सुपरवाइजरों को निलंबित कर दिया गया। इससे पूरे विभाग में खलबली मच गई। इस घटना से विभाग के लोगों में परियोजना के प्रति रुझान कम हो गया था। कारण इसमें उनके आर्थिक हित सधते नजर नहीं आ रहे थे। वह बात दीगर है कि इसमें कई सरकारी कर्मचारी-अधिकारी अच्छे भी थे और वहाँ पर कई अच्छे कार्य भी हुए। लेकिन आखिर में परियोजना बीच में ही बंद कर दी गई। यहां यह उदाहरण देने का एक मात्र उद्देश्य यह साबित करना है कि सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार किस सीमा तक व्याप्त है, जबकि तरुण भारत संघ द्वारा किए गए जोहड़-ऐनीकट के निर्माण के भुगतान में पूरी तरह पारदर्शिता बरती जाती थी। यह प्रमुख कारण रहा जिसके चलते ग्रामीणों का तरुण भारत संघ में विश्वास कायम हुआ जो आज तक बरकरार है।

□□□

कल-कल करती सरसा का यथार्थ

सरसा नदी जीवित हो गई है। लोगों के मन में सांस्कृतिक सिंचाई भी अब शुरू हुई है। पानी में लोगों को अपनी बेहतर व्यवस्था का सपना दिख रहा है। परंपरा में मिले हुनर का कमाल सबके सामने है। कथित आधुनिकतावादी इस बात पर नाक-भौं सिकोड़ सकते हैं; पर यही है यथार्थ, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। आधुनिक अवधारणाओं के इस कठिन समय में उत्तर आधुनिक लोगों को यह अतीत की ओर लौटाने का उपक्रम दिखता है। लेकिन सच यह है कि अतीत की बेहतर व्यवस्था ही हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति है। लेकिन जो बेजा है, वह रूढ़ि और जड़ है। आज हमारी बदहाली इसलिए है कि हम सीधे-सीधे परंपरा को तो खारिज कर दे रहे हैं, पर उसके समानांतर कोई नई विचारधारा लोगों के सामने नहीं रख रहे हैं। मसलन पेड़ों को पूजने की परंपरा हमें हास्यास्पद लगती है। लेकिन यह इसलिए थी कि पेड़ कटने से बचें। आज जंगल के जंगल नष्ट हो रहे हैं। वस्तुवादियों ने इस समय में अपने हिसाब से अवधारणाएं गढ़ीं, जिसमें जितना प्रकृति का दोहन होना हो, हो... हमें हमारी अतिरिक्त सुविधाएं मिलनी ही चाहिए।

हमारा दिल इतना छोटा हो गया है और दृष्टि इतनी सीमित कि हम अपने समय में ही सिमट जाना चाहते हैं। आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ बचाकर रखना हमें अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा लूट लिये जाने जैसा लगता है। इन्हीं भोगवादी प्रवृत्तियों के कारण लोक कंठ में रची-बसी कहावतें अब अपनी अर्थवत्ता खोने लगी हैं। बहता पानी निर्मला अब बहता पानी गंदला की तरह प्रस्तुत हो रहा है। नदियाँ

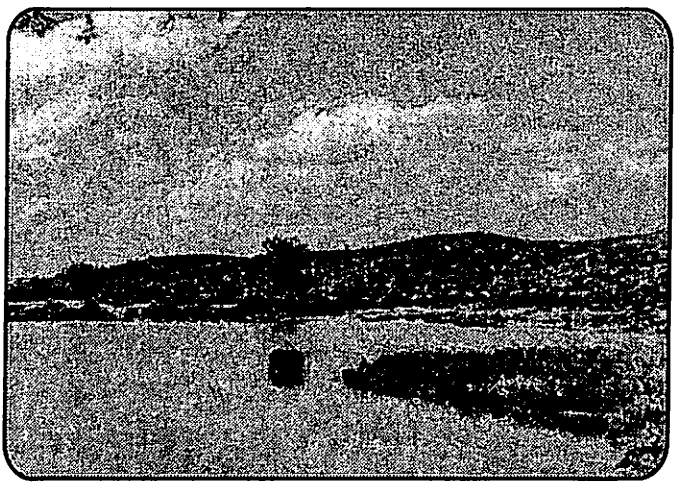

सर-सर करती बहती सरसा

दर नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। सूख रही हैं। आज सरसा अगर फिर से गुलज़ार है, तो लोक परंपरा से मिले रास्तों की वजह से ही। सरसा का अबाध गति से बहना शुरू हुआ है, तो लोगों के बीच पारंपरिक चेतना के लौटने की वजह से ही।

सरसा सरस गई, तो न केवल पेड़-पौधे ज्यादा दिखने लगे हैं, वहां पेड़ों की हरियाली भी बढ़ी है। यह हरापन, उल्लास और प्रसन्नता का सूचक है। इसकी पुष्टि वहां के लोगों के चेहरों को देखकर हो जाती है। आज वहां के परिवार आर्थिक रूप से समृद्ध हैं। खाद्यान्न की उपलब्धता इस क्षेत्र की महिलाओं को अधिक से अधिक खाली समय उपलब्ध कराने में भी सहायक हुई है। कारण अब उन्हें पहले की तरह पानी के जुगाड़ में दिन-रात मीलों भागना नहीं पड़ता। घर के काम-काज और बच्चों की पहले से बेहतर देखभाल के बाद भी उन्हें काफी समय मिल जाता है।

सरसा नदी जो कभी बरसात के दिनों में भी दो-चार घण्टे ही बहती थी, वही सरसा आज तरुण भारत संघ और सरसा अंचल के समाज की साझी सहभागिता के परिणामस्वरूप पुनर्जीवित हुई है और कल-कल करती हुई अपने नाम को चरितार्थ करती है।

तरुण भारत संघ के काम से सरसा क्षेत्र का भूगोल बदला है। रोते चेहरों पर रौनक आयी है, नंगे फटे कपड़े पहनने वाले सरसा के किसान अपने सामुदायिक श्रम से समृद्ध हो रहे हैं। सरसा के पानी का ज्ञान पुनः जीवित हो उठा है। गाँव छोड़ कर गये नौजवान अब गाँवों में वापस लौटकर खेती करने लगे हैं। हम जानते हैं कि इतिहास तो राज करने वाले के साथ बदलता है, पर सरसा का भूगोल सरसा के समाज की समझ और श्रम से बदला है। इसी तरह पूरे भारत का समाज अपनी नदियों के साथ और वर्षा की बूंदों के साथ जुड़कर अब नदियों को शुद्ध-सदानीरा बना सकता है। उसी तरह, जैसे सरसा के समाज ने वर्षा जल को सहेजा और अपने जीवन को चलाने के लिए खेती में और अपने घरेलू कामों में अनुशासित होकर उपयोग किया। सरसा समाज की समझ और श्रम से अब सरस गयी है। इससे प्रेरणा लेकर देश की अन्य सूखती-मरती नदियों का समाज भी अपनी नदियों को शुद्ध-सदानीरा बनाने में जुटे। यही सरसा के समाज का निवेदन है।

□□□

सरसा नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ एवं उनकी भौगोलिक स्थिति

(वर्ष 1985 से मार्च 2013 तक)

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
1.	धोबी वाला जोहड़	गुढ़ा किशोरदास	27	20	36.00	76	15	24.00
2.	बाग तळा की जोहड़ी (टीकर वाली)	गुढ़ा किशोरदास	27	20	12.00	76	15	16.00
3.	नरबद्याळी जोहड़ी	गुढ़ा किशोरदास	27	20	07.00	76	15	19.00
4.	झालरा का बाँध	अंगारी	27	20	00.00	76	14	57.00
5.	राणीकाळी का जोहड़	अंगारी	27	19	52.04	76	14	00.07
6.	सूरसिद्ध का कुण्ड	बीसूणी	27	19	31.00	76	14	17.00
7.	पीपल वाली जोहड़ी	बीसूणी	27	18	41.00	76	14	34.00
8.	चौड़े नळे का बाँध	बीसूणी	27	18	37.00	76	14	40.00
9.	मुन्ना लाल की मेड़बन्दी	डेरा	27	18	02.00	76	15	52.00
10.	वळाई वाला जोहड़	डेरा	27	18	02.00	76	16	12.00
11.	पीपल वाला जोहड़	डेरा	27	18	25.00	76	16	06.00
12.	तेल्याळा बाँध (लक्ष्मण सिंह जी का)	जयसिंहपुरा	27	18	47.00	76	15	51.00
13.	जगदीश पटेल का बाँध	जयसिंहपुरा	27	19	13.00	76	15	50.00
14.	पीपल वाळा जोहड़ (पचवीर वाळा–जोहड़) स्कूल के पास	बाछड़ी	27	19	13.00	76	16	46.00
15.	बीच वाळा बाँध	बाछड़ी	27	18	54.00	76	16	53.00
16.	खेड़ा पीछे का जोहड़ (सार्वजनिक)	श्यामपुरा	27	18	45.25	76	17	22.45
17.	डाँग वाळी जोहड़ी (जंगल वाळी जोहड़ी)	काळा लाँका	27	19	17.00	76	18	15.00
18.	पीपल वाळा जोहड़	काळा लाँका	27	18	56.00	76	18	04.00
19.	बीच वाळा बाँध	काळा लाँका	27	18	46.00	76	17	47.00
20.	राधू वाळी जोहड़ी (उड़द वाळी जोहड़ी)	काळा लाँका	27	18	18.00	76	17	46.00
21.	गंगा राम का जोहड़	काळा लाँका	27	18	25.00	76	17	02.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
22.	खेड़ा की तळाई–1	काळा लाँका	27	18	32.00	76	17	03.00
23.	खेड़ा की तळाई–2	काळा लाँका	27	18	35.00	76	17	02.00
24.	बीजा की ढाह (विजय सागर)	काळा लाँका	27	18	34.00	76	16	52.00
25.	सेर वाळी जोहड़ी	काळा लाँका	27	18	25.00	76	16	47.00
26.	रावाळा बाँध (पेमा राम जी का)	बाछड़ी	27	18	03.00	76	17	07.00
27.	भौंरेलाल का बाँध	बाछड़ी	27	18	06.00	76	17	13.00
28.	हनुमान का बाँध	बाछड़ी	27	18	10.00	76	17	19.00
29.	रामकिशन का बाँध	बाछड़ी	27	17	55.00	76	17	31.00
30.	कुण्या की राड़ी का जोहड़ (मैंरू सहाय के घर के पास)	माळ	27	18	43.00	76	18	56.00
31.	गाँव आगला जोहड़	माळ	27	18	39.00	76	18	46.00
32.	वणक्या वाला जोहड़	माळ	27	18	27.00	76	18	36.00
33.	माटी वाला बाँध (अमर सिंह जी का)	रायपुरा	27	18	02.00	76	18	45.00.
34.	मोन्याळी का बाँध (सज्जन सिंह जी का)	रायपुरा	27	17	50.00	76	18	39.00
35.	जगदीश गुर्जर का ऐनीकट	रायपुरा	27	17	40.00	76	18	42.00
36.	बळाइयों वाली जोहड़ी (चौकी के पास खायड़ा में)	रायपुरा	27	17	44.00	76	18	32.00
37.	खायड़ा वाळा ऐनीकट (जोहड़ी के पास)	रायपुरा	27	17	43.00	76	18	34.00
38.	रामधन बळाई का ऐनीकट–कुण्डाळा में	रायपुरा	27	17	41.00	76	18	29.00
39.	शंकर–रामधन का ऐनीकट	रायपुरा	27	17	40.00	76	18	13.00
40.	चन्दा बळाई का ऐनीकट	रायपुरा	27	17	38.00	76	18	17.00
41.	कड़क्या वाला जोहड़	गोपालपुरा	27	17	08.00	76	18	27.00
42.	धोळी भाट का बाँध (जगदीश मास्टर का) अब कन्हैया कालोत का	गोपालपुरा	27	17	13.00	76	18	44.00
43.	वदरी वाला बाँध	गोपालपुरा	27	16	56.00	76	18	32.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
44.	बावड़ी वाला बाँध (रामपाल, भगवाना का)	गोपालपुरा	27	16	52.00	76	18	34.00
45.	बळाई वाला बाँध (ऐनीकट)	गोपालपुरा	27	16	45.00	76	18	37.00
46.	महेन्द्र बळाई की मेड़बन्दी (आमली वाला खेत में)	गोपालपुरा	27	16	33.00	76	18	47.00
47.	रामजीलाल बळाई की मेड़बन्दी	गोपालपुरा	27	16	29.00	76	18	52.00
48.	बदरी बळाई की मेड़बन्दी	गोपालपुरा	27	16	26.00	76	18	47.00
49.	भैरू जी वाली जोहड़ी	गोपालपुरा	27	16	30.00	76	18	33.00
50.	भंगी वाळी जोहड़ी (बळाई वाळी जोहड़ी)	गोपालपुरा	27	16	26.00	76	18	31.00
51.	मेवाळा बाँध	गोपालपुरा	27	16	14.00	76	18	36.00
52.	नवा बाँध (बीचवाळा बाँध)	गोपालपुरा	27	16	08.00	76	18	34.00
53.	चबूतरा वाली जोहड़ी (बड़ी जोहड़ी)	गोपालपुरा	27	16	07.00	76	18	28.00
54.	ऊलाळा बाँध	गोपालपुरा	27	16	01.00	76	18	32.00
55.	मोहर पाल का ऐनीकट	गोपालपुरा	27	15	43.00	76	18	36.00
56.	रेवड़ का ऐनीकट (स्याळी वाला)	गोपालपुरा	27	15	42.00	76	18	34.00
57.	गिरधारी का नाळा	गोपालपुरा	27	15	42.00	76	18	32.00
58.	गौर्याळा बाँध	गोपालपुरा	27	15	33.00	76	18	15.00
59.	नरूकाँ वाळी जोहड़ी	गोविन्दपुरा	27	15	10.80	76	19	21.72
60.	वीसा वाळा बाँध	गोविन्दपुरा	27	15	23.00	76	18	05.00
61.	पीळी जोहड़ी–पटवारियों की जोहड़ी	भीकमपुरा	27	15	49.00	76	17	50.00
62.	अखाड़ा वाली जोहड़ी	भीकमपुरा	27	16	05.00	76	17	35.00
63.	रेवड़ वाली जोहड़ी	भीकमपुरा	27	16	11.38	76	18	09.09
64.	ढाँकला वाळी जोहड़ी (जोगियों की नई ढाणी में)	किशोरी	27	16	28.00	76	18	05.00
65.	तरुणाश्रम की मेड़बन्दी–1	भीकमपुरा	27	16	19.00	76	17	36.00
66.	तरुणाश्रम की मेड़बन्दी–2	भीकमपुरा	27	16	16.00	76	17	36.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
67.	आश्रम वाळी जोहड़ी	भीकमपुरा	27	16	20.00	76	17	37.00
68.	झालरा (तरुण ताल)	भीकमपुरा	27	16	14.46	76	17	34.87
69.	नाई नळा का ऐनीकट (तरुणाश्रम में)	भीकमपुरा	27	16	20.38	76	17	31.78
70.	तेल्याळा बाँध	किशोरी	27	16	10.01	76	17	12.05
71.	वोहरा वाला वाँध	किशोरी	27	16	25.00	76	16	45.00
72.	नारायण गुर्जर का बाँध	दौलतपुरा	27	16	00.00	76	16	22.00
73.	लीलकी वाली जोहड़ी (सार्वजनिक)	दौलतपुरा	27	15	41.00	76	15	56.00
74.	भोमिया वाली जोहड़ी	नीमाळा	27	16	25.00	76	16	00.00
75.	गाँव ऊपर का जोहड़	क्यारा	27	16	11.00	76	15	32.00
76.	भरथरी वाला जोहड़	क्यारा	27	15	59.00	76	15	16.00
77.	टीकल्या रैगर की जोहड़ी–गूलर वाली (मीणों की राजधानी वाली जोहड़ी–मन्दिर के पास)	क्यारा	27	16	22.00	76	15	21.00
78.	वासुदेव जी भट्ट की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	45.00	76	15	19.00
79.	मूलचन्द पटेल का ऐनीकट	सूरतगढ़	27	16	49.00	76	15	20.00
80.	भौंरे लाल कोळी का बाँध	कावलीगढ़	27	18	05.00	76	14	26.00
81.	नावा बाँध (बाबूनाथ का)	कावलीगढ़	27	17	45.00	76	14	25.00
82.	नवा बाँध (कजोड़ मीणा का)	कावलीगढ़	27	17	44.00	76	14	22.00
83.	गंगा राम का जोहड़	कावलीगढ़	27	17	08.00	76	14	52.00
84.	महादेव गुर्जर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	17	04.00	76	14	57.00
85.	हरफूल गुर्जर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	56.00	76	14	54.00
86.	भगवाना गूजर का बाँध	सूरतगढ़	27	16	56.00	76	14	48.00
87.	लाल चन्द जी का बाँध	सूरतगढ़	27	16	53.00	76	14	47.00
88.	रामेश्वर जी की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	54.00	76	14	45.00
89.	श्री नारायण जी की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	55.00	76	14	45.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
90.	लाल चन्द जी की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	56.00	76	14	42.00
91.	लूल्याळा बाँध (बुआ जी का बाँध) –बाई जी का बाँध	सूरतगढ़	27	16	57.00	76	14	38.00
92.	रागोळाई की जोहड़ी	सूरतगढ़	27	17	09.00	76	14	00.00
93.	कबीरा वाली जोहड़ी	सूरतगढ़	27	16	42.00	76	14	02.00
94.	खारवाळ का बाँध (सुमेर सिंह जी का)	सूरतगढ़	27	16	30.00	76	14	12.00
95.	माद्याळा बाँध	सूरतगढ़	27	16	37.00	76	14	18.00
96.	मूरा बाँध (कीरों का बाँध)	सूरतगढ़	27	16	35.00	76	14	45.00
97.	रावण की नदी वाळा ऐनीकट	सूरतगढ़	27	16	33.00	76	14	47.00
98.	धाना का गुवाड़ा की जोहड़ी	सूरतगढ़	27	16	20.00	76	14	30.00
99.	मीणा वाला की मेड़बन्दी (भगवाना व हनुमान मीणा की)	सूरतगढ़	27	16	16.00	76	13	58.00
100.	मीणा वाला बाँध	सूरतगढ़	27	16	12.00	76	13	59.00
101.	रूड़ी धोबिन की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	16	00.00	76	14	12.00
102.	रूड़ी धोबिन की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	58.00	76	14	09.00
103.	रामपाल रैगर का बाँध	सूरतगढ़	27	16	01.00	76	14	06.00
104.	सोहन गूजर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	59.00	76	14	02.00
105.	नारायण रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	16	00.00	76	13	57.00
106.	गोगर्‌या रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	53.00	76	13	59.00
107.	भींवा रैगर की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	15	51.00	76	14	00.00
108.	भींवा रैगर की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	47.00	76	14	01.00
109.	डालचन्द रैगर की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	15	49.00	76	14	02.00
110.	डालचन्द रैगर की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	20.00	76	14	02.00
111.	गोपी नाई की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	51.00	76	14	07.00
112.	जगदीश कीर की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	15	49.00	76	14	13.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
113.	जगदीश कीर की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	48.00	76	14	10.00
114.	मूलचन्द रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	48.00	76	14	13.00
115.	चन्दा रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	50.00	76	14	11.00
116.	काळू रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	50.00	76	14	15.00
117.	हजारी वाला बाँध	सूरतगढ़	27	15	57.00	76	14	19.00
118.	कानूँ वाला बाँध	सूरतगढ़	27	15	51.00	76	14	22.00
119.	जीवण्या रैगर की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	15	46.00	76	14	19.00
120.	जीवण्या रैगर की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	49.00	76	14	22.00
121.	मामराज मीणा की मेड़बन्दी–1	सूरतगढ़	27	15	43.00	76	14	15.00
122.	मामराज मीणा की मेड़बन्दी–2	सूरतगढ़	27	15	42.00	76	14	12.00
123.	हनुमान मीणा की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	39.00	76	14	04.00
124.	भागीरथ कुम्हार की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	39.00	76	14	12.00
125.	नाथू कुम्हार की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	37.00	76	14	07.00
126.	कुशाल चन्द रैगर की मेड़बन्दी	सूरतगढ़	27	15	37.00	76	14	15.00
127.	कानूँ वाळी जोहड़ी	सूरतगढ़	27	15	33.00	76	14	14.00
128.	स्टोन बैरियर नं.–1	सूरतगढ़	27	15	46.00	76	14	21.00
129.	स्टोन बैरियर नं.–2	सूरतगढ़	27	15	43.00	76	14	18.00
130.	स्टोन बैरियर नं.–3	सूरतगढ़	27	15	42.00	76	14	17.00
131.	स्टोन बैरियर नं.–4	सूरतगढ़	27	15	41.00	76	14	15.00
132.	स्टोन बैरियर नं.–5	सूरतगढ़	27	15	37.00	76	14	14.00
133.	स्टोन बैरियर नं.–6	सूरतगढ़	27	15	35.00	76	14	14.00
134.	स्टोन बैरियर नं.–7	सूरतगढ़	27	15	32.00	76	14	14.00
135.	स्टोन बैरियर नं.–8	सूरतगढ़	27	15	24.00	76	14	15.00
136.	खात्याळी जोहड़ी	पिपळाई	27	13	50.00	76	14	50.00
137.	कन्हैया खाती का ऐनीकट	पिपळाई	27	13	41.00	76	14	29.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
138.	सुन्दर जोहड़	पिपळाई	27	13	45.00	76	14	14.00
139.	जोगी वाली जोहड़ी	पिपळाई	27	13	25.00	76	14	28.00
140.	गाँव की जोहड़ी (ठाकुर जी वाली जोहड़ी)	पिपळाई	27	13	09.00	76	14	49.00
141.	करमाळी जोहड़ी	पिपळाई	27	12	43.00	76	14	54.00
142.	गुलाबा रैबारी का बाँध	पिपळाई	27	12	26.00	76	15	11.00
143.	मूलचन्द मीणा का बाँध (चौड़ डेरा में)	काळापारा	27	11	31.00	76	16	09.00
144.	चौड़ डेरा का बाँध (बिशना का)	काळापारा	27	11	35.00	76	16	08.00
145.	ब्याडवाळ मीणाँ की जोहड़ी	मीणों की ढाणी	27	13	20.00	76	15	40.00
146.	चबोरियाँ की जोहड़ी	चबोरियाँ की ढाणी	27	13	26.00	76	15	19.00
147.	लाल पाटी का बाँध (बोदू मीणा का)	नई ढाणी मोरड़ी	27	13	38.00	76	15	10.00
148.	माळ्याँ की जोहड़ी	माळ्याँ की ढाणी	27	13	45.00	76	15	35.00
149.	रामानन्द का ऐनीकट	चबोरियाँ की ढाणी	27	14	09.00	76	15	16.00
150.	नाण्डा का जोहड़ (गुसाँई वाला)	बलुवास	27	14	19.00	76	16	13.00
151.	कुण्ड्याळा का जोहड़	बलुवास	27	14	40.00	76	16	05.00
152.	हीरामल की जोहड़ी (पहाड़ पर)	बलुवास	27	14	53.00	76	15	38.00
153.	ऊपरली जोहड़ी (बाँकाळा की)	बलुवास	27	14	57.00	76	16	02.00
154.	नीचली जोहड़ी (गाँव की) पीपल वाली	बलुवास	27	15	01.00	76	16	21.00
155.	वैद्य जी का बाँध	जैतपुर ब्राह्मणान	27	14	57.00	76	18	28.00
156.	पचवीर की तळाई (माळ्याँ वाळी जोहड़ी)	जैतपुर ब्राह्मणान	27	14	20.00	76	18	06.00
157.	बुद्धा, रेवड़ का ऐनीकट	सीळी बावड़ी	27	14	00.00	76	17	48.00
158.	भोमिया आगला बाँध	काँकड़क्याँ	27	13	51.00	76	18	07.00
159.	काँकड़क्याँ वाली जोहड़ी	काँकड़क्याँ	27	13	58.00	76	18	11.00
160.	भोमिया वाला बाँध	सीळी बावड़ी	27	13	58.00	76	18	34.00
161.	वाण्याळा बाँध (श्रीराम का)	सीळी बावड़ी	27	13	52.00	76	18	21.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
162.	मोडाळा बाँध (जगदीश, नानगराम का)	सीळी बावड़ी	27	13	47.00	76	18	19.00
163.	नवा कुआ का बेरा ऊपरला बाँध (गौर्‌या मीणा का)	सीळी बावड़ी	27	13	42.00	76	18	26.00
164.	बराळा बाँध (रघुनाथ, सुकल्या का)	सीळी बावड़ी	27	13	43.00	76	18	27.00
165.	बरूकाळा का जोहड़ (पहाड़ पर)	सीळी बावड़ी	27	13	23.00	76	19	44.00
166.	तेजा जी का जोहड़	सीळी बावड़ी	27	13	13.00	76	18	50.00
167.	काळा भाटा का जोहड़ (सरिया गुच्या का)	सीळी बावड़ी	27	13	12.00	76	18	44.00
168.	खात्याळा कुआ ऊपर का बाँध	सीळी बावड़ी	27	13	15.00	76	18	23.00
169.	ढहर के उतार का ऐनीकट	सीळी बावड़ी	27	13	14.00	76	17	58.00
170.	भैंरू जी वाली जोहड़ी	भोपाँ की ढाणी	27	12	40.00	76	17	02.00
171.	पचवीर की तळाई (गाँव की जोहड़ी)	कुण्ड्याळ	27	12	17.00	76	17	12.00
172.	नीचे वाली मेड़बन्दी (बनिया वाले खेत के ऊपर वाली मेड़बन्दी)	कुण्ड्याळ	27	12	17.39	76	17	16.15
173.	बीच वाळे खेत की मेड़बन्दी	कुण्ड्याळ	27	12	18.00	76	17	16.00
174.	कुआ नीचे की मेड़बन्दी (पश्चिमी कुआ)	कुण्ड्याळ	27	12	20.00	76	17	15.00
175.	कुआ ऊपर की मेड़बन्दी (पश्चिमी कुआ)	कुण्ड्याळ	27	12	21.35	76	17	15.29
176.	बावड़ी वाळा बाँध	कुण्ड्याळ	27	12	24.55	76	17	28.43
177.	नीचे वाळा बाँध	कुण्ड्याळ	27	12	22.14	76	17	27.96
178.	बीच वाळा बाँध	कुण्ड्याळ	27	12	21.31	76	17	29.33
179.	ऊपर वाळा बाँध	कुण्ड्याळ	27	12	21.71	76	17	31.49
180.	जोहड़ी वाला बाँध (त.भा.सं. के खेत के पूर्व में)	कुण्ड्याळ	27	12	20.81	76	17	33.83
181.	पाटोल वाळा बाँध	कुण्ड्याळ	27	12	19.33	76	17	23.64
182.	साधू वाळा जोहड़	भूर्‌याळी	27	12	04.00	76	17	38.00
183.	पखाळों का जोहड़	गुवाड़ा पखाळ	27	13	00.00	76	18	32.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
184.	सीराँ का गुवाड़ा वाळी जोहड़ी	गुवाड़ा सीरा	27	12	45.00	76	18	27.00
185.	टाँटल्या वाळी जोहड़ी	गुवाड़ा सीरा	27	12	44.00	76	19	04.00
186.	सालर वाळी जोहड़ी (पहाड़ पर)	गुवाड़ा घासी	27	12	26.00	76	19	37.00
187.	माळियों का बाँध	गुवाड़ा लाला भैया	27	12	31.00	76	18	42.00
188.	बुगली तळाई (भूलाँ की जोहड़ी)	गुवाड़ा भूलाँ	27	12	26.00	76	18	41.00
189.	रामतळाई (ढाँचोलियाँ का जोहड़)	गुवाड़ा ढाँचोलिया	27	12	06.00	76	18	37.00
190.	जागतिया वाळा जोहड़	गुवाड़ा हनुमान	27	12	00.00	76	18	48.00
191.	पचवीर वाळा जोहड़ (जम्बूरी वाळा जोहड़)	गुवाड़ा कालोत	27	11	52.00	76	18	46.00
192.	छतरी वाळी जोहड़ी	गुवाड़ा हार	27	11	42.00	76	19	05.00
193.	पचवीर वाळी तळाई	गुवाड़ा हार	27	11	23.00	76	19	01.00
194.	दादयाळी के ऊपर वाला जोहड़ (पहाड़ पर)	गुवाड़ा जानावत	27	11	40.00	76	19	58.00
195.	नवा बन वाळा जोहड़ (पहाड़ पर)	गुवाड़ा सोती	27	11	16.00	76	19	59.00
196.	मँगरा वाळा जोहड़ (पहाड़ पर)	गुवाड़ा सोती	27	11	10.00	76	20	02.00
197.	सोती वाळी तळाई	गुवाड़ा सोती	27	11	09.00	76	19	09.00
198.	सोती वाळा बाँध	गुवाड़ा सोती	27	11	12.00	76	19	08.00
199.	कुआ आगला ऐनीकट (व्यासों का)	गुवाड़ा व्यास	27	11	12.00	76	18	37.00
200.	राड़ा वाळा ऐनीकट (व्यासों का)	गुवाड़ा व्यास	27	11	11.00	76	18	32.00
201.	कजोड़ मीणा की मेड़बन्दी (ढाबाळा खेत में)	मंन्याळी	27	10	42.00	76	18	22.00
202.	बूज की तळाई	बूज	27	10	31.00	76	18	13.00
203.	हनुमान की मेड़बन्दी (तसीया वाळा खेत में)	मंन्याळी	27	10	38.00	76	18	26.00
204.	नाव वाली तळाई (गाँव की तळाई)	गुवाड़ा रामजी	27	10	45.00	76	19	21.00
205.	बद्री मीणा का बाँध–1	गुवाड़ा नरमा	27	10	34.00	76	19	23.00
206.	बद्री मीणा का बाँध–2	गुवाड़ा नरमा	27	10	32.00	76	19	23.00
207.	नरमाँ की जोहड़ी (राड़ा वाली जोहड़ी)	गुवाड़ा नरमा	27	10	35.00	76	19	13.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
208.	श्योबख्श का ऐनीकट	गुवाड़ा राड़ी	27	10	19.00	76	19	30.00
209.	नई तळाई	गुवाड़ा राड़ी	27	10	16.00	76	19	15.00
210.	पद्मा का जोहड़	गुवाड़ा राड़ी	27	10	07.00	76	19	30.00
211.	गजीकी का जोहड़ (राड़ी वाला जोहड़)	गुवाड़ा राड़ी	27	10	00.00	76	19	29.00
212.	श्रवण मीणा की मेड़बन्दी	गुवाड़ा गूगली	27	09	44.00	76	19	09.00
213.	उमराव मास्टर का बाँध	गुवाड़ा गूगली	27	09	41.00	76	19	10.00
214.	साँवळदास जी का जोहड़	गुवाड़ा गूगली	27	09	30.00	76	19	22.00
215.	काल्या वाळी जोहड़ी	गुवाड़ा गूगली	27	08	58.00	76	19	38.00
216.	लल्लू बघूड़ी का बाँध	बलदेवगढ़	27	09	20.00	76	22	48.00
217.	बलदेवगढ़ की जोहड़ी	बलदेवगढ़	27	09	02.95	76	22	24.85
218.	धाकरेट की तळाई	बलदेवगढ़	27	07	13.00	76	22	26.00
219.	बरवा की तळाई (घाटी वाळी जोहड़ी)	बरवा डूँगरी	27	07	43.00	76	21	52.00
220.	परबताळा की तळाई	बरवा डूँगरी	27	08	00.00	76	21	28.00
221.	रैबारी वाळी तळाई	बरवा डूँगरी	27	08	24.00	76	21	43.00
222.	जाळखाँ की तळाई	बरवा डूँगरी	27	08	42.00	76	21	12.00
223.	पचपौदाँ की तळाई (भंगियों के पास)	पावटा	27	07	53.00	76	20	59.00
224.	रामेश्वर राणा की मेड़बन्दी	नाँगळ चन्देल	27	07	23.00	76	20	20.00
225.	जयराम राणा की मेड़बन्दी	नाँगळ चन्देल	27	07	23.00	76	20	18.00
226.	छुट्टन राणा की मेड़बन्दी	नाँगळ चन्दल	27	07	21.00	76	20	16.00
227.	नाँगळ चन्देल का बाँध	नाँगळ चन्देल	27	07	06.00	76	20	22.00
228.	नाँगळ चन्देल की तळाई	नाँगळ चन्देल	27	07	02.00	76	20	17.00
229.	रामजी लाल मास्टर की मेड़बन्दी	नाँगळ चन्देल	27	07	09.00	76	20	09.00
230.	रामजीलाल, बाबूलाल की मेड़बन्दी	नाँगळ चन्देल	27	07	09.00	76	20	04.00
231.	नाण्डा का जोहड़	नाँगळ चन्देल	27	07	03.00	76	19	59.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
232.	जगदीश का ऐनीकट	नाँगळ चन्देल	27	06	58.00	76	20	03.00
233.	स्कूल पीछे वाली जोहड़ी	नामदारपुरा	27	06	28.00	76	19	50.00
234.	बळी वाले नळे की तळाई (नई तळाई) नायाळी में	नामदारपुरा	27	07	04.00	76	19	41.00
235.	बींछ्याळी का जोहड़	नामदारपुरा	27	07	09.00	76	19	48.00
236.	बुर्जा तिराहे की जोहड़ी	टोडी का बास	27	07	11.00	76	18	28.00
237.	हीरामल जी का बाँध	लील्याँ	27	06	55.00	76	19	14.00
238.	नाण्डा वाळा ऐनीकट	लील्याँ	27	06	47.90	76	19	16.20
239.	नाण्डा वाळा जोहड़	लील्याँ	27	06	45.00	76	19	16.00
240.	गूजरों का ढाबरा	लील्याँ	27	06	08.00	76	20	04.00
241.	गौर वाळी जोहड़ी	लील्याँ	27	06	07.00	76	20	08.00
242.	खातळी नळा का जोहड़ (राम तळाई)	लील्याँ	27	06	02.00	76	20	07.00
243.	जय सागर ऐनीकट (धीरोड़ा वाला ऐनीकट)	धीरोड़ा	27	06	04.85	76	19	18.50
244.	वन्दी दह का ऐनीकट	लील्याँ	27	05	41.00	76	20	05.00
245.	कीटला का ऐनीकट	कीटला	27	05	13.00	76	20	35.00
246.	घोड़ाघाट का ऐनीकट	स्याळूता	27	05	09.00	76	20	56.00
247.	सत्यनारायण की तळाई (निजी खेत में)	कीटला	27	05	29.00	76	20	40.00
248.	रामजी लाल की मेड़बन्दी	कीटला	27	05	31.00	76	20	44.00
249.	कीटला की तळाई	कीटला	27	05	35.00	76	20	47.00
250.	दह धावन का ऐनीकट	जोग्याळा	27	06	15.25	76	20	49.10
251.	दरोगाळा का ऐनीकट	दरोगाळा	27	06	27.00	76	20	21.00
252.	खात्याळा की तळाई	खात्याळा	27	06	28.00	76	20	24.00
253.	खातियों वाळा ऐनीकट	खात्याळा	27	06	28.00	76	20	27.00
254.	रामतळाई	लाँकाश	27	06	56.00	76	20	41.00

क्र.सं.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
255.	झरना वाला बाँध (खान वाला बाँध)	लाँकाश	27	07	25.00	76	20	40.00
256.	फूटाळा बाँध का ऐनीकट (ढेयड़ी कुआ के नीचे)	लाँकाश	27	06	47.00	76	21	05.00
257.	पचवीर वाळा जोहड़	नाँगल करना	27	07	03.00	76	22	24.00
258.	नाथों वाळी तळाई	नाँगल करना	27	06	49.00	76	22	17.00
259.	पीळी ढाह का जोहड़	श्योनगरी	27	06	42.00	76	22	25.00
260.	जमादार की तळाई (मुरली की)	स्याळूता	27	06	38.00	76	22	22.00
261.	मासूणी नदी का ऐनीकट	स्याळूता	27	06	23.00	76	22	09.00
262.	पचवीर वाळी तळाई	स्याळूता	27	06	12.00	76	22	46.00
263.	डूँडी पाळ का बाँध	स्याळूता	27	05	46.07	76	22	35.04
264.	रामधन गूजर की मेड़बन्दी	स्याळूता	27	05	17.00	76	22	18.00
265.	बदली गूजर की मेड़बन्दी–1	स्याळूता	27	05	12.00	76	22	15.00
266.	बदली गूजर की मेड़बन्दी–2	स्याळूता	27	05	12.00	76	22	16.00
267.	मुखीराम की मेड़बन्दी	स्याळूता	27	05	08.00	76	22	14.00
268.	नाभाळा का ऐनीकट (सेया दपजास का ऐनीकट)	नाँगल दासा	27	05	42.00	76	22	50.88
269.	चौखण्डी वाला ऐनीकट	नाँगल दासा	27	05	12.00	76	23	15.00

आरती सरसा माता की

ओम् जय सरसा माता, मैया जय जल की दाता।
जो नर तुमको ध्याता, वांछित जल पाता।।
ओम् जय सरसा माता .....

तेरे जल-आगम में, वर्षा जल रोका।
जोहड़-बाँध बना के, उसे बहने से रोका।।
ओम् जय सरसा माता .....

भू-जल पुनर्भरण से, तू अविरल बहती।
सुमधुर कल-कल करती, सबका मन मोहती।।
ओम् जय सरसा माता .....

अंगारी, मैजोड़, गुढ़ा, रिज से नीचे आती।
प्राणी जगत पोषित कर, तुम सबको भाती।।
ओम् जय सरसा माता .....

ऊपर नाम अनेकों, सरसा में तू सरस गई।
अरवरी, जहाज, भागाणी-तिलदह में समा गई।।
ओम् जय सरसा माता .....

तुम माता कल्याणी, सब दुःख दूर करे।
सरसा रूप शारदे, अन्न-जल भण्डार भरे।।
ओम् जय सरसा माता .....

सबको सम्बल देती, सर सर बहा करे।
दुःख-हारक फल-दायक, चरणन भक्त परे।।
ओम् जय सरसा माता .....

तन मन धन सब अर्पण, चरणन में तेरे।
'छोटेलाल' तेरी शरण में, सब जय जयकार करे।।

ओम् जय सरसा माता, मैया जय जल की दाता।
जो नर तुमको ध्याता, वांछित जल पाता।।

प्रस्तुति : 'छोटेलाल मीणा'

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, किशोरी, वाया थानागाजी
जिला : अलवर-301022, राजस्थान
दूरभाष : 01465-225043